

॥ श्रीः ॥

लग्नचन्द्रिका ।

पं० बस्तीराम विरचित-

भाषाटीकासमेता ।

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

बम्बई.

संवत् १९९१, शक १८५६.

मुद्रक और प्रकाशक-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
मालिक-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई.

॥ श्रीः ॥

अथ लग्नचन्द्रिका ।

भाषाटीकासमेता ।

श्रीगणेशाय नमः ॥

तमिस्रया जगद्ग्रस्तं यो जीवयति भूतले ।
तं वन्दे परमानंदं सर्वसाक्षिणमीश्वरम् ॥ १ ॥

अथ विशेषसंज्ञाः ।

तनुर्धनं च भ्राता च सुहृत्पुत्रो रिपुर्वधूः॥मृत्युश्च धर्मः कर्मायो व्ययो भावाः प्रकीर्तिताः॥२॥विषमोऽथ समः पुंस्त्री क्रूरः सौम्यश्च नामतः॥चरः स्थिरो द्विस्वभावो मेषाद्या राशयः क्रमात् ॥३॥दुश्चिक्यं स्यात्तृतीयं च सुखं सद्म चतुर्थकम्॥बंधुसंज्ञं च पातालं हिबुकं पंचमं च धीः ॥ ४ ॥ द्यूनं द्युनमथास्तं च यामित्रं सप्तमं

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ मंगलाचरणश्लोकः । शिवसूनुपदद्वंद्वं शरणं शरणार्तिहम् ॥ नत्वा विरच्यते ह्येषा भाषा स्वल्पधियां मुदे ॥१॥ जो परमात्मा अन्धकारसे ग्रसित हुए जगत्को पृथ्वीतलमें (सूर्यरूप करके) जीवन कराते हैं तिस सर्वसाक्षी ईश्वरको प्रणाम करताहूं ॥ १ ॥ तनु १ धन २ भ्राता ३ सुहृत् ४ पुत्र ५ रिपु ६ स्त्री ७ मृत्यु ८ धर्म ९ कर्म १० आय ११ व्यय १२ ऐसे क्रमसे ये बारह भाव कहे हैं ॥ २ ॥ और विषम, सम, पुरुष, स्त्री, क्रूर, सौम्य इन नामों करके तथा चर, स्थिर, द्विस्वभाव इन भेदों करके मेष, वृष, मिथुन, ऐसे क्रमसे सब राशियोंकी संज्ञा जाननी ॥ ३ ॥ तीसरे घरको दुश्चिक्य कहते हैं, चौथेको सुख, सद्म, बंधु, पाताल, हिबुक इन नामोंसे बोलते हैं पचम घरको धी (बुद्धि) कहते हैं ॥ ४ ॥ और द्यून, द्युन, अस्त, यामित्र ये सातवेंकी संज्ञा है, अब

स्मृतम्॥दशमं त्वंबरं मध्यं छिद्रं स्यादष्टमं गृहम्॥५॥ एकादशं भवेल्लाभः सर्वतोभद्रमेव च ॥ व्ययो रिष्फं द्वादशं च त्रिकोणं नवपंचमे ॥ ६ ॥ त्रिषष्ठदशलाभानां भवेदुपचयाख्यकम् ॥ चतुर्थाष्टमयोः संज्ञा चतुरस्रं स्मृता बुधैः ॥७॥ केन्द्रचतुष्टयकंटकसंज्ञाऽऽद्यचतुर्थसप्तमदशमानाम् ॥ परतः पणफरमापोक्लिमं च वेद्यं यथाक्रमतः ॥ ८ ॥ वर्गोत्तमनवमांशाश्चरराशिषु प्रथममध्यांत्याः ॥ होरा विषमेऽर्केंद्वोः समराशौ चन्द्रसूर्ययोः क्रमतः ॥ ९ ॥ स्वगृहाद्द्वादशभागा द्रेष्काणाः प्रथमपंचनवमानाम् ॥ मेषाद्याश्चत्वारः सधन्विमकराः क्षपाबला ज्ञेयाः॥१०॥ते विना

मध्य ये दशवें घरकी संज्ञा है। आठवें घरको छिद्र कहते हैं ॥ ५ ॥ ग्यारहवेंको लाभ, सर्वतोभद्र कहते हैं. बारहवें घरको व्यय और रिष्फ कहते हैं। ९-५ वें घरको त्रिकोण कहते हैं ॥ ६ ॥ तीन, छः दश, ग्यारह इन घरोंको पंडितजन उपचय कहते हैं और चतुर्थ अष्टम घरोंको चतुरस्र कहते हैं ॥ ७ ॥ १-४-७-१० इन घरोंको केंद्र, चतुष्टय, कंटक बोलते हैं फिर २-५-८-११ इन घरोंको पणफर कहते हैं ३-६-९-१२ इनको आपोक्लिम कहते हैं ॥ ८ ॥ चर आदि राशियोंमें क्रमसे प्रथम, मध्य, अन्त्य (होनेवाले) वर्गोत्तम नवांशक कहलाते हैं. (मेष मिथुन आदि) विषम राशिमें सूर्य, चन्द्रमा इस क्रमसे और समराशिमें चन्द्रमा सूर्य इस क्रमसे होरा होती है ॥ ९ ॥ अपने घरसे द्वादशांश होते हैं। द्रेष्काण-प्रथम, पंचम, नवम इन राशियोंके होते हैं अर्थात् लग्नके तृतीयांशको द्रेष्काण जानो (तहां १० अंशतक प्रथम राशिका, २० तक पांचवींका, ३० तक नवमी राशिका है) और मेष आदि चार, धन, मकर ये राशी रात्रिमें बली हैं ॥ १० ॥ और यही मिथुन विना

मिथुनं पञ्च ज्ञेयाः पृष्ठोदया बुधैः ॥ मेषो वृषस्तथा
कर्को मकरश्च धनुर्धरः॥११॥पृष्ठोदयाः स्मृताः पञ्च
यात्रायां नैव शोभनाः॥सिंहाद्या ये च चत्वारः कुंभो
युग्मं दिवाबलाः ॥१२॥ शीर्षोदयाश्च मीनस्तु बली
रात्रौ तथा दिने ॥ क्षीणचन्द्रो रविर्भौमः पापो राहुः
शनिः शिखी ॥१३॥ बुधोऽपि तैर्युतः पापो होरा
राश्यर्द्धमुच्यते ॥ रवींदुभौमगुरवो ज्ञशुक्रशनिराहवः
॥ १४ ॥ स्वस्मिन्मित्राणि चत्वारि परस्मिञ्छत्रवः
स्मृताः ॥ मेषे रविर्वृषे चन्द्रो मकरे च महीसुतः॥१५॥
कन्यायां रोहिणीपुत्रो,गुरुः कर्के झषे भृगुः॥ शनिस्तु-

पांच लग्न पृष्ठोदय संज्ञक हैं जैसे मेष, वृष, कर्क, मकर, धन ॥ ११ ॥ ये पांच पृष्ठोदय संज्ञक कहे हैं सो यात्राविषे शुभ नहीं हैं। सिंह आदि चार (५-६-७-८) कुंभ, मिथुन ये दिनमें बली हैं ॥ १२ ॥ और शीर्षोदय संज्ञक हैं, यह मीन लग्न रात्रिमें बली और दिनमेंभी बली हैं और शीर्षोदय संज्ञक तथा पृष्ठोदय संज्ञकभी है, क्षीण चन्द्रमा, सूर्य, मंगल, राहु, शनि, केतु ये पापग्रह हैं ॥ १३ ॥ इन (पापग्रहों)के साथ होनेसे बुध भी पाप है और आधी राशिको होरा कहते हैं, सूर्य, चन्द्र, भौम, बृहस्पति ये और बुध, शुक्र, शनि, राहु ॥ १४ ॥ ये चार आपसमें मित्र हैं अन्यथा परविषे शत्रु जैसे सूर्य, चन्द्र, भौम, गुरु आपसमें मित्र और बुध, शुक्र, शनि, राहु, उनके संग शत्रु हैं और मेषका सूर्य, वृषका चन्द्रमा, मकरका मंगल ॥ १५ ॥ कन्याका बुध, कर्कका गुरु, मीनका शुक्र तुलापर

लायामुच्चश्च मिथुने सिंहिकासुतः ॥ १६ ॥ उच्चात्सप्तमगा नीचा राशौ वापि नवांशके ॥ १७ ॥

अथ शुभाशुभयोगाः ।

अर्थी भोगी धनी नेता जायते मण्डलाधिपः ॥ नृपतिश्चक्रवर्ती च रव्याद्यैरुच्चगैर्ग्रहैः ॥ त्रिभिःस्वस्थैर्भवन्मन्त्री त्रिभिरुच्चैर्नराधिपः ॥ १८ ॥ त्रिभिर्नीचैर्भवेद्दासस्त्रिभिरस्तंगतैर्जडः । उदितः स्वग्रहस्थश्च मित्रगेह स्थितोऽपि वा ॥ १९ ॥ मित्रवर्गे मित्रदृष्टः स ग्रहःसबलःस्मृतः ॥ स्वामिना बलिना दृष्टः सबलैश्च शुभग्रहैः ॥ २० ॥ न दृष्टो न युतः पापैः स भावः सबलः स्मृतः ॥ दशमे बुधसूर्यौ च भौमराहू च षष्ठगौ ॥ २१ ॥ राजयोगेऽत्र यो जातः स पुमान्नायको भवेत् ॥ आदौ जीवःशनिश्चांते

शनि, मिथुनविषे राहु उच्चका है ॥ १६ ॥ उच्चराशिसे सातवीं राशिपर हो तो नीचका जानो राशिमें वा नवांशकमें यही क्रम है ॥ १७ ॥ यदि सूर्यादि ग्रह उच्चके होवें तो जन्मनेवाला जन क्रमसे अर्थी, भोगी, धनी, नायक, मांडलिक राजा तथा चक्रवर्ती राजा होता है । तीन स्वस्थ (पूर्ण बलवाले) ग्रहोंसे मन्त्री हो, तीन उच्च ग्रहोंसे राजा हो ॥ १८ ॥ तीन नीच ग्रहोंसे दास हो तीन ग्रह अस्त होवें तो मूर्ख होता है, उदय हुआ अपने घरमें स्थित वा मित्र घरमें स्थित ॥ १९ ॥ वा मित्र वर्गमें स्थित मित्रसे दृष्ट ऐसा ग्रह सबल कहा है और बली स्वामीसे दृष्ट अथवा सबल ग्रहों करके दृष्ट ॥ २० ॥ और पापों करके नहीं दृष्ट, नहीं युक्त भाव (घर) सबल है, दशवें बुध सूर्य हों, छठे घरमें मंगल राहु होवे ॥ २१ ॥ ऐसे राजयोगमें जन्मनेवाला जन नायक (राजा या मन्त्री) होता है

ग्रहा मध्ये निरंतरम्॥२२॥ राजयोगं विजानीयात्कुटुम्बबलसंयुतः ॥ सहजस्थो यदा जीवो मृत्युस्थाने स्थितः सितः ॥ २३ ॥ निरन्तरं ग्रहा मध्ये राजा भवति निश्चितम्॥जीवो वृषे सुधारश्मिर्मिथुने मकरे कुजः ॥ २४ ॥ सिंहे भवति सौरिश्च कन्यायां बुधभास्करौ ॥ तुलायामसुराचार्यो राजयोगो भवेदयम् ॥२५॥ अस्मिन्योगे समुत्पन्नो महाराजो भवेन्नरः ॥ अष्टमे द्वादशे वर्षे यदि जीवति मानवः॥२६॥ सार्वभौमस्तदा राजा जायते विश्वपालकः ॥ एको जीवो यदा लग्ने सर्वे योगास्तदा शुभाः॥२७॥ दीर्घजीवी महामान्यो जायते नायको भटे॥धनुष्यारश्च शुक्रश्च मीने जीवस्तुले बुधः॥२८॥नीचस्थौ शनिचन्द्रौ च

पहिले आदिमें बृहस्पति, अन्तमें शनि हो, और अन्य ग्रह मध्यमें होवें (इस प्रकार जन्मकुण्डलीमें ग्रह हो तो)॥ २२ ॥ राजयोग जानना वह नर कुटुंब और बलसे युक्त रहता है । तीसरे घर गुरु हो आठवें शुक्र हो ॥ २३ ॥ अन्य ग्रह निरंतर मध्यमें हों तो वह निश्चय राजा होता है, गुरु वृषका हो, चन्द्रमा मिथुनका हो, मंगल मकरका हो ॥ २४॥ सिंहपर शनि हो. कन्यापर बुध, सूर्य हों, तुला पर शुक्र हो यह राजयोग होता है ॥ २५ ॥ इस योगमें उत्पन्न होनेवाला नर महान् राजा होता है, जो वह नर आठवें वा बारहवें वर्षतक जीता रहे तो ॥ २६ ॥ संपूर्ण पृथ्वभिरका (विश्वपालक) राजा हो, जो एक बृहस्पति लग्नमें हो तो सबही योग शुभदायक हैं ॥ २७ ॥ दीर्घआयुवाला, महामान्य, योद्धाओंका नायक होता है धनुराशिपर मंगल और शुक्र हो, मीनपर बृहस्पति, तुलापर बुध होवे॥२८॥शनि और चन्द्रमा नीच राशीके हों तो धनहीन राजा हो।

राजा स्याद्धनवर्जितः ॥ दाता भोक्ता च विख्यातो मान्यो मंडलनायकः॥२९॥मीने शुक्रो बुधश्चांते१२ धने २ राहुस्तनौ १ रविः ॥ सहजे ३ च भवेद्भौमो योगे राजाऽत्र जायते ॥ ३० ॥ सहजे च यदा जीवो लाभस्थाने च चन्द्रमाः ॥ स राजा राज्यमध्यस्थो विख्यातः कुलदीपकः॥३१॥शुभग्रहाःशुभक्षेत्रे भवंति यदि केन्द्रगाः ॥ तदा शुभानि कर्माणि करोत्येव हि बालकः॥३२॥उच्चस्थानगताःसौम्याःकेन्द्रेषु च भवंति चेत्॥ध्रुवं राज्यं भवेत्तस्य स्ववश्यानां च पोषकः ॥३३॥ धने व्यये तथा लग्ने सप्तमे च यदा ग्रहाः॥ छत्रयोगस्तदा ज्ञेयो वंश्यानां नायको भवेत् ॥३४॥ ससूरा वा सचन्द्रा वा यत्र कुत्र चतुर्ग्रहाः॥मालानाम-

दाता, भोक्ता, विख्यात, मान्य, मंडलनायक (पति) होता है ॥२९॥ मीनपर शुक्र हो, बुध भी १२ में हो, राहु दूसरे घर हो, सूर्य लग्नमें हो, मंगल ३ घरमें हो इस योगमें जन्मनेवाला राजा होता है ॥ ॥ ३० ॥ तीसरे घर बृहस्पति हो, ग्यारहवें चन्द्रमा हो वह राजमध्यमें विख्यात कुलका दीपक (प्रकाशक) राजा हो ॥ ३१ ॥ शुभ ग्रह शुभग्रहोंके क्षेत्रमें हों अथवा केंद्रमें होवें तो वह बालक शुभ उत्तम कर्म करता है ॥ ३२ ॥ शुभग्रह उच्च राशिके हों अथवा केंद्रघरमें हों उस मनुष्यको निश्चय राज्य होगा और अपने कुलके जनोंको पालनेवाला होगा ॥ ३३ ॥ दूसरे बारहवें और लग्नमें, सातवेंमें ग्रह हों (कोईघर खाली न हो) तो छत्रयोग जानना इसमें जन्मनेवाला वंशका नायक (राजासदृश) होता है ॥ ३४ ॥ सूर्यसहित अथवा

कयोगोऽयं राज्यदो धनदो भवेत् ॥ ३५ ॥ स्वक्षेत्रस्थो यदा जीवो बुधः सौरिःस्वराशिगः॥अत्र जातस्य दीर्घायुः संपदश्च भवंति हि ॥३६॥ मीने बृहस्पतिःशुक्रश्चंद्रमाश्च यदा भवेत् ॥ तत्र जातस्य राज्यं स्यात्पत्नी च बहुपुत्रिणी ॥ ३७ ॥ पञ्चमस्थो यदा जीवो दशमस्थश्च चन्द्रमाः ॥ राज्यवान्स महाबुद्धिस्तपस्वी च जितेन्द्रियः ॥३८॥ सिंहे जीवस्तुलाकीटकोदंडमकरेषु च ॥ ग्रहा यदा तदा जातो देशभोगी भवेन्नरः ॥३९॥ तुलाकोदंडमीनस्थो लग्नगःस्याच्छनैश्चरः ॥ करोति नृपतेर्जन्म त्वन्यराशौ गतायुषम्॥ ॥ ४० ॥ विद्यास्थाने यदा सौम्यः कर्मस्थाने च चन्द्रमाः ॥ धर्मस्थाने यदा सौम्या योगे राजात्र

चन्द्रमासहित हुए चार ग्रह जिस किसी घरमें पडे हों तो यह माला नामक योग कहलाता है,राज्यको देनेवाला और धनको देनेवाला कहा है ॥३५॥ बृहस्पति अपने क्षेत्रमें हों बुध और शनि अपनी २ राशि पर हों इस योगमें जन्मनेवाला जन दीर्घ आयुवाला और लक्ष्मीवान् होता है॥३६॥ मीनराशिपर बृहस्पति, शुक्र, चंद्रमा हों तब जन्मनेवालेको राज्य हो, बहुत पुत्रोंवाली स्त्री हो ॥३७॥ पांचवें बृहस्पति हो दशवे चन्द्रमा हो तो वह महाबुद्धिमान तपस्वी जितेंद्रिय हो ॥ ३८ ॥ सिंहपर बृहस्पति हो, तुला, कर्क, धन, मकर इनपर अन्य ग्रह हों तब जन्मनेवाला नर देशभोगी (राजा) होता है ॥ ३९ ॥ तुला, धन, मीन इनपर स्थित हुआ शनि लग्नमें बैठा हो तो राजा होता है, जो अन्य राशिका शनि लग्नमें हो तो आयुहीन हो ॥ ४०॥ पांचवें घरमें बुध हो, दशवें घरमें चन्द्रमा हो, नवमें घर अन्य सौम्य

जायते ॥ ४१ ॥ मकरे कार्मुके मीने वृषे च मिथुने क्रिये ॥ ग्रहास्तदात्र विख्यातो राजा भवति मानवः ॥४२॥ बुधभार्गवजीवार्कियुक्तो राहुश्चतुष्टये॥करोति धनमारोग्यं पुत्रं मानादिकं गृहम् ॥४३॥ चतुर्थभवने शुक्रो गुरुश्चन्द्रो धरासुतः॥रविसौरियुताः संति राजा जातो भवेद्ध्रुवम्॥४४॥अष्टमे च व्यये क्रूरो मध्यगो क्रूरसौम्यकौ ॥ राजयोगेऽत्र यो जातश्चत्वारिंशत्स जीवति॥४५॥लग्ने सौरिस्तथा चन्द्रस्त्रिकोणे जीवभास्करौ॥कर्मस्थाने भवेद्भौमो योगे राजाऽत्र जायते ॥४६॥ नवमे च यदा सूर्यः स्वग्रहस्थो भवेद्यदा ॥ तस्य जीवति न भ्राता स्यादेकोऽपि नृपैः समः॥४७॥

ग्रह हों तो इस योगमें जन्मनेवाला राजा होता है ॥ ४१ ॥ मकर, धन, मीन, वृष, मिथुन, मेष इन राशियोंपर सब ग्रह होवें तो जन्मनेवाला नर विख्यात राजा होता है ॥ ४२ ॥ बुध, शुक्र, बृहस्पति और शनि इन ग्रहों करके युक्त हुआ राहु केंद्रस्थानमें बैठा हो तो धन, आरोग्य, पुत्रप्राप्ति, मानकी प्राप्ति और घरकी प्राप्ति होती है ॥४३॥ चौथे घरमें शुक्र हो और बृहस्पति चन्द्रमा मंगल ये ग्रह सूर्य वा शनि करके युक्त होवें तो जन्मनेवाला जन निश्चय राजा हो ॥ ४४ ॥ आठवें बारहवें घर क्रूर ग्रह हो और दशवें घरमें क्रूर सौम्य दोनों प्रकारके ग्रह हों तो इस योगमें जन्मनेवाला नर राजा हो और वह चालीस वर्षतक जीवे ॥ ४५ ॥ लग्नमें शनि और चन्द्रमा हो त्रिकोण (५-९) में बृहस्पति और शुक्र होवें दशवें घरमें मंगल हो तो जन्मनेवाला नर राजा होता है ॥ ४६ ॥ अपने घरका होके जो सूर्य नवमें घरमें हो तो उसके भाई नहीं जीवें, जो एक भी कोई

द्वित्रितुर्यसुते षष्ठे कर्मण्यपि यदा ग्रहाः ॥ राजयोगं विजानीयाज्जातस्तत्र नृपो भवेत् ॥ ४८ ॥ लग्ने क्रूरो व्यये क्रूरो धने सौम्यो यदा भवेत् ॥ सप्तमे भवने क्रूरः परिवारक्षयंकरः ॥ ४९ ॥ लग्ने क्रूरो व्यये सौम्यो धने क्रूरश्च जायते ॥ राजयोगेऽत्र यो जातो दरिद्रो धनवर्जितः ॥ ५० ॥ चापे सौरिश्च चन्द्रश्च मेषे जीवो यदा भवेत् ॥ दशमे राहुशुक्रौ च राजयोगे नृपो भवेत् ॥ ५१ ॥ सिंहे जीवोऽथ कन्यायां भार्गवो मिथुने शनिः ॥ स्वक्षेत्रे हिबुके भौमः स पुमान्नायको भवेत् ॥ ५२ ॥ शनिचन्द्रौ च कन्यायां सिंहे जीवो घटे तमः ॥ मकरे च कुजस्तत्र जातो विश्वस्य पालकः ॥ ५३ ॥ शुक्रो जीवो रविर्भौम-

भाइ रहे तो वह राजाके समान होवे ॥ ४७ ॥ दूजे, तीसरे, चौथे, पांचवें, छठे, दशवें घरोंमें जो ग्रह होवें तो राजयोग होता है, जन्मनेवाला जन राजा होवे ॥ ४८ ॥ लग्नमें पापग्रह हों, बारहवें पाप ग्रह हों, दूसरे शुभग्रह हों, सातवें घर क्रूर ग्रह हो तो कुलको नष्ट करनेवाला होता है ॥ ४९ ॥ लग्नमें क्रूरग्रह हो, बारहवें शुभग्रह हो, और दूसरे घर क्रूरग्रह हो यह राजयोग है परन्तु इसमें जन्मनेवाला धनहीन दारिद्री होता है ॥ ५० ॥ धनका शनि और चन्द्रमा हो, मेषका बृहस्पति हो, दशवें राहु, शुक्र हों, इस राजयोगमें जन्मनेवाला राजा होता है ॥ ५१ ॥ सिंहका बृहस्पति हो, कन्याका शुक्र हो, मिथुनका शनि हो, अपने क्षेत्रका होके चौथे घरमें मंगल हो तो वह नर (नायक) राजा होता है ॥ ५२ ॥ शनि, चन्द्रमा कन्याके हों सिंहपर बृहस्पति, कुंभपर राहु हो, मकरका मंगल हो तो जन्मनेवाला नर संसारका पालक (राजा) होता है ॥ ५३ ॥ शुक्र, बृहस्पति,

श्चापे मकरकुंभयोः । मीने च वत्सरे विंशे जातः स्यात् सर्वकर्मकृत् ॥ ५४ ॥ चतुर्षु केन्द्रस्थानेषु सौम्यपापग्रहस्थितिः ॥ चतुःसागरयोगोऽयं राज्यदो धनदो भवेत् ॥ ५५ ॥ कर्कलग्ने जीवयुक्ते लाभे चन्द्रज्ञभार्गवाः । मेषे भानौ च यो जातः स राजा विश्वपालकः ॥ ५६ ॥ कर्मस्थाने यदा जीवो बुधः शुक्रस्तथा शशी ॥ सर्वकर्माणि सिद्धयंति राजमान्यो भवेन्नरः ॥ ५७ ॥ षष्ठेऽष्टमे पञ्चमे च नवमे द्वादशे तथा ॥ सौम्यक्रूरग्रहैर्योगे राजमान्यः सकष्टकः ॥ ५८ ॥ पञ्चमे च यदा षष्ठे चाष्टमे नवमे क्रमात् ॥ भौमराहुसितार्काः स्युर्जातोऽत्र कुलदीपकः ॥ ५९ ॥ लग्ने सौरिस्तथा चन्द्रश्चाष्टमे भार्गवो

सूर्य, मंगल ये ग्रह धन, मकर, कुंभ, मीन इन राशियोंपर यथाक्रमसे होवें तो जन्मनेवाला नर बीस वर्षका होके सब काम करने लायक होता है ॥ ५४ ॥ चार केंद्र १-४-७-१० स्थानोंमें शुभ और पापग्रह स्थित हों यह चतुस्सागर योग है राज्य और धनको देनेवाला है ॥ ५५ ॥ बृहस्पतिसे युक्त कर्क लग्न हो, ग्यारहवें घर चन्द्रमा, बुध, शुक्र हों, मेषका सूर्य हो तो जन्मनेवाला नर विश्वपालक राजा होता है ॥ ५६ ॥ दशवें घरमें बृहस्पति, बुध, शुक्र, चन्द्रमा बैठे हों तो जन्मनेवाला नर सब कार्योंको सिद्ध करनेवाला और राजाओंमें मान्य होता है ॥ ५७ ॥ छठे, आठवें, पांचवें, नववें, बारहवें घर शुभ ग्रह और क्रूर ग्रह होवें तो वह राजाओंमें मान्य (पूजित) हो तथा कष्टयुक्त रहे ॥ ५८ ॥ और पांचवें, छठे, आठवें, नववें घर क्रमसे मंगल, राहु, शुक्र, सूर्य होवें तो जन्मनेवाला नर कुलका दीपक (प्रकाशक) होता है ॥ ५९ ॥ लग्नमें शनि हो

यदा ॥ जायते च तदा राजा मानी पत्नीरतः सदा ॥६०॥ मिथुनस्थो यदा राहुः सिंहस्थो भूमिनंदनः ॥ अत्र जातः पितुर्द्रव्यं प्राप्नोति सकलं नृपः ॥ ६१ ॥ चापार्द्धे शशिना युक्तो यदि सूर्यः प्रजायते॥ लग्ने च सबलो मंदो मकरे च कुजो भवेत् ॥६२॥ अत्र योगे समुत्पन्नो महाराजो भवेन्नरः॥ दूरादेव नमंत्यस्य प्रतापैश्चरणं नृपाः॥६३॥ उच्चाभिलाषी सविता त्रिकोणस्थो यदा भवेत्॥ अपि नीचकुले जातो राजास्याद्धनपूरितः ॥६४॥ एकादशे यदा सर्वे ग्रहाः स्युर्दशमेऽपि वा॥ विलग्ने सम्मुखे वापि कारकाः परिकीर्तिताः॥६५॥ उत्पन्नः कारके योगे नीचोऽपि नृपतां व्रजेत्॥ राजवंश-

अथवा चन्द्रमा हो, आठवें शुक्र हो तो जन्मनेवाला नर राजा हो मानी और सदा अपनी स्त्रीसे रमण करनेवाला हो ॥ ६० ॥ मिथुनका राहु हो, सिंहका मंगल हो, इस योगमें जन्मनेवाला राजा पिताके संपूर्ण द्रव्योंको प्राप्त होवे ॥ ६१ ॥ जिसके धन राशिके अर्ध भागमें चन्द्रमा करके युक्त हुआ सूर्य बैठा हो, लग्नमें सबल (बलिष्ठ) शनि हो, मकरका मंगल हो ॥ ६२ ॥ इस योगमें जन्मनेवाला नर महान् राजा होता है, इसके प्रतापसे अन्य राजालोग दूरसेही इसके चरणोंमें प्रणाम करें ॥ ६३ ॥ उच्चका अभिलाषी (होनेवाला) सूर्य त्रिकोण (५-९) में स्थित हो तो नीच कुलमें जन्मनेवाला नरभी धनवान् राजा हो ॥ ६४ ॥ ग्यारहवें अथवा दशवें घर अथवा लग्नमेंही वा लग्नके सम्मुख ७ सातवें घरमें सब ग्रह कारक कहलाते हैं ॥ ६५ ॥ इस कारकयोगमें उत्पन्न हुआ नीच (कंगाल) भी राज्यपदवी पावे, राजकुलका बालक तो अवश्य राजा

समुत्पन्नो राजा तत्र न संशयः॥६६॥लग्नतश्चान्यतो
वापि क्रमेण पतिता ग्रहाः ॥ एकावली समाख्याता
महाराजो भवेन्नरः॥६७॥धनस्थाने यदा शुक्रो दशमे
च बृहस्पतिः॥षष्ठेऽष्टमे सिंहिकाजो राजा भवति विक्र
मात्॥६८॥चतुर्ग्रहा एकगताः पापाः सौम्या भवंति
चेत् ॥ भ्रातृधीधर्मलग्नार्थे ३।५।९।१ । २ राजयो-
गो भवेदयम्॥६९॥त्रिकोणे सप्तमे लग्ने भवति च
यदा ग्रहाः॥हंसयोगं विजानीयात्स्ववंशस्यात्र पालकः
॥७०॥सर्वग्रहैर्यदा चन्द्रो विनाऽलिं च निरीक्षितः॥
षष्ठेऽष्टमे च यामित्रे स दीर्घायुर्धराधिपः ॥७१॥षष्ठे-
ष्टमे द्वादशे च द्वितीयेच यदा ग्रहाः॥सिंहासनाख्ययोगे

हो इसमें संदेह नहीं है ॥ ६६ ॥ लग्नसे अथवा अन्य घरसे क्रम करके सब ग्रह निरन्तर पडते गये हों अर्थात् बीचमें कोई घर खाली नहीं रहा हो तो एकावली नामका योग होता है इस एकावली योगमें जन्मनेवाला नर राजा होता है ॥ ६७ ॥ द्वितीय भवनमें शुक्र हो, दशवें घर बृहस्पति हो, छठे आठवें घरमें राहु होवे तो जन्मनेवाला नर पराक्रमी राजा होता है ॥ ६८ ॥ पाप अथवा शुभ चार ग्रह (३-५-९-१-२) इन घरोंमेंसे किसी एक घरमें इकट्ठे होके बैठे होवें तो यह राजयोग होता है ॥ ६९ ॥ त्रिकोण (५-९) में सातवें लग्नमें सब ग्रह होवें तो यह हंसयोग होता है इसमें जन्मनेवाला अपने वंशके जनोंका पालक होता है ॥ ७० ॥ वृश्चिक राशि विना अन्य किसी राशिका चन्द्रमा सब ग्रहों करके देखा जाता हो, छठे आठवें या सातवें घरमें स्थित हो तो जन्म- नेवाला नर दीर्घ आयुवाला राजा होता है ॥ ७१ ॥ छठे, आठवें,

ऽस्मिन् राजसिंहासने वसेत्॥७२॥लग्ने शुक्रबुधौ न स्तो न केन्द्रे च बृहस्पतिः॥दशमेङ्गारको नास्ति स जातः किं करिष्यति ॥७३॥ अष्टमस्था यदा क्रूराः सौम्या लग्ने स्थिता ग्रहाः॥ध्वजयोगेऽत्र यो जातः स पुमान्नायको भवेत्॥७४॥षष्ठस्थाने यदा पापाःकेन्द्र-स्थाने शुभग्रहाः॥सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्य राजमान्यो भवे-न्नरः॥७५॥ मेषलग्ने यदा भानुश्चतुर्थे च बृहस्पतिः॥ दशमे च कुजो जातो विश्वस्याधिपतिर्भवेत् ॥ ७६ ॥ लग्ने सौरिस्तथा चन्द्रस्त्रिकोणे जीवभास्करौ॥कर्मस्था-ने भवद्भौमो राजयोगोऽभिधीयते॥७७॥केन्द्रे स्वोच्च-स्थिते सौम्ये राजलक्ष्मीपतिर्भवेत्॥केन्द्रे पापे स्वोच्च-

बारहवें दूसरे घरमें ग्रह होवें तो यह सिंहासन योग होता है इसमें जन्मनेवाला नर राजगद्दीपर बैठता है ॥ ७२ ॥ लग्नमें शुक्र बुध नहीं हों, केंद्रमें बृहस्पति नहीं हो, दशवें घर मंगल नहीं हो वह नर जन्म लेकर क्या करेगा ॥ ७३ ॥ आठवें घर क्रूर ग्रह हों और सौम्य ग्रह लग्नमें स्थित हों ऐसे इस ध्वजयोगमें जन्मनेवाला नर नायक (प्रभु) होता है ॥ ७४ ॥ छठे घरमें पापग्रह हों, केंद्रमें शुभग्रह हों उसकी सब सिद्धि होवे राजासे मान्य हो ॥ ७५ ॥ मेष लग्नमें सूर्य हो, चौथे बृहस्पति हो, दशवें मंगल हो तो विश्वका पति राजा हो ॥ ७६ ॥ लग्नमें शनि वा चन्द्रमा हो, त्रिकोण (५-९) में बृहस्पति, सूर्य हों, दशवें घर मंगल हो यह राजयोग कहलाता है ॥ ७७ ॥ उच्च राशिके शुभग्रह केंद्रमें होवें तो राज्य वा लक्ष्मीका पति होता है,उच्च राशिके पापग्रह केंद्रमें बैठे हों तो राजा (धनहीन) होवे विशेष खजाना

संस्थे राजा स्याद्धनवर्जितः ॥७८॥ बली सौम्यग्रहो लग्ने केन्द्रस्थो यदि वीक्षते॥तदा निहंत्यनिष्टानि तमः सूर्योदयो यथा॥७९॥वंध्या नारी पुमान्वंध्यो मृत्यौ स्वर्भानुभानुजौ॥मृत्युस्थाः स्युर्यदा पापा मृत्यु दातु गतास्तदा॥८०॥अग्रजातं रविर्हन्यात्पृष्ठ जातं शनैश्चरः॥जातं जातं कुजो हन्यात्सहजस्थानसंस्थितः॥ ॥८१॥चतुः केन्द्रगता सौम्याः पापा द्वादशषष्ठगाः॥ भवेत्स राजविख्यातो लब्धच्छत्रो विभूषितः ॥८२॥ लग्नात्तु पंचमस्थाने यदा सूर्यबृहस्पती ॥ तदा विद्याधनैः पूर्णो जायते जातकोत्तमः ॥८३॥ एकोपि यदि केन्द्रस्थो बुधो जीवो बली भृगुः॥जायतेऽत्र तदा बालोधनाढ्यो वेदपारगः॥८४॥द्वित्रसौम्याः खगा नीचा

न हो ॥ ७८ ॥ बली शुभग्रह केंद्रमें बैठा हो और लग्नको देखता हो तो संपूर्ण अरिष्ट (रोग) ऐसे दूर हों जैसे सूर्योदयसे अंधेरा दूर होता है ॥ ७९ ॥ आठवें घरमें राहु और शनि होवे तो स्त्री वंध्या हो और पुरुष वंध्य हो, जो आठवें घरमें अन्य ग्रह हो तो मृत्यु हो॥८०तीसरे घरमें सूर्य हो तो बडे भाईको मारै । शनि हो तो छोटा भाईको मारै, मंगल हो तो जन्मे २ हुए सब भाइयोंको मारै ॥ ८१ ॥ चारों केंद्र स्थानोंमें शुभग्रह हो, पापग्रह बारहवें और छठे घरमें हो तो विख्यात छत्रपति राजा हो ॥ ८२ ॥ लग्नसे पांचवें घरमें सूर्य और बृहस्पति हों तो विद्या और धनों करके परिपूर्ण उत्तम नर हो ॥८३॥ बुध, बृहस्पति और बली शुक्र इनमेंसे जो एकभी केंद्रमें हो तो जन्मनेवाला धनाढ्य वेदपाठी होता है ॥ ८४ ॥ दो या तीन शुभग्रह

व्ययभावेऽथवा पुनः॥भवंति धनिनः षष्ठे निधने चैव भिक्षुकाः ॥८५॥ नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रहः स्यात्तद्राशिनाथोऽथ तदुच्चनाथः॥भवेत्त्रिकोणे यदि केंद्रवर्त्ती राजा भवेद्धार्मिकचक्रवर्त्ती ॥ ८६ ॥ षष्ठे क्रूरे नरो जातः शत्रुपक्षविमर्दकः॥ षष्ठे सौम्ये सदा रोगी षष्ठे चन्द्रस्तु मृत्युदः ॥ ८७ ॥ लग्नात्तृतीयभवने यदि चन्द्रसुतो भवेत् ॥ द्वौ पुत्रौ कन्यकास्तिस्रो जायंते नात्र संशयः ॥ ८८ ॥ लग्नात्तृतीयभवने बली वाचस्पतिर्यदा । पञ्च पुत्रास्तदा तस्य जायन्ते मानवस्य वै॥८९॥लग्नात्तृतीयभवने शनिचन्द्रौ यदा स्थितौ ॥ श्यामवर्णस्तदा बालो भ्रातृहीनश्च जायते ॥९०॥ लग्नात्तृतीयभवने बली शुक्रो यदा भवेत् ॥

नीच राशिके हों, अथवा बारहवें घरमें स्थित होवें, अथवा छठे आठवें घरमें स्थित होवें तो धनी लोग भी भिक्षुक (भिखारी) होजावें ॥ ८५ ॥ जन्मसमयमें जो ग्रह नीच राशिका हो उस ग्रहके राशिका स्वामी या उच्च राशिका स्वामी यदि त्रिकोण (५-९) में अथवा केंद्रमें बैठा हो तो वह नर धार्मिक चक्रवर्ती राजा हो ॥ ८६ ॥ जिसके छठे घरमें क्रूर ग्रह हों वह नर शत्रुको नष्ट करनेवाला हो, छठे घरमें शुभग्रह हों तो सदा रोगी रहे, ६ में चन्द्रमा हो तो मृत्यु होवे ॥ ८७ ॥ लग्नसे तीसरे वा बली बुध बैठा हो तो उस मनुष्यके दो पुत्र होवें और तीन कन्या हों इसमें सन्देह नहीं ॥ ८८ ॥ लग्नसे तीसरे घरमें बली बृहस्पति हो तो उस मनुष्यके पांच पुत्र होवेंगे ॥ ८९ ॥ लग्नसे तीसरे घर शनि और चन्द्रमा हो तो वह बालक श्यामवर्ण और भाईसे रहित होवे ॥ ९० ॥ लग्नसे तीसरे घरमें बली शुक्र हो तो दो कन्या हों और तीन पुत्र

कन्याद्वयं त्रयः पुत्रा जायंते तस्य निश्चितम् ॥९१॥ लग्नात्तृतीयभवने राहुयुक्तो यदा शशी ॥ भ्रातृहीनो भवेद्बालो लक्ष्मीवानपि जायते ॥ ९२ ॥ लग्नात्तृतीयभवने पञ्चमे वा धरासुतः ॥ म्रियते पुत्रदुःखेन नारी वा पुरुषोऽपि वा ॥ ९३ ॥ लग्नात्सप्तमगेहस्थो बली शुक्रो यदा भवेत् ॥ कन्याद्वयं त्रयः पुत्रा धनवन्तो भवंति हि ॥ ९४ ॥ सिंहलग्ने यदा शुक्रो शनिर्वापि व्यवस्थितः ॥ तत्र जातस्य बालस्य नेत्रनाशः प्रजायते ॥ ९५ ॥ सूर्योऽष्टमे रिपौ चन्द्रो धने भौमो व्यये शनिः ॥ ग्रहदोषेण नेत्राणामन्धता जनयंत्यमी ॥ ९६ ॥ शुभवर्गोत्तमे जन्म व्ययस्थाने च सद्ग्रहे ॥ अशून्येषु च केन्द्रेषु कारकाख्यग्रहेषु च ॥ ९७ ॥ सूर्ये केन्द्रे राजसेवी वैश्यवृत्तिर्निशा-

होंगे यह निश्चय जानो ॥ ९१ ॥ लग्नसे तीसरे घरमें राहुयुक्त चन्द्रमा होवे तो वह बालक भाईसे रहित और लक्ष्मीवान् होता है ॥ ९२ ॥ लग्नसे तीसरे या पांचवें मंगल होवे तो वह स्त्री या पुरुष पुत्रके दुःखसे मरता है ॥ ९३ ॥ लग्नसे सातवें घर बली शुक्र बैठा हो तो दो कन्या होंगी, तीन पुत्र होंगे और धन होगा ॥ ९४ ॥ सिंह लग्न हो तहां शुक्र बैठा हो, अथवा शनि बैठा हो तो जन्मनेवाले बालकके नेत्र नष्ट होते हैं ॥ ९५ ॥ सूर्य आठवें हो, छठे घर चन्द्रमा हो, दूसरे घरमें मंगल हो, बारहवें घरमें शनि हो तो ग्रहोंके दोषसे वह नर अन्धा होता है ॥ ९६ ॥ शुभ वर्गोत्तम लग्नमें जन्म हो, बारहवें घरमें शुभग्रह हों, अशून्य केंद्र अर्थात् केन्द्र स्थान ग्रहोंसे भरे हों कारक ग्रह हों यह राजयोग है ॥ ९७ ॥ केन्द्रमें सूर्य हो तो राजसेवी (मंत्री) हो, चन्द्र केंद्रमें हो तो

करे ॥ शस्त्रवृत्तिः कुजे शूरो बुधे चाध्यापको भवेत् ॥ ९८ ॥ स्वानुष्ठानरतो नित्यं दिव्यबुद्धिर्नरो गुरौ॥ शुक्रे विद्यार्थसम्पन्नो नीचसेवी शनैश्चरे ॥ ९९ ॥

अथ स्त्रीराजयोगः।

केन्द्रे च सौम्या यदि पृष्ठभाजः पापाः कलत्रे च मनुष्यराशौ ॥ राज्ञी भवेत्स्त्री बहुकोशयुक्ता नित्यं प्रशांता च सुपुत्रिणी च ॥ १०० ॥ बुधे विलग्ने यदि तुंगसंस्थे लाभस्थितो देवपुरोहितश्च ॥ नरेन्द्रपत्नी वनिताप्रसंगे तदा प्रसिद्धा भवतीह भूमौ॥१॥ एकोऽपि जीवो रसवर्ग ६ शुद्धः केन्द्रे यदा चन्द्रनिरीक्षितश्च॥राज्ञी भवेत् स्त्री सधना सपुत्रा रूपान्विता पीननितम्बबिंबा ॥ २ ॥ कर्कोदये सप्तमगे पतंगे जीवेन दृष्टे परिपूर्णदेहा ॥ विद्याधरी चात्र

वैश्यकी वृत्ति करे, मंगल हो तो शूर वीर शस्त्रवृत्ति करनेवाला हो, बुध हो तो पढ़ानेवाला होवे ॥ ९८ ॥ बृहस्पति हो तो धर्म यज्ञादि करनेवाला दिव्य बुद्धिवाला हो, शुक्र हो तो विद्या और लक्ष्मीवाला हो, शनि हो तो नीचकी सेवा करै ॥ ९९ ॥ इति राजयोगः ॥

जिस स्त्रीके केंद्रमें शुभग्रह पृष्ठोदय संज्ञक राशिके हों और पापग्रह मनुष्य राशिके होके सातवें हों तो वह बहुत खजानावाली रानी हो नित्य शांत स्वरूप पुत्रोंवाली हो ॥ १०० ॥ उच्चका बुध लग्नमें हो, बृहस्पति ग्यारहवें घरमें हो तो वह स्त्री राजाकी रानी हो पृथ्वीपर विख्यात होवे ॥ १ ॥ एकभी बृहस्पति षड्वर्ग शुद्ध (बल पाके) केंद्रमें हो, चन्द्रमा करके देखा जाता हो तो वह स्त्री धनाढ्य रानी होती है पुत्रवती रूपवती स्थूल नितंबोवाली हो ॥ २ ॥ कर्क लग्न हो, सातवें सूर्य हो बृहस्पतिसे देखा

भवेत् प्रधाना राज्ञी गतारिर्बहुपुत्रपौत्रा ॥ ३ ॥ षड्वर्गशुद्धैस्त्रिभिरेव राज्ञी चतुर्भिरंशैश्च तथैव पत्नी॥पंचादिभिर्दिव्यविमानभाजा त्रैलोक्यनाथप्रमदा तदा स्यात् ॥ ४ ॥ लाभस्थितः शीतकरो भृगुश्च कलत्रगः सोमसुतेन युक्तः ॥ जीवेन दृष्टो भवतीह राज्ञी ख्याता धरायां सकलैः स्तुता च ॥ ॥५॥ स्त्रीपुंसयोः फलं तुल्यं जातके किन्तु सप्तमे ॥ सौभाग्यं चन्द्रलग्नाभ्यां वपुराकृतिरुच्यते ॥ ६ ॥

अथ शुभाशुभयोगाः ।

कर्मस्थाने च लग्ने वा भौमशुक्रबुधैर्युतः॥यदि राहुर्भवेत्तस्य क्षणे वृद्धिः क्षणे क्षयः ॥७॥ होरायां द्वादशे राशौ स्थितो यदि दिवाकरः॥ करोति दक्षिणे काणं

जाता हो तो परिपूर्ण उत्तम शरीरवाली विद्याधरी बहुत पुत्रोंवाली, प्रधान रानी हो ॥ ३ ॥ षड्वर्गमें शुद्ध हुए तीन ग्रहों करके रानी हो चार अथवा पांच ग्रहोंकरके दिव्य (विमान) सवारीमें बैठनेवाली त्रैलोक्यपति राजाकी रानी हो ॥ ४ ॥ ग्यारहवें घर चन्द्रमा हो, बुधयुक्त शुक्र सातवें घर हो, बृहस्पतिसे देखा जाता हो तो पृथ्वीपर सबसे स्तुत रानी हो ॥ ५ ॥ सातवें घरके ग्रहसे स्त्री पुरुषोंका फल समान है, चन्द्रमा और लग्नसे सौभाग्य और शरीरकी आकृति कहना ॥ ६ ॥ दशवें घर वा लग्नमें मंगल, शुक्र, बुध इन करके युक्त हुआ राहु होवे तो वह नर क्षणमें बढ़ै क्षणमें घटै दुःखी सुखी है ॥ ७ ॥ जन्मकुंडलीमें बारहवीं राशि (लग्नसे बारहवें घर) सूर्य हो तो दहिनी आंखसे काणा हो, चन्द्रमा हो तो बाईं

वामनेत्रे च चन्द्रमाः॥८॥भौमक्षेत्रे यदा जीवो जीव क्षेत्रे भृगोः सुतः ॥ द्वादशे वत्सरे मृत्युर्बालकस्य न संशयः॥९॥धनस्थाने यदा भौमःशनैश्चरसमन्वितः। सहजे च भवेद्राहुर्भ्राता तस्य न जीवति ॥ ११० ॥ चतुर्थे च यदा राहुः षष्ठे चन्द्रोऽष्टमेऽपि वा॥सद्य एव भवेन्मृत्युः शंकरो यदि रक्षिता ॥ ११ ॥ अष्टमस्थो निशानाथःकेन्द्रे पापेन संयुतः ॥ चतुर्थे च यदा राहु-र्वर्षमेकं स जीवति ॥१२॥पाताले चांबरे पापो द्वादशे च यदा स्थितः॥पितरं मातरं हन्ति देशाद्देशांतरं व्रजे-त्॥१३॥ पंचमस्थो निशानाथस्त्रिकोणे च बृहस्पतिः॥ दशमे च महीसूनुः परमायुः स जीवति ॥ १४ ॥ धनस्थाने यदा शुक्रः क्रूरग्रहसमन्वितः॥ न पश्यति

आंखसे काणा हो ॥ ८ ॥ मंगलके क्षेत्रमें बृहस्पति हो, बृहस्पतिके क्षेत्रमें शुक्र हो तो उस बालककी मृत्यु निश्चय बारहवें वर्षमें हो ॥ ९ ॥ शनैश्चरसे युक्त मंगल दूसरे घरमें हो, तीसरे घरमें राहु हो तो उसके भाई नहीं जीते हैं ॥ ११० ॥ चौथे राहु हो छठे आठवें चन्द्रमा हो तो शीघ्रही मृत्यु हो जो शिवजी रक्षा करें तो भी न बचै ॥ ११ ॥ आठवें घरमें चन्द्रमा हो अथवा पापग्रहसे युक्त होके केंद्रमें हो, चौथे घर राहु हो तो एक वर्षभी नहीं जीवे ॥ १२ ॥ चौथे घर दशमें घर और बारहवें घरमें पापग्रह स्थित हो तो उसके माता पिता नष्ट होवें देशसे कहीं विदेशमें जावे ॥ १३ ॥ पांचवें घरमें चन्द्रमा हो, त्रिकोण (९-५) में बृहस्पति हो, दशवें घरमें मंगल हो तो वह दीर्घ आयुवाला हो ॥ १४ ॥ दूसरे घरमें पाप-ग्रहसे युक्त शुक्र हो और अपने घरको नहीं देखता हो तो अल्प

निजक्षेत्रमल्पपुत्रस्तदा भवेत् ॥ १५ ॥ धनस्थाने यदा क्रूरः सहजे सप्तमे तथा ॥ पंचमे भवने जीवो नीच-जातस्तदा भवेत् ॥ १६ ॥ नवमे पंचमस्थाने चतुर्थे च यदा ग्रहाः ॥ आदौजातश्च नष्टःस्यात्पश्चाज्जातः स जीवति ॥ १७ ॥ विवाहितायामन्यस्यामेकपुत्रो भवेत्तदा॥ विख्यातो भुवने त्यागी स दीर्घायुर्महामतिः ॥१८॥ लग्ने धने व्यये क्रूरो यदा मृत्यौ च जायते॥ विष्टाया मार्गबंधोऽस्य द्वादशाष्टमवासरे ॥१९॥ षष्ठे च भवने भौमःसप्तमे सिंहिकासुतः ॥ अष्टमे च यदा सौरिर्भार्या तस्य न जीवति॥१२०॥तिथिप्रान्तेदिनांते च लग्नस्यांते च भांतके॥ चरांशे च यदा जातःसोऽ-न्यजातः शिशुर्भवेत् ॥२१॥ स्वक्षेत्रस्थो यदा भौमः

पुत्र हो ॥ १५ ॥ दूसरे घर क्रूर ग्रह हो तीसरे सातवें भी क्रूर ग्रह हो, पांचवें बृहस्पति हो वह नीचके वीर्यसे उत्पन्न हुआ कहना ॥१६॥ नववें पांचवें चौथे क्रूर ग्रह होवें तब पहले जन्मनेवाला मरे और पीछे जन्मे वह जीवे ॥ १७ ॥ इस योगमें विवाहिता वा अन्य स्त्रीविषे जो एकही पुत्र जन्मा हो तो संसारमें विख्यात, दानी, दीर्घ आयु-वाला महामति होता है ॥ १८ ॥ लग्न, दूजे २ आठवें ८ बारहवें १२ पापग्रह हो तो विष्ठा बंद होके बारहवें वा आठवें दिन मृत्यु होजावे ॥ १९ ॥ छठे घरमें मंगल हो, सातवें राहु हो, आठवें शनि हो उसकी स्त्री नहीं जीवे॥१२०॥तिथिका अन्त, दिनका अन्त, लग्नका अन्त और नक्षत्रके अन्तमें तथा चर नवांशकमें जन्मनेवाला बालक (पिताके विना) अन्यसे उत्पन्न हुआ जानना ॥ २१ ॥ मंगल अपने

कर्मस्थानं निरीक्षते॥बुधभार्गवसंयुक्तः स्वल्पकर्मफल-
प्रदः ॥ २२ ॥ रिपुस्थाने यदा चंद्रो लग्नस्थाने शनै-
श्चरः ॥ कुजश्च सप्तमस्थाने पिता तस्य न जीवति
॥ २३ ॥ एकादशे यदा क्रूरः पंचमे चंद्रभार्गवौ ॥
प्रथमं कन्यका जन्म माता तस्य सकष्टका ॥२४॥
सहजस्थो यदा राहुर्धनस्थाने बृहस्पतिः ॥ बुधेन
च समायुक्तस्तस्य बंधुत्रयं भवेत् ॥२५॥ चापे सूर्यः
शनिः कुंभे मेषे भवति चन्द्रमाः ॥ मकरे च यदा
शुक्रो भुंक्ते नैव पितुर्धनम् ॥ २६ ॥ क्रूराश्चतुर्षु
केन्द्रेषु तथा क्रूरो धनेऽपि वा ॥ दारिद्र्ययोगं जानी-
यात्स्ववंशस्य क्षयंकरः ॥ २७ ॥ लग्नस्थाने यदा
जीवो धनस्थाने शनैश्चरः ॥ राहुश्च सहजस्थाने
माता तस्य न जीवति ॥ २८ ॥ सप्तमे भवने

घरमें बैठा हो, लग्नसे दशवें घरको देखता हो, तथा बुध शुक्रसे युक्त हो तो स्वल्प कर्मफल देनेवाला कहा है ॥ २२ ॥ छठे घरमें चन्द्रमा हो, लग्नमें शनि हो, मंगल सातवें घर हो तो उसका पिता नहीं जीवे ॥ २३ ॥ ग्यारहवें क्रूर ग्रह, पांचवें चन्द्र और शुक्र होवें तो उस नरके पहले कन्या जन्मै और उसकी माता कष्टयुक्त रहे ॥ २४ ॥ तीसरे घर राहु हो, दूसरे घरमें बृहस्पति बुधसे युक्त हो तो उसके तीन भाई होवें ॥ २५ ॥ धनका सूर्य हो,शनि कुंभका हो, मेषका चन्द्रमा, मकरका शुक्र हो तो पिताके धनको नहीं भोगे ॥२६॥ चारों केंद्रस्था-नोंमें तथा दूसरे घरमें क्रूर ग्रह हों यह दारिद्र्ययोग वंशको नष्ट करनेवाला है ॥ २७ ॥ लग्नमें बृहस्पति हो, दूसरे घरमें शनि हो,राहु तीसरे घरमें हो उसकी माता नहीं जीवे ॥२८॥ सातवें घरमें मंगल हो

भौमश्चाष्टमे भार्गवो यदा ॥ नवमे भवने सूर्यः स्वल्पायुस्तस्य जायते ॥ २९ ॥ राहुजीवौ रिपुक्षेत्रे लग्ने वाथ चतुर्थगौ ॥ त्रयोविंशे तदा वर्षे पुत्रस्तातं विनाशयेत् ॥ १३० ॥ बालस्य जन्मकाले चेदष्टमस्थः शनैश्चरः ॥ बालकश्च भवेत्कुष्ठी मासे मृत्युर्न संशयः ॥ ३१ ॥ क्रूरैर्दृष्टो जन्मलग्नात्षष्ठे वा चाष्टमे बुधः ॥ चतुर्थाब्दे भवेन्मृत्युः शंकरो यदि रक्षति॥३२॥ अष्टमस्थो यदा भौमस्त्रिकोणे नीचगो रविः ॥ स शीघ्रमेव जातः स्याद्भिक्षाजीवी च दुःखितः ॥३३॥ सिंहे भौमस्तुले सौरिः कन्यायां च यदा सितः ॥ मिथुने च यदा राहुर्जननी तस्य नश्यति ॥ ३४ ॥ लग्ने क्रूरः स्वभवने क्रूरः पातालगो यदा ॥ दशमे भवने क्रूरः कष्टं जीवति बालकः ॥ ३५ ॥

आठवें शुक्र हो, नववें घरमें सूर्य हो तो उस नरकी स्वल्प आयु होती है ॥ २९ ॥ राहु, बृहस्पति छठे घरमें लग्नमें वा चौथे घरमें हों तो तेईसवें वर्षमें वह पुत्र पिताको नष्ट करै ॥ ३० ॥ बालकके जन्मसमय आठवें घरमें शनि हो तो वह बालक कुष्ठी होकर एक ही महीनेमें मरे इसमें सन्देह नहीं ॥ ३१ ॥ जन्मलग्नसे छठे वा आठवें घरमें बुध हो, क्रूर ग्रहोंकरके देखा गया हो तो चाहे शिवजी रक्षा करें परन्तु चौथे वर्षमें मृत्यु हो ॥ ३२ ॥ आठवें घरमें मंगल हो, त्रिकोण (५-९) में नीचका सूर्य हो तो शीघ्र ही दुःखी हो और भिक्षाकी आजीविका करे ॥ ३३ ॥ सिंहका मंगल हो, तुलाका शनि हो, कन्याका शुक्र और मिथुनका राहु हो तो उसकी माता नहीं जीवै ॥ ३४ ॥ जिसके लग्नमें और दूसरे घरमें क्रूर ग्रह हों, चौथे और दशवें घरमें क्रूर ग्रह हों तो वह बालक कष्टसे जीवता है ॥ ३५ ॥

अष्टमे च निशानाथः केन्द्रे क्रूरो यदा भवेत्॥चतुर्थे च यदा राहुर्वर्षमेकं स जीवति ॥३६॥ शुभग्रहावलोकैश्च यदि जीवति जातकः॥ स च दुष्टस्वभावःस्यात् क्रूरकर्मकरोऽपि॥च॥३७॥लग्ने चन्द्रो धने शुक्रो व्यये च बुधभास्करौ ॥ राहुश्च पञ्चमे बालः स भवेद्वधबंधकृत्॥३८॥ सप्तमे भवने भानुर्मध्यस्थो भूमिनन्दनः॥ राहुश्चांत्ये च वै तस्य पिता कष्टेन जीवति॥३९॥स्मरे व्यये च सहजे मध्ये क्रूरा यदा ग्रहाः॥तदा जातस्य बालस्य शरीरे कष्टमादिशेत्॥१४०॥कन्यायां च यदा राहुः शुक्रो भौमः शनिस्तथा ॥ जायते तत्र जातस्य कुबेरादधिकं धनम्॥४१॥धने राहुर्बुधः शुक्रः सौरिः सूर्यो यदा स्थिताः ॥ तस्य मातुर्भवेन्मृत्युर्मृते पितरि

आठवें घरमें चन्द्रमा हो, केंद्रमें क्रूर ग्रह हो, चौथे राहु हो तो वह बालक एक वर्षतक जीवता है ॥ ३६ ॥ जो शुभ ग्रहोंकी दृष्टि हो तो वह बालक जीवता है परन्तु दुष्ट स्वभाववाला तथा क्रूरकर्म करनेवाला हो ॥ ३७ ॥ लग्नमें चन्द्रमा हो, दूसरे घरमें शुक्र हो, बारहवें घरमें बुध और शुक्र हों, राहु पांचवें घरमें हो तो वह बालक हिंसा और बन्धन कर्म करनेवाला हो ॥३८॥ सातवें घरमें सूर्य हो, मंगल दशवें घरमें हो, राहु बारहवें घरमें हो तो उसका पिता कष्टसे जीवे ॥ ३९ ॥ सातवां, बारहवां, तीसरा, दशवां इन घरोंमें क्रूर ग्रह होवें तो जन्मनेवाले बालकके शरीरमें कष्ट हो ॥ १४० ॥ कन्या राशि पर राहु, शुक्र, मंगल, शनि ये ग्रह हों तो जन्मनेवाले मनुष्यके कुबेरसेभी अधिक लक्ष्मी होवे ॥ ४१ ॥ दूसरे घरमें राहु, बुध, शुक्र, शनि, सूर्य ये ग्रह बैठे हों तो उस नरका जन्मसे पहले पिता मरे

जायते ॥ ४२ ॥ रविराहू सौरिसौम्यजीवा लग्नेऽथ पञ्चमे ॥ अत्र योगे च यो जातो जातमात्रं स नश्यति॥ ॥ ४३ ॥ जीवार्कराहुभौमाश्च चत्वारः क्रूरवर्गगाः ॥ सप्तमे च गृहे शुक्रो देहे कष्टं सदा भवेत् ॥ ४४ ॥ क्रूरलग्ने यदा जातस्तत्स्वामी क्रूरसंयुतः ॥ आमवातो भवेत्तस्य शरीरे कष्टमादिशेत् ॥ ४५ ॥ गुह्यस्थाने यदा भौमो राहुः सौरिसमन्वितः ॥ नृपपीडा भवेत्तस्य स्वासने नैव तिष्ठति ॥ ४६ ॥ सहजे सहजाधीशो लग्ने पुत्रे धनेऽपि वा ॥ जायते च यदा बालो यदि जातो न जीवति ॥ ४७ ॥ कन्यायां मिथुने राहुः केन्द्रे षष्ठे व्यये भवेत् ॥ त्रिकोणे वा यदा जातो दाता भोक्ता निरामयः ॥ ४८ ॥ चतुर्थ

पीछे माताभी मरजावे ॥ ४२ ॥ सूर्य, राहु, शनि, बुध, बृहस्पति ये लग्नमें हों अथवा पांचवें हों तो इस योगमें जन्मनेवाला उसी समय मरजावे ॥ ४३ ॥ बृहस्पति, सूर्य, राहु, मंगल ये चार ग्रह क्रूर ग्रहके षड्वर्गमें प्राप्त हों, सातवें घरमें शुक्र हो तो उसके शरीरमें सदा कष्ट रहै ॥ ४४ ॥ क्रूर लग्नमें जन्म हो और उस लग्नका स्वामी क्रूर ग्रहोंके साथ बैठा हो तो उसके शरीरमें आमवात रोगका कष्ट रहै ॥ ४५ ॥ सप्तम घरमें मंगल, राहु और शनि, ये सब बैठे हों तो उस बालकको राजाकी ओरसे दुःख रहै, अपने आसनपर नहीं बैठे॥४६ ॥ तीसरे घरका स्वामी तीसरे वा लग्नमें वा दूसरे घरमें होवे तो उस समय जन्मनेवाला बालक नहीं जीवै ॥ ४७ ॥ कन्या अथवा मिथुन राशिका राहु केंद्रमें वा छठे ६ बारहवें १२ घरमें हो अथवा त्रिकोणमें हो तब जन्मनेवाला नर दाता भोगी और निरोगी (खुशी) रहे॥ ४८ ॥ चौथे

राहुसौरार्काः षष्ठे चन्द्रो बुधः कुजः ॥ भार्गवश्चात्र यो जातः स गृहस्य क्षयंकरः ॥ ४९ ॥ एकः पापोऽष्टमस्थाने शत्रुक्षेत्रे यदा भवेत् ॥ पापेन वीक्षितो वर्षान्मारयत्येव बालकम् ॥ १५० ॥ भौमभास्करमंदाश्च शत्रुक्षेत्रेऽष्टमे यदा ॥ शिवेन रक्षितोप्येवं वर्षमात्रं न जीवति ॥ ५१ ॥ वक्री शनिर्भौमगेहे केन्द्रे षष्ठेऽष्टमेऽपि वा ॥ कुजेन बलिना दृष्टो हन्ति वर्षद्वये शिशुम् ॥५२॥ राहौ वृषे त्रिभिर्दृष्टे केतुदृष्टे चतुष्टये ॥ दृष्टे च गुरुशुक्राभ्यां दीर्घकालं स जीवति ॥ ५३ ॥ चन्द्रमंगलसंयोगो जन्मकाले यदा भवेत् ॥ तस्य जातस्य गेहं तु लक्ष्मीर्नैव विमुञ्चति ॥५४॥ मारयति षोडशाहाच्छनैश्चरः पापवीक्षितः केन्द्रे ॥

घरमें राहु, शनि और सूर्य हो, छठे घरमें चन्द्रमा, मङ्गल, बुध, शुक्र ये होवें तो इस योगमें जन्मनेवाला नर अपने घरका नाश करे ॥४९॥ एकही पापग्रह आठवें घरमें वा छठे घरमें हो, पापग्रहसे देखा जाता हो तो जन्मनेवाले बालकको एक वर्षमें मारे ॥ ५० ॥ मंगल, सूर्य, शनि ये छठे आठवें घरमें हों तो शिवजीसे रक्षित किया भी वह नर एक वर्षतक नहीं जीवै ॥ ५१ ॥ वक्री शनि मंगलके घरमें हो और केंद्र, छठे अथवा आठवें घरमें हो, बलिष्ठ मंगल करके देखा जाता हो तो जन्मनेवाले बालकको दो वर्षमें मार देवे ॥ ५२ ॥ वृष राशिका राहु तीन ग्रहों करके दृष्ट हो, चौथे केतु करके दृष्ट हो अथवा बृहस्पति वा शुक्र करके देखा गया हो तो वह नर दीर्घकालतक जीवै ॥ ५३ ॥ जिसके जन्मकालमें चन्द्रमा और मंगलका संयोग हो उस बालकके घरसे लक्ष्मी कभी नहीं हटै ॥ ५४ ॥ पापग्रहसे देखा हुआ शनि केंद्रस्थानमें बैठा हो तो सोलह दिनमें मार देवे,

षड्भिर्मासैर्भौमो वर्षाद्वा रविस्तु मारयति ॥ ९५ ॥ षष्ठाष्टमगश्चन्द्रः सद्यो मरणाय पापसंदृष्टः ॥ अष्टाभिः शुभदृष्टो वर्षैर्मिश्रैस्तदर्द्धेन ॥ ९६ ॥ शुक्लपक्षे निशायां च कृष्णे जातो दिवा यदा ॥ षष्ठाष्टमगतश्चंद्रो न शिशुं हंति मातृवत् ॥९७॥ शनिराहुकुजैर्युक्तः सप्तमे नवमे शशी ॥ सप्तमे दिवसे हंति मासे वा सप्तमे शिशुम् ॥९८॥ पुत्रे कलत्रे लग्ने च व्यये पापयुतः शशी॥शिशुं हन्ति न दृष्टश्चेद्बलवद्भिः शुभग्रहैः॥९९॥चन्द्रः पापसमायुक्तश्चंद्रो वा पापमध्यगः॥ चन्द्रात्सप्तमगः पापस्तदा मातृवधो भवेत् ॥ १६० ॥ लग्नस्थश्च यदा भानुःपंचमस्थो निशाकरः॥अष्टमस्था

इसी प्रकार मंगल हो तो छः महीनोंमें मारै, इसी प्रकार सूर्य हो तो एक वर्षमें मार दे ॥ ९५ ॥ छठे आठवें घरमें चन्द्रमा होकर पापग्रहसे देखा जाता हो तो शीघ्र ही मार देवै, शुभ ग्रहोंसे देखा गया हो तो आठवें वर्षमें, शुभाऽशुभग्रहोंसे देखा गया हो तो चौथे वर्षमें मृत्यु करै ॥ ९६ ॥ शुक्ल पक्षमें रात्रिमें और कृष्ण पक्षमें दिनमें जन्म हो तो छठे आठवें घरमें बैठा हुआ चन्द्रमा माताकी तरह बालकको नहीं मारे ॥ ९७ ॥ सप्तम स्थान या नवम स्थानमें शनि, राहु, मंगलसे युक्त चन्द्रमा हो तो बालक सातवें दिवस अथवा सातवें महीनेमें मरेगा ॥ ९८ ॥ पांचवें वा सातवें तथा लग्नमें, बारहवेंमें पापग्रहसे युक्त हुआ चन्द्रमा हो और बलवंत शुभ ग्रहों करके नहीं देखा जाता हो तो बालकको मारता है ॥ ९९ ॥ चन्द्रमा पापग्रहोंके संगमें हो अथवा पापग्रहोंके मध्यमें हो अथवा चन्द्रमासे सातवें घर पापग्रह हो तो उसकी माता नष्ट हो ॥ १६० ॥ सूर्य लग्नमें बैठा हो, चन्द्रमा पांचवें घरमें, आठवें घरमें अन्य पापग्रह

यदा पापास्तदा जातो न जीवति ॥६१॥ लग्नं पापेन संयुक्तं लग्नं वा पापमध्यगम्। लग्नात्सप्तमगाः पापास्तदा मातृवधो भवेत् ॥ ६२ ॥ सूर्यः पापेन संयुक्तः सूया वा पापमध्यगः ॥ सूर्यात्सप्तमगः पापस्तदा पितृवधो भवेत् ॥ ६३ ॥ क्रूरक्षेत्रे यदा जातो लग्नेशोऽस्तं गतो भवेत् ॥ अपकर्मा तदा जातः सप्तवर्षाणि जीवति ॥ ६४ ॥ अष्टमे च यदा सौरिर्जन्मस्थाने च चन्द्रमाः ॥ मंदाग्न्युदररोगी च गात्रहीनश्च जायते ॥ ६५ ॥ शनिक्षेत्रे यदा भानुर्भानुक्षेत्रे यदा शनिः॥द्वादशे वत्सरे मृत्युस्तस्य जातस्य जायते६६॥ बुधभौमौ यदा लग्ने षष्ठस्थाने च तिष्ठतः ॥ तस्करो घोरकर्मा च हस्तपादौ विनश्यतः॥६७॥षष्ठेऽष्टमे च

हो तो जन्मा हुआ बालक नहीं जीवै ॥ ६१ ॥ पापग्रहसे युक्त लग्न हो अथवा पापग्रहोंके बीचमें लग्न आगया हो वा लग्नसे, सातवें घरमें पापग्रह हो तो माताकी मृत्यु हो ॥ ६२ ॥ सूर्य पापग्रहसे युक्त हो अथवा पापग्रहोंके मध्यमें हो, सूर्यसे सातवें घरमें पापग्रह हो तो पिताकी मृत्यु हो ॥ ६३ ॥ क्रूर ग्रहके क्षेत्र (लग्न) में जन्म भया हो लग्नेश अस्त होरहा हो तो वह नेष्ट कर्मोंवाला तथा सात वर्षकी आयुवाला हो ॥ ६४ ॥ आठवें घरमें शनि हो, जन्मलग्नमें चन्द्रमा हो तो वह नर मंदाग्नि उदररोगवाला और हीन शरीरवाला होता है ॥ ६५ ॥ शनिके क्षेत्रमें सूर्य और सूर्यके क्षेत्रमें शनि हो तो उस जन्मनेवालेकी मृत्यु बारहवें वर्षमें होती है ॥ ६६ ॥ बुध, मंगल लग्नमें हों अथवा छठे ६ हों तो चोर वा घोर कर्म करनेवाला हो, उसके हाथ पैर भी नष्ट होजावें ॥ ६७ ॥ छठे, आठवें घरमें

मूर्तौ च शत्रुक्षेत्रे यदा बुधः॥ चतुर्वर्षे भवेन्मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ ६८ ॥ अष्टमस्थो यदा राहुः केन्द्रस्थाने च चन्द्रमाः ॥ सद्य एव भवेन्मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ ६९ ॥ सप्तमे नवमे राहुः शत्रुक्षेत्रे यदा भवेत् ॥ प्राप्ते च षोडशे वर्षे तस्य मृत्युर्न संशयः ॥ १७० ॥ द्वादशस्थो यदा चंद्रः पापः स्यादष्टमे गृहे॥एकमासे भवेन्मृत्युर्बालकस्य च निश्चितम् ॥७१॥जन्मस्थाने यदा राहुः षष्ठस्थाने च चंद्रमाः॥ अपस्मारी तदा बालो जायते नात्र संशयः॥ ७२ ॥ भार्गवेण युतश्चंद्रः षष्ठाष्टमगतो यदा ॥ मंदाग्न्युदररोगी च हीनांगोऽपि प्रजायते ॥ ७३ ॥ लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ॥ स्त्रियं हरति भर्त्ता च पतिं भार्या विनाशयेत् ॥ ७४ ॥ षष्ठेऽष्टमे यदा

वा लग्नमें स्थित बुध शत्रुके घरमें होवे तो उस बालककी मृत्यु चौथे वर्षमें होती है इसमें संदेह नहीं ॥ ६८ ॥ आठवें घरमें राहु हो, केंद्रमें चंद्रमा हो तो उस बालककी मृत्यु शीघ्र ही होती है इसमें संदेह नहीं ॥ ६९ ॥ सातवें नवमें घरमें, शत्रुके क्षेत्रमें राहु होवे तो सोलहवें वर्षमें उसकी मृत्यु हो इसमें सन्देह नहीं ॥ ७० ॥ बारहवें घरमें चन्द्रमा हो, पापग्रह आठवें घरमें हों तो उस बालककी मृत्यु निश्चय एक ही महीनेमें होती है ॥ ७१ ॥ जन्मलग्नमें राहु हो, छठे घरमें चंद्रमा हो तो वह बालक निश्चय मृगीरोगवाला हो ॥७२॥ शुक्रसे युक्त हुआ चन्द्रमा छठे आठवें घरमें हो तो मंदाग्नि, उदररोगवाला तथा हीनअंगवाला भी होता है ॥ ७३ ॥ लग्नमें, बारहवें, चौथे, सातवें, आठवें घरमें मंगल हो तो वह पुरुष अपनी स्त्रीको नष्ट करे,यही योग स्त्रीके होवे तो वह अपने पतिको नष्ट करे ॥७४॥ बुधसे

चन्द्रो बुधयुक्तस्तु तिष्ठति ॥ विषदोषेण बालस्य तदा मृत्युश्च जायते॥७५॥भानुना संयुतश्चंद्रः षष्ठाष्टमगतो यदा॥राजदोषेण मृत्युर्वा सिंहदोषेण वा भवेत्॥७६॥ एकोऽपि यदि मूर्तौ स्याज्जन्मकाले दिवाकरः॥स्थानहीनो भवेद्बालः शोकसन्तापपीडितः ॥ ७७ ॥ दशमस्थो यदा भौमः शत्रुक्षेत्रस्थितो भवेत् ॥ म्रियते तस्य बालस्य पिता शीघ्रं न संशयः ॥७८॥ लग्नेऽष्टमे यदा राहुश्चंद्रयुक्तः स्थितो भवेत् ॥ दशाहे जायते तस्य बालस्य मरणं ध्रुवम् ॥७९॥ लग्ने जीवो धने मन्दो रविभौमबुधास्तथा॥विवाहसमये तस्य म्रियते निश्चितं पिता ॥ १८० ॥ शनैश्चरस्तुलाकुंभमकरे यदि जायते ॥ लग्ने षष्ठे तृतीये च तदारिष्टं न

युक्त चन्द्रमा छठे आठवें घरमें हो तो उस बालककी मृत्यु विषदोषसे हो ॥ ७५ ॥ सूर्यसे युक्त हुआ चन्द्रमा छठे आठवें घरमें हो तो राजदोषसे अथवा सिंहदोषसे (राजा या शेरके जरियेसे) मृत्यु हो ॥ ७६ ॥ अकेला सूर्य जन्मलग्नमें पड़ा हो तो वह बालक स्थानहीन हो, शोक संतापसे पीडित रहे ॥ ७७ ॥ दशवें घरमें मंगल हो शत्रुके क्षेत्रमें बैठा हो तो उस बालकका पिता शीघ्र ही मरे इसमें सन्देह नहीं ॥ ७८ ॥ लग्नमें, आठवें चन्द्रमा करके युक्त हुआ राहु होवे तो उस बालककी मृत्यु दशदिनके भीतर हो ॥७९ ॥ लग्नमें बृहस्पति हो, दूसरे घरमें शनि, सूर्य, मंगल, बुध हों तो उस बालकके विवाहसमयमें पिता मरेगा ॥ १८० ॥ तुला, कुंभ, मकर इन राशियोंपर शनि हो फिर लग्नमें वा छठे, तीसरे घरमें हो तो रोग

जायते ॥८१॥ मीनलग्ने जीवशुक्रौ मेषेऽर्कौ मकरे कुजः ॥ दासवंशेऽपि जातोऽसौ राजा छत्रधरो भवेत् ॥ ८२ ॥ लग्नाच्च नवमे सूर्यं सूर्यपुत्रे तथाऽष्टमे ॥ एकादशे भार्गवे च मासमेकं न जीवति ॥८३॥ धने गुरुः सैंहिकेयो भौमः शुक्रश्च सप्तमे ॥ अष्टमे रविचन्द्रौ च म्लेच्छः स्याद्यौवने हि सः ॥८४॥ नवमे दशमे चन्द्रः सप्तमे च यदा सितः ॥ पापे पातालसंस्थे च वंशच्छेदकरो नरः ॥८५॥ भ्रातृस्थाने यदा जीवो लाभस्थाने यदा शशी ॥ सलोके गृहमध्यस्थोजायते कुलदीपकः ॥८६॥ सिंहलग्ने यदा भौमःपञ्चमे च निशाकरः ॥ व्ययस्थाने यदा राहुः स जातो कुलदीपकः ॥८७॥

(अरिष्ट) नहीं हो ॥ ८१ ॥ मीन लग्नमें बृहस्पति, शुक्र हो, मेष राशिका सूर्य, मकरका मंगल हो तो दास वंशमें जन्मा हुआ नरभी छत्रधारी राजा हो ॥८२ ॥ लग्नसे नवम घरमें सूर्य हो, शनि आठवें हो, ग्यारहवें घरमें शुक्र हो तो वह बालक एक महीनेतक नहीं जीवै ८३ ॥ धन राशिपर बृहस्पति हो और राहु,मंगल,शुक्र ये सातवें घरमें हों आठवें घर सूर्य चन्द्रमा हों तो जन्मनेवाला नर जवान अवस्थामें म्लेच्छ (मुसलमान) होजावें ॥ ८४ ॥ नवमें दशवें घरमें चन्द्रमा हो, सातवें घरमें शुक्र हो, पापग्रह चौथे घर हो तो जन्मनेवाला नर वंशको नष्ट करनेवाला हो ॥ ८५ ॥ तीसरे घरमें बृहस्पति हो, ग्यारहवें घरमें चन्द्रमा हो तो वह नर घरमें स्थित हुआ कुलका दीपकरूप लोकमें प्रसिद्ध हो ॥ ८६ ॥ सिंह लग्नमें मंगल हो, पांचवें घरमें चंद्रमा, बारहवें घरमें राहु हो तो वह कुलमें दीपकरूप हो ॥ ८७ ॥

एकः पापो यदा लग्ने पापश्चैको रसातले ॥ जायते हि सुखी बालः स जातः कुलदीपकः ॥८८॥ लग्ने वा सप्तमे भौमः पंचमे च दिवाकरः॥ जीवेदरण्यमध्येऽपि विख्यातः स न संशयः ॥ ८९ ॥ भौमक्षेत्रे यदा जातो मूर्तौ क्रूरग्रहो भवेत॥वर्षमध्ये भवेन्मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ १९० ॥ क्षीणचन्द्रो द्वादशस्थो दुःखदःपापवीक्षितः ॥ करोति विपुलं क्लेशमष्टमस्थो यदा शनिः ॥ ९१ ॥ द्वादशे च यदा चन्द्रः षष्ठे पापग्रहो भवेत् ॥ अल्पायुश्च सदा रोगी जायते जातको ध्रुवम् ॥९२॥ दशमे भवने राहुःपितृमात्रोः प्रपीडकः॥द्वादशे वत्सरे तस्य बालस्यमरणं ध्रुवम् ॥ ॥ ९३ ॥ शनिक्षेत्रे यदा भानुर्भानुक्षेत्रे शनैश्चरः ॥

यदि एक पापग्रह लग्नमें बैठा हो और एक पापग्रह चतुर्थमें हो तो वह बालक अपने कुलमें दीपकरूप हो सुखी रहै ॥ ८८ ॥ लग्नमें वा सातवें घरमें मङ्गल हो और पांचवें घरमें सूर्य हो तो वह वनमें पड़ा रहै तो भी अच्छी तरह जीवे और भी विख्यात (प्रसिद्ध) हो इसमें सन्देह नहीं ॥ ८९ ॥ मङ्गलके क्षेत्रमें जन्म (लग्न हो), लग्नमें क्रूर ग्रह हो तो वह बालक एक वर्षके भीतर मरै इसमें सन्देह नहीं ॥ १९० ॥ क्षीण चन्द्रमा बारहवें घरमें हो, पापग्रहोंसे देखा गया हो तो दुःखदायी है, जो आठवें घरमें शनि बैठा हो तो बहुत क्लेश करै ॥ ९१ ॥ बारहवें घरमें चन्द्रमा हो, छठें घरमें पापग्रह हो तो वह बालक अल्प आयुवाला होय और सदा रोगी रहै ॥ ९२ ॥ दशवें घरमें राहु हो तो माता पिताको पीडा करै और बारहवें वर्षमें निश्चय करके उस बालककी मृत्यु होजावे ॥ ९३ ॥ शनिके क्षेत्रमें सूर्य हो और सूर्यके क्षेत्रमें शनि हो तो उस बालककी मृत्यु

विंशतौ वत्सरे मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ ९४ ॥ रिपुस्थाने यदा पापो व्ययस्थाने च चन्द्रमाः ॥ चतुर्थे मंगलो यस्य माता तस्य न जीवति ॥ ९५॥ चतुर्थे मातृहा पापो दशमे पितृहा भवेत्॥सप्तमे भवने पापः पितृमात्रोर्विनाशकः॥९६॥द्वादशे रिपुभावे वा यदा क्रूरा व्यवस्थिताः॥ तदा मातृभयं विद्याच्चतुर्थे दशमे पितुः॥९७॥उच्चो वा यदि वा नीचः सप्तमस्थो यदा रविः॥ तदा जातो निहंत्याशु मातरं नात्र संशयः ॥ ९८ ॥ नाग ८ गो ९ सिद्ध २४ जाती २२ षु ५ क्ष्मा १ ब्धि४ नेत्र २ नखा२०धृतिः१८॥ क्ष्माश्वि-२१दिक्१०षवजाद्यंशे तुल्याब्दैश्च विधौ व्यसुः॥९९॥

बीस वर्षमें होती है निश्चय जानो ॥ ९४ ॥ छठे घरमें पापग्रह हो, बारहवें घरमें चन्द्रमा हो, चौथे घरमें जिसके मंगल हो उसकी माता नहीं जीवै ॥ ९५ ॥ चौथे घरमें पापग्रह हो तो माताको नष्ट करै, दशवें घरमें पापग्रह हो तो पिताको नष्ट करै और सातवें घरमें पाप-ग्रह हो तो पिता माता दोनोंको नष्ट करै ॥ ९६ ॥ बारहवें अर्थात् छठे घरमें क्रूर ग्रह होवें तो माता नष्ट होवे, चौथे वा दशवें घरमें पापग्रह हो तो पिता नष्ट होवे ॥ ९७ ॥ उच्च राशिका अथवा नीचका सूर्य सातवें घरमें हो तो जन्मनेवाला नर माताको नष्ट करै इसमें सन्देह नहीं ॥ ९८ ॥ यह पूर्वयोग माताको कब नष्ट करै यह कहते हैं, कि, चन्द्रमा मेष आदि जिस नवांशकमें हो तहां क्रमसे ८-९-२४-२२-५-१-४-२-२०-१८-२१-१० इन वर्षोंमें मृत्यु कहो। जैसे मेषके नवांशकमें हो तो ८ वर्षमें, वृषमें ९ वर्षमें, इसी

लग्ने शनिर्यदा भौमो राहुः सूर्यश्च संस्थितः॥सन्तापो रक्तदोषोऽथ सर्वसौम्येष्वरोगिता ॥ २०० ॥ केन्द्रे शुभो यदैकोऽपि बली विश्वप्रकाशकः ॥ सर्वे दोषाः क्षयं यांति दीर्घायुश्च भवेन्नरः ॥ १ ॥ अर्कः केन्द्रे यदा चन्द्रो मित्रांशे गुरुवीक्षितः ॥ वित्तवान् ज्ञानसम्पन्नो जायते हि तदा नरः ॥ २ ॥

अथ वारायुः ।

विपदः प्रथमे मासे द्वात्रिंशे च त्रयोदशे ॥ षष्ठेऽपि च यदा सूर्ये जातो जीवति षष्टिकम्॥३॥एकादशेऽष्टमे मासे चन्द्रे पीडा च षोडशे ॥ सप्तविंशतिमे वर्षे चतुर्युक्ता स्थितौ मृतिः ॥४॥ द्वात्रिंशे च द्वितीये च वर्षे पीडा च मंगले ॥ चतुःसप्ततिवर्षाणि सदा रोगी

प्रकार सब जगह जानो ॥ ९९ ॥ लग्नमें शनि, मंगल, राहु, सूर्य बैठे हों तो संताप रहै, रक्तकी बीमारी रहै, सब शुभग्रह हों तो आरोग्य रहै ॥२००॥ केंद्रमें जो एक भी शुभग्रह हो तो बली, विश्वका प्रकाशक दीर्घ आयुवाला नर हो और सब दोष नष्ट होजावें । सूर्य केंद्रमें हो चंद्रमा मित्र ग्रहके नवांशकमें तथा बृहस्पति देखा गया हो तो वह नर धनी ज्ञानसंयुक्त होता है ॥१॥२॥ इति शुभाशुभयोगाः ।

जिसका ऐतवारको जन्म हो तो उसे पहिले महीनेमें पीडा हो और बत्तीस ३२ तेरह १३ छठा ६ इन वर्षोंमें पीडा हो तथा ६० वर्षतक जीवै ॥ ३ ॥ सोमवारको जन्मे तो ग्यारहवें आठवें महीनेमें पीडा हो, सोलहवें और सत्ताईसवें वर्षमें पीडा हो, चौराशी वर्षकी अवस्था हो ॥ ४ ॥ मंगलवारके दिन जन्म भया हो तो दूसरे और बत्तीसवें वर्षमें पीडा हो और सदा रोगी रहै, चौहत्तर ७४ वर्षतक

स जीवति ॥५॥ बुधवारेऽष्टमे मासे पीडा वर्षे तथा-
ऽष्टमे ॥ पूर्णे चतुःषष्टिवर्षे ततो मृत्युर्भविष्यति ॥६॥
गुरौ च सप्तमे मासे षोडशे च त्रयोदशे ॥ पीडा तत-
श्चतुर्युक्तशतं वर्षाणि जीवति॥७॥शुक्रवारे च जातस्य
देहो रोगविवर्जितः ॥ षष्टिवर्षे च संपूर्णे म्रियते मानवो
ध्रुवम् ॥८॥ शनौ च प्रथमे मासे पीडाष्टादशवत्सरे॥
दृढदेहस्तदा जातः शतं वर्षाणि जीवति ॥ ९ ॥

अथ वारफलम् ।

मिष्टान्नभोगी मानी च क्रोधी च रतिलालसः ॥
पित्ताधिको रवेर्वारे धनकामी भवेन्नरः॥२१०॥भोगी
कामी शास्त्रवेत्ता गुणी मानी जितेन्द्रियः॥विद्याधिकः

जीवे ॥ ५ ॥ बुधवारमें जन्म हो तो आठवें महीने तथा आठवें वर्षमें पीडा हो फिर चौसठ वर्ष पूरे हो लेवें तब मृत्यु हो ॥ ६ ॥ बृहस्पतिवारमें जन्म हो तो सातवें महीनेमें सोलहवें और तेरहवें वर्षमें पीडा हो फिर एकसौ चार वर्षतक जीवे ॥ ७ ॥ शुक्रवारमें जन्म हो तो देहमें पीडा न हो और साठ वर्ष पूरे हो लेवें तब वह मनुष्य मृत्युको प्राप्त होता है ॥ ८ ॥ शनिवारविषे जन्म हो तो पहिले महीने और अठारहवें वर्षमें पीडा हो और दृढशरीर रहै सौ वर्षतक जीवै ॥ ९ ॥ इति वारायुः ॥

अथ वारजन्मफलम्--ऐतवारको जन्म हो तो मिष्टान्न भोगनेवाला, मानी, क्रोधी, मैथुनकी लालसा तथा पित्त अधिक हो तथा धनकी कामना होती है ॥२१०॥ सोमवारमें जन्मे तो भोगी, कामी, शास्त्रवेत्ता, गुणी, मानी, जितेंद्रिय, अधिक विद्यावान्, शीलयुक्त होता

शीलयुक्तो जायते चन्द्रवासरे॥११॥मूर्खप्रियो धनी क्रूरः श्रुतिस्मृतिविनिन्दकः॥नास्तिको वेदहीनश्च भौमे भोगी भवेन्नरः ॥१२॥ वेदशास्त्रक्रियायुक्तो दयालुश्च बहुश्रुतः ॥ भयानको योगयुक्तो जायते बुधवासरे ॥ १३ ॥ वेदवेत्ता चाग्निहोत्री पुत्रपौत्रधनान्वितः ॥ प्रजान्वितः पूर्णवेत्ता गुरुवारे भवेन्नरः ॥१४॥ अर्थी भोगी धनी शूरः कृपालुर्बहुसेवकः॥दैवज्ञोऽपि श्रुतिज्ञश्च जनः शुक्रदिने भवेत् ॥ १५ ॥ नीचसक्तः कृतघ्नश्च कुटिलो बंधुपीडकः ॥ कृतकार्यहरो रोगी जायते शनिवासरे ॥१६॥ लग्नादुपचयस्थानस्थिते वारग्रहे सति॥उक्तं फलं भवेच्छ्रेष्ठं विपरीतमतोऽन्यथा ॥ १७ ॥ इति जन्मवारफलम् ।

है ॥११॥ मंगलवारमें जन्मे तो मूर्खोंका प्रिय, धनी, क्रोधी, श्रुतिस्मृतिकी निंदा करनेवाला, नास्तिक, वेदहीन तथा भोगी होता है ॥१२॥ बुधवारमें जन्मे तो वेद शास्त्रकी क्रियामें युक्त, दयालु, बहुश्रुत, डरपोक, योगयुक्त हो ॥ १३ ॥ वेदको जाननेवाला, अग्निहोत्री, पुत्र पौत्र धनादिकोंसे युक्त, प्रजासे युक्त, पूर्ण विद्वान् ऐसा नर बृहस्पति वारमें जन्मनेसे होता है ॥ १४ ॥ प्रयोजन करनेवाला, भोगी, धनी, शूर, वीर, कृपालु, बहुत भृत्योंवाला, दैवज्ञ, वेदवेत्ता ऐसा नर शुक्रवारमें जन्मनेसे होता है ॥ १५ ॥ जो शनिवारमें जन्मे वह नीच जनोंमें आसक्त रहे, । कृतघ्न, कुटिल, बंधुजनोंको पीडा करनेवाला और किये हुए कार्यको नष्ट करनेवाला तथा रोगी होता है ॥ १६ ॥ जिस वारमें जन्म भया हो वह ग्रह लग्नसे उपचय (३-११-१०-६) इन घरोंमें स्थित होवे तो कहा हुआ फल श्रेष्ठ (पूर्ण) जानना नहीं तो विपरीत फल जानो ॥ १७ ॥ इति वारफलम् ।

अथ मेषादिराशिफलम् ।

लोलनेत्रः सदा रोगी धर्मार्थकृतनिश्चयः ॥ पृथुजंघः कृतज्ञश्च विक्रान्तो राजपूजितः ॥ १८ ॥ कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि ॥ चंडकर्मा मृदुश्चांते मेषराशौ भवेन्नरः ॥ १९ ॥ भोगी दाता शुचिर्दक्षो महामल्लो महाबलः ॥ धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत् ॥ २२० ॥ मिष्टवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालुर्मैथुनप्रियः ॥ गान्धर्ववित्कण्ठरोगी कीर्तिभागी धनी गुणी ॥ २१ ॥ गौरो दीर्घः पटुवक्ता मेधावी च दृढव्रतः ॥ समर्थो ह्यतिवादी च जायते मिथुने नरः ॥ २२ ॥ कार्यकारी धनी शूरो धार्मिष्ठो गुरुवत्सलः ॥ शिरोरोगी महाबुद्धिः कृशांगः

अथ मेषादिराशिफलम् । चञ्चल नेत्रोंवाला, सदा रोगी, धर्म अर्थमें निश्चय करनेवाला, मोटी पिंडलियोंवाला, कृतज्ञ, बलवान्, राजासे पूजित ॥ १८ ॥ और स्त्रीके चित्तको आनन्द देनेवाला, दानी, जलसे डरनेवाला, प्रचण्ड कर्म करनेवाला, आखिरमें सरल होनेवाला ऐसा नर मेषराशिमें जन्मनेसे होता है ॥ १९ ॥ वृष राशिमें जन्मे तो भोगी, दानी, पवित्र, चतुर, महामल्ल, महाबली, धनी, विलासी, तेजस्वी और सुन्दर मित्रोंवाला होता है ॥ २२० ॥ और मिष्ट वचन बोलनेवाला, चंचलदृष्टिवाला, दयालु, मैथुन करनेकी प्रीतिवाला, गायनविद्या जाननेवाला, कंठरोगी, कीर्तिमान्, धनी, गुणी ॥२१॥ गौर, दीर्घ, चतुर, वक्ता, मेधा (बुद्धि) दृढ संकलपवाला, समर्थ, अत्यंतवादी ऐसा नर मिथुन राशिमें जन्मनेवाला होता है ॥ २२ ॥ कार्य करनेवाला, धनी, शूर, वीर, धार्मिष्ठ, गुरुका प्रिय,

कृतवित्तमः ॥ २३ ॥ प्रवासशीलः कोपान्धो बाल्ये दुःखी सुमित्रकः ॥ अनासक्तो गृहे वक्ता कर्कराशौ भवेन्नरः ॥ २४ ॥ क्षमायुक्तस्त्रपायुक्तो मद्यमांसप्रियः सदा ॥ देशभ्रमणशीलश्च शीतभीतः सुमित्रकः ॥ २५ ॥ विनयी शीघ्रकोपश्च जननीजनवल्लभः ॥ व्यसनी प्रकटो लोके सिंहराशौ भवेन्नरः ॥ २६ ॥ विलासी सुजनाह्लादी सुभगो धनपूरितः ॥ प्रवासशीलः स्त्रीदुःखी वेदमार्गपरायणः ॥२७॥ दाता दक्षः कविर्वृद्धो गांधर्वे वाद्यके रतः॥ सर्वलोकप्रियो नित्यं कन्याजातो भवेन्नरः॥ २८॥ स्वस्थानरोषणो दुःखी पटुभाषी कृपान्वितः ॥ चंचलाक्षश्च लक्ष्मीको गृहमध्येऽतिविक्रमः ॥ २९ ॥ वाणिज्यदक्षो देवानां

शिरमें रोगयुक्त, महाबुद्धिमान्, दुबला, किये कामको जाननेवाला ॥ २३ ॥ परदेशमें रहनेवाला, क्रोधसे अंधा हुआ, बालक अवस्थामें दुःखी, सुन्दर मित्रोंवाला, घरमें अनासक्त, वक्ता ऐसा नर कर्क राशिमें जन्मनेसे होता है ॥ २४ ॥ क्षमायुक्त, लज्जायुक्त, मद्य मांसमें सदा प्रिय, देशमें भ्रमनेवाला, शीतसे डरनेवाला, सुन्दर मित्रोंवाला तथा ॥ २५ ॥ विनयी, शीघ्रक्रोधी, माताको प्रिय, व्यसनी, लोकमें प्रसिद्ध ऐसा नर सिंह राशिमें होता है ॥२६॥ श्रेष्ठ जनोंको आनन्ददायी, ऐश्वर्यवान्, परदेशमें रहनेवाला, स्त्रीसे दुःखी, वेदमार्गमें तत्पर ॥ २७ ॥ दानी, चतुर, कवि, वृद्ध, गाने बजानेमें निपुण, सदा सब लोगोंको प्रिय ऐसा नर कन्या राशिविषे जन्मनेसे होता है ॥२८॥ तुलाराशिमें जन्मनेवाला नर अपने घरमें क्रोधी, दुःखी, कोमल बोलनेवाला, दयावान्, चंचल नेत्रोंवाला, लक्ष्मीवान्, घरमें अत्यंत पराक्रमी ॥ २९ ॥ वणिज करनेमें चतुर, देवताओंका पूजक,

पूजको मित्रवत्सलः ॥ प्रवासी सुहृदामिष्टो जूकजातो भवेन्नरः ॥२३०॥ बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरःपिङ्गललोचनः ॥ परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने जने ॥३१॥ साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्टधीः ॥ धूर्तश्चोरफलारंभी वृश्चिकेन्दौ भवेन्नरः ॥३२॥ क्रूरः समधिया युक्तः सात्त्विको जननंदनः ॥ शिल्पविज्ञानसंपन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः ॥ ३३ ॥ मानी चरित्रसंपन्नो ललिताक्षरभाषणः ॥ तेजस्वी स्थूलदेहश्च धनुर्जातः कुलान्तकः ॥ ३४ ॥ कुले नेष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवारकः ॥ गीतज्ञो लालसी गुह्यः पुत्राढ्यो मातृवत्सलः ॥ ३५ ॥ धनी त्यागी सुभृत्य-

मित्रोंका प्रिय, परदेशमें रहनेवाला, मित्र जनोंको हितदायी होता है ॥ २३० ॥ बालक अवस्थासे ही परदेशमें रहनेवाला, क्रूरस्वभाववाला, शूर, वीर, पिंगल नेत्रोंवाला, परस्त्रीसे रमण करनेवाला, अभिमानी, स्वजनविषे कठोर रहनेवाला ॥ ३१ ॥ हठसे लक्ष्मीको प्राप्त करनेवाला, माताविषे भी दुष्ट बुद्धिवाला, पाखंडी, चोरी करनेवाला ऐसा नर वृश्चिक राशिमें होता है ॥ ३२ ॥ क्रूर, समबुद्धिवाला, सत्त्वगुणी, मनुष्योंको आनन्ददायी, शिल्पविद्यामें निपुण, धनाढ्य, दिव्यस्त्रीवाला ॥ ३३ ॥ अभिमानी, माया रचनेवाला, मनोहर अक्षर बोलनेवाला, तेजस्वी, स्थूल शरीरवाला, कुलको नष्ट करनेवाला ऐसा नर धनुष राशिमें जन्मनेवाला होता है ॥ ३४ ॥ कुलमें नेष्ट, स्त्रीके वशमें रहनेवाला, पंडित, परिवारवाला, गीतको जाननेवाला, लालची, गुप्त रहनेवाला, पुत्रोंसे युक्त, माताका प्रिय ॥ ३५ ॥ धनी, त्यागी, सुन्दर

श्च दयालुर्बहुबांधवः ॥ परिचिंतितसौख्यश्च मकरेन्दौ भवेन्नरः ॥३६॥ दातालसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनेश्वरः ॥ शुभदृष्टिः सदा सौम्यो मानविद्याकृतोद्यमः ॥ ३७ ॥ पुण्याढ्यः स्नेहहीनश्च धनी भोगी सशक्तिकः ॥ शालूरकुक्षिर्निर्भीः कुंभेन्दौ जायते नरः ॥३८॥ गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुर्वाग्मी नरोत्तमः ॥ कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणी श्रेष्ठः कुलप्रियः ॥३९॥ नित्यसेवी शीघ्रगामी गांधर्वकुशलः शुभः॥मीनभेन्दौ समुत्पन्नो जायते बंधुवत्सलः ॥ २४० ॥

अथ संक्षेपेण मेषादिभस्थचन्द्रफलम् ।

मेषे दीनो वृषे मानी नानाबुद्धिश्च मन्मथे ॥ क्रूरः कर्के

भृत्योंवाला बहुत बंधुओंवाला, सुखको निरंतर चिंतवन करनेवाला ऐसा नर मकर राशिविषे होता है ॥३६॥ दानी, आलसी, कृतज्ञ, हस्ती घोडे धन इन्होंका पति, शुभ दृष्टिवाला, सदा सौम्य, मान और विद्यामें उद्यम करनेवाला ॥ ३७ ॥ पुण्यसे युक्त, स्नेहहीन, धनी, भोगी, शक्तिमान्, मीडककी कुक्षिसमान कोखिवाला, भयरहित ऐसा नर कुंभ राशिमें जन्मनेवाला होता है ॥ ३८ ॥ गंभीर चेष्टवाला, शूरवीर, चतुर, उत्तम बोलनेवाला, नरोंमें श्रेष्ठ, क्रोधी, कृपण, ज्ञानी गुणियोंमें श्रेष्ठ, कुलका प्रिय ॥ ३९ ॥ नित्य सेवा करनेवाला, शीघ्र गमन करनेवाला, गायनविद्यामें निपुण, शुभ, (सुन्दर लक्ष्मीवान्), बंधुओंका प्रिय ऐसा नर मीन राशिविषे जन्मनेवाला होता है ॥ २४० ॥

अब संक्षेपसे मेष आदि चन्द्रमाका फल कहते हैं--मेषका चन्द्रमा हो तो दीन, वृषका हो तो अभिमानी, मिथुनमें अनेक प्रकारकी

धृतिः सिंहे कन्यायां बहुमायिता ॥४१॥ जूके स्त्रीत्व-
मलौ मानी चापे पापाशयो नरः ॥ मुखरो मकरे कुंभे
चतुरः स्थिरधीर्झषे ॥ ४२ ॥

अथ मेषादिलग्नोत्पन्नफलम् ।

मेषलग्ने समुत्पन्नश्चण्डो मानी सुधीः शुभः ॥ क्रोधी च
जनहन्ता च विक्रमी परवत्सलः ॥४३॥ वृषलग्नभवो
बालो गुरुभक्तः प्रियंवदः ॥ गुणी कृती धनी लुब्धः
शूरः सर्वजनप्रियः ॥४४॥ मिथुनोदयजातस्तु मानी
स्वजनवत्सलः ॥ त्यागी भोगी धनी कामी दीर्घसूत्री-
ऽरिमर्दनः ॥४५॥ कर्कलग्ने समुत्पन्नो भोगी धर्मी जन-
प्रियः ॥ मिष्टान्नपानभोगी च सौभाग्यः स्वजनप्रियः ४६

बुद्धिवाला, कर्कमें क्रूर, सिंहमें धीरजवाला, कन्यामें बहुत कपट (छल) वाला ॥ ४१ ॥ तुलामें स्त्री स्वभाववाला, वृश्चिकमें अभिमानवाला, धनमें बुरा अन्तःकरणवाला, मकरमें वाचाल, कुंभमें चतुर, मीन राशिके चन्द्रमामें जन्मनेवाला स्थिर बुद्धिवाला होता है ॥ ४२ ॥ इति मेषादि-जन्मराशिस्थचन्द्रफलानि ॥

अथ मेषादिलग्नोत्पन्नफलम्—मेष लग्नमें जन्मनेवाला कठोर, अभिमानी, पंडित, क्रोधी, जनहंता, पराक्रमी, अन्य घरमें स्नेह करनेवाला भी होता है ॥ ४३ ॥ वृष लग्नमें जन्मनेवाला बालक गुरुका भक्त, प्रिय बोलनेवाला, गुणी, पंडित, लोभी, शूरवीर, सर्व जनको प्रिय होता है ॥ ४४ ॥ मिथुन लग्नमें जन्मनेवाला अभिमानी, स्वजन-पर हित करनेवाला, त्यागी, भोगी, धनी, कामी, दीर्घसूत्री, शत्रुना-शक होता है ॥ ४५ ॥ कर्क लग्नमें जन्मनेवाला भोगी, धर्मी, सर्व-जनप्रिय, मीठा अन्नपान करनेवाला, ऐश्वर्यवान्, स्वजनप्रिय होता

सिंहलग्नोदये जातो भोगी शत्रुविमर्दकः ॥ स्वल्पोदरोऽल्पपुत्रश्च सोत्साही रणविक्रमः ॥ ४७ ॥ कन्यालग्नभवो बालो नानाशास्त्रविशारदः॥सौभाग्यगुणसंपन्नो सुंदरः सुरतप्रियः ॥ ४८ ॥ तुलालग्नोदये जातः सुधीः सत्कर्मजीवनः ॥ विद्वान्सर्वकलाभिज्ञो धनाढ्यो जनपूजितः॥ ४९ ॥ वृश्चिकोदयजो बालः शौर्यवानतिधृष्टधीः।विज्ञानज्ञानसंपन्नःसुखी सुविग्रहः सुधीः ॥२५०॥ धनुर्लग्नोदये जातो नीतिमान्गुणवान्सुधीः॥कुलमध्ये प्रधानश्च प्राज्ञः सर्वस्य पोषकः५१ मकरोदयजोबालो नीचकर्मा बहुप्रजः॥लुब्धः स्वस्थोऽलसो दीनः स्वकार्येषु कृतोद्यमः॥५२॥कुंभलग्नोदये जातश्चलचित्तोऽतिसौहृदः॥परदाररतो नित्यं मृदुकायो

है ॥४६॥ सिंह लग्नमें जन्मनेवाला भोगी, शत्रुओंको नष्ट करनेवाला, स्वल्प उदरवाला, थोड़े पुत्रोंवाला, उत्साहवाला, रणमें पराक्रमी होता है ॥ ४७ ॥ कन्या लग्नमें जन्मनेवाला बालक अनेक शास्त्रोंको जाननेवाला, सौभाग्यगुणसे संपन्न, सुंदर, मैथुनप्रिय होता है ॥४८॥ तुला लग्नमें जन्मे तो पंडित, श्रेष्ठ कामकी आजीविकावाला, विद्वान्, सर्व कलाओंको जाननेवाला, धनाढ्य, अन्य जनोंसे पूजित हो ॥ ४९ ॥ वृश्चिक लग्नमें जन्मनेवाला बालक शूरवीर, उद्दण्डबुद्धिवाला होता है, विज्ञान और ज्ञानसे संयुक्त, सुखी, सुंदर शरीरवाला, पंडित हो ॥ २५० ॥ धन लग्नमें जन्मे तो नीतिमान्, गुणी पण्डित हो, कुलके मध्यमें प्रधान, बुद्धिमान्, सब जनोंका पोषक हो ॥ ५१ ॥ मकर लग्नमें जन्मनेवाला बालक नीच कर्म करै, बहुत संतान हो, लोभी, स्वस्थ, आलसी, दीन, अपने कार्यमें उद्यम करनेवाला होता है ॥ ५२ ॥ कुम्भ लग्नमें जन्मे तो चञ्चल चित्तवाला, अत्यंत प्रिय,

महासुखी ॥९३॥ मीनलग्नोद्भवो बालो रत्नकांचनपूरितः॥ अल्पकामोऽतिरक्तश्च दीर्घकालविचिंतकः ॥९४॥

अथ तिथिफलम् ।

क्रूरसंगी धनैर्हीनः कुलसंतापकारकः ॥ व्यसनासक्तचित्तश्च प्रतिपत्तिथिजो नरः ॥ ९५ ॥ परदाररतो नित्यं सत्यशौचविवर्जितः ॥ तस्करः स्नेहहीनश्च द्वितीयायां भवेन्नरः ॥ ९६ ॥ अचेतनोऽतिविकलो निर्द्रव्यो विफलः सदा ॥ परद्वेषरतो नित्यं तृतीयासंभवो नरः ॥९७॥ महाभोगी च दाता च मित्रस्नेहविचक्षणः ॥ धनसंतानसंयुक्तश्चतुर्थ्यां यदि जायते ॥ ॥ ९८ ॥ व्यवहारी गुणग्राही पितृमात्रोश्च रक्षकः॥ दाता भोक्ता तनुप्रीतिः पञ्चमीसम्भवो नरः ॥९९॥

नित्य पराई स्त्रीमें रत, कोमल शरीरवाला, महासुखी होता है ॥ ९३॥ मीन लग्नमें जन्मनेवाला बालक रत्न सुवर्णसे भरपूर, अल्प कामनावाला, अत्यंत स्नेही, दीर्घ कालकी बात चिंतवन करनेवाला हो ॥ ९४ ॥ इति जन्मलग्नफलम् ।

जो मनुष्य प्रतिपदा तिथिमें जन्मे वह क्रूरसंगी, धनहीन, कुलको संताप करनेवाला, व्यसनमें आसक्तचित्तवाला होता है ॥९५॥ द्वितीयामें जन्मनेवाला नर नित्य पराई स्त्रीविषे रमण करनेवाला, सत्य शौचरहित, स्नेहहीन, चोर हो ॥९६॥ तृतीयामें जन्मे तो बुद्धिरहित, अति विकल, धनरहित, निष्फल रहता है, नित्य अन्यसे द्वेष करता है ॥ ९७ ॥ चतुर्थीमें जन्मनेवाला महाभोगी, दानी, मित्रस्नेहसे निपुण, धनसंतानसे संयुक्त होता है ॥ ९८ ॥ पंचमीविषे जन्मे तो व्यवहारी, गुणग्राही, मातापिताका रक्षक, दाता, भोक्ता, सूक्ष्म प्रीतिवाला

नानादेशाभिगामी च सदा कलहकारकः॥नित्यं जठर-
दोषी च षष्ठीजातो भवेन्नरः ॥२६०॥ अल्पतोषी च
तेजस्वी सौभाग्यगुणसुंदरः॥पुत्रवान्धनसंपन्नः सप्तमी-
संभवो नरः ॥ ६१ ॥ धर्मिष्ठः सत्यवादी च दाता
भोक्ता च वत्सलः॥गुणज्ञः सर्वकार्यज्ञो योऽष्टमीसंभवो
नरः ॥६२॥ देवताराधकः पुत्री धनी स्त्रीमग्नमानसः॥
शास्त्राभ्यासरतो नित्यं नवम्यां यदि जायते ॥६३॥
दशम्यां धर्मकर्मज्ञो देवसेवी च जापकः॥गुणी धनी
वेदविज्ञो बंधुविप्रप्रियो जनः ॥६४॥ एकादश्यां नरे-
न्द्रस्य गेहगामी शुचिर्भवेत्॥धर्मज्ञश्च विवेकी न गुरु-
शुश्रूषको गुणी ॥ ६५ ॥ चपलश्चंचलज्ञानः सदा

होता है ॥ ५९ ॥ षष्ठी तिथिमें जन्मे तो अनेक देशोंमें विचरने-वाला, सदा कलह करनेवाला, नित्य उदररोगी होवे ॥ २६० ॥ सप्त-मीको जन्मे तो अल्प संतोषवाला, तेजस्वी, सौभाग्य गुणसे सुंदर, पुत्रवान्, धनसे भरपूर होता है ॥ ६१ ॥ जो मनुष्य अष्टमीको जन्मे वह धर्मिष्ठ, सत्यवादी, दानी, भोगी, सबका प्रिय, गुणज्ञ, सब कार्यको जाननेवाला होता है ॥ ६२ ॥ नवमी विषे जन्मनेवाला नर देवताके आराधन करनेवाला, पुत्रवंत, धनी, स्त्रीविषे आसक्तमन-वाला, शास्त्रके अभ्यासमें सदा प्रयुक्त होवे ॥ ६३ ॥ दशमी विषे जन्मनेवाला धर्म कर्मको जाननेवाला, देवताकी सेवा करनेवाला, जापक होता है । गुणी, धनी, वेदको जाननेवाला, बन्धुजन और ब्राह्मण लोगोंका प्रिय होवे ॥ ६३ ॥ एकादशी विषे जन्मे तो राजाके घरमें जानेवाला, पवित्र, धर्मज्ञ, विवेकी, गुरुकी सेवा कर-नेवाला गुणी होता है ॥ ६५ ॥ द्वादशी तिथिमें जन्मे तो चपल,

क्षीणस्वरूपधृक् ॥ देशभ्रमणशीलश्च द्वादशीजातको भवेत् ॥ ६६ ॥ महासिद्धो महाप्राज्ञः शास्त्राभ्यासी जितेन्द्रियः॥परकार्यरतो नित्यं त्रयोदश्यां यदा भवेत् ॥६७॥धनाढ्यो धर्मशीलश्च शूरः सद्वाक्यपालकः॥ राजमान्यो यशस्वी च चतुर्दश्यां यदा भवेत्॥६८॥ श्रीयुतो मतियुक्तश्च महाभोजनलालसः ॥ उज्ज्वलः परदारेषु विरतः पूर्णिमाभवः ॥६९॥ स्थिरारंभः परद्वेषी वक्रो मूर्खः पराक्रमी ॥ गूढमंत्री च संज्ञानी ह्यमावास्याभवो नरः॥२७०॥निर्विद्धायां तिथौ सौम्यविद्धायां च शुभं फलम् ॥ अनिष्टं पापविद्धायां तिथौ भवति निश्चितम् ॥ ७१ ॥

चञ्चल ज्ञानवाला, सदा क्षीण स्वरूपवाला, विदेशमें भ्रमनेवाला होता है ॥ ६६ ॥ त्रयोदशी विषे जन्मे तो महासिद्ध, महाप्राज्ञ, शास्त्रका अभ्यास करनेवाला, जितेन्द्रिय, नित्य पराये कार्यमें रहनेवाला होता है ॥ ६७ ॥ चतुर्दशी विषे जन्मनेवाला नर धनाढ्य, धर्मशील, शूरवीर, श्रेष्ठ वचनको पालनेवाला, राजमान्य, यशस्वी होता है ॥ ६८ ॥ पूर्णिमाको जन्मे तो लक्ष्मीयुक्त, बुद्धियुक्त, महान् भोजनमें लालसावाला, अन्य स्त्रियों विषे रमण करनेवाला, तेजस्वी होता है ॥ ६९ ॥ अमावास्या विषे जन्मे तो स्थिर कामका आरंभ करनेवाला, परद्वेषी, कुटिल, मूर्ख, पराक्रमी, गूढ मंत्री, सम्यक् ज्ञानी होता है ॥ २७० ॥ निर्विद्धा तथा शुभसे विद्ध हुई तिथिमें जन्मे तो शुभफल हो और जो पापविद्धा तिथिमें जन्म हो तो अनिष्ट (बुरा) फल हो ऐसे निश्चय जानो ॥ ७१ ॥ इति प्रतिपदादिजन्मतिथिविशेषफलम् ।

अथ नन्दादितिथिफलम्।

नन्दातिथौ नरो जातो महामानी च कोविदः॥ देवताभक्तिनिष्ठश्च ज्ञानी च प्रियवत्सलः ॥ ७२ ॥ भद्रातिथौ बन्धुमान्यो राजसेवी धनान्वितः॥ संसारभयभीतश्च परमार्थमतिर्नरः॥७३॥ जयातिथौ राजपूज्यः पुत्रपौत्रादिसंयुतः॥ शूरःशांतश्च दीर्घायुर्महाविज्ञश्च जायते ॥ ७४ ॥ रिक्तातिथौ वित्तहीनः प्रमादी गुरुनिन्दकः॥ शास्त्रज्ञमतिहंता च कामुकश्च नरो भवेत् ॥ ७५॥ पूर्णातिथौ धनैःपूर्णो वेदशास्त्रार्थतत्त्ववित्॥ सत्यवादी शुद्धचेता जातो भवति मानवः ॥ ७६ ॥

अथ विष्कंभादियोगफलम्।

विष्कंभजातो मनुजो रूपवान्गुणवान्भवेत्॥नानालंकारसंपूर्णो महाबुद्धिविशारदः ॥ ७७ ॥ प्रीतियोगे

नन्दातिथिविषे जन्मनेवाला नर महामानी, पंडित, देवताकी भक्तिमें तत्पर, ज्ञानी, प्रियजनोंका हित करनेवाला होवै ॥ ७२ ॥ भद्रा तिथिमें जन्मे तो बंधुओंसे मान्य, राजसेवी, धनाढ्य, संसारसे डरनेवाला, परमार्थमें बुद्धि रखनेवाला होता है ॥ ७३ ॥ जयातिथि विषे जन्मनेवाला राजपूज्य, पुत्रपौत्रादिकोंसे संयुक्त, शूर, वीर, शांत, दीर्घ अवस्थावाला, महाविद्वान् होता है ॥ ७४ ॥ रिक्तातिथिमें जन्मे तो धनहीन, प्रमादी, गुरुनिंदक, शास्त्रवेत्तोंके बुद्धिको नष्ट करनेवाला, कामी जन हो ॥ ७५ ॥ पूर्णा तिथि विषे जन्मे तो धनोंकरके परिपूर्ण, वेद शास्त्रके तत्त्वको जाननेवाला, सत्यवादी, शुद्धचित्तवाला होता है ॥ ७६ ॥ इति नन्दादिपंचतिथिसामान्यफलम्।

विष्कंभ योगमें जन्मनेवाला मनुष्य रूपवान्, गुणवान् होता है, अनेक प्रकारके आभूषणोंसे संयुक्त, महा बुद्धिमान्, पंडित होवे ॥ ७७॥

समुत्पन्नो योषितां वल्लभो भवेत्।तत्त्वज्ञश्च महोत्साही स्वार्थे नित्यं कृतोद्यमः॥ ७८ ॥आयुष्मान्नाम्नि योगे च जातो मानी धनी कविः॥ दीर्घायुः सत्त्वसंपन्नो युद्धे चाप्यपराजितः ॥७९॥ सौभाग्ये यः समुत्पन्नो राजमन्त्री च जायते॥निपुणःसर्वकार्येषु वनितानां च वल्लभः ॥ २८० ॥ शोभने शोभनो बालो बहुपुत्र-कलत्रवान् ॥ आतुरः सर्वकार्येषु युद्धभूमौ सदोत्सुकः ॥८१॥ अतिगंडे च यो जातो मातृहंता भवेच्च सः॥ गण्डांतेषु च जातस्तु कुलहंता प्रकीर्तितः ॥ ८२ ॥ सुकर्मणि च यो जातः सुकर्मा जायते नरः ॥ सर्वैः प्रीतः सुशीलश्च रागी भोगी गुणाधिकः ॥ ८३ ॥ धृतियोगे च धृतिमान्कीर्तिपुष्टिधनान्वितः॥भाग्यवा

प्रीति योगमें जन्मे तो स्त्रियोंका प्रिय हो, तत्त्वज्ञ; महाउत्साही नित्यप्रति स्वार्थमें उद्यम करनेवाला हो ॥ ७८ ॥ आयुष्मान् योगमें जन्मे तो वह मानी, धनी, कवि होता है, दीर्घ आयुवाला, पराक्रमी, युद्धमें शूर वीर होता है ॥ ७९ ॥ सौभाग्य योगमें जन्मनेवाला राजाका मन्त्री हो, सब कार्योंमें निपुण, स्त्रियोंका प्रिय होता है ॥ २८० ॥ शोभन योगमें जन्मनेवाला बालक सुन्दर हो, बहुत पुत्र तथा स्त्रीसे युक्त हो, सब कामोंमें आतुर, युद्धभूमिमें उत्साहवाला होवे ॥ ८१ ॥ अतिगंड योगमें जन्मनेवाला अपनी माताको नष्ट करे, जो इस अतिगंड योगके अन्तकी (घडियों) में जन्में तो सम्पूर्ण कुलको नष्ट करै ॥ ८२ ॥ सुकर्मा योगमें जन्मने वाला नर सुन्दर कर्म करे, सबसे प्रसन्न रहै, सुन्दर स्वभाववाला, रागी, भोगी अधिक गुणवाला हो ॥ ८३ ॥ धृति योगमें जन्मनेवाला धृति-

गुणसंपन्नो विद्यावान् रूपवान्भवेत् ॥ ८४ ॥ शूले शूलव्यथायुक्तो धार्मिकः शास्त्रपारगः॥विद्यार्थकुशलो यज्वा जायते मनुजः सदा ॥ ८५ ॥ गंडे गण्डव्यथायुक्तो बहुक्लेशो महाशिराः॥ह्रस्वकायो महास्थूलो बहुभोगो दृढव्रतः ॥ ८६ ॥ वृद्धियोगे च दीर्घायुः सर्वेषां प्रियदर्शनः॥सुरूपो बहुपुत्रश्च कलावान्सुकलत्रवान्॥८७॥ध्रुवयोगेऽतिशक्तश्च स्थिरकर्मा सदा नरः॥ धनवानतिभोक्ता च सत्त्ववानपि जायते ॥ ८८ ॥ व्याघातयोगे जातस्तु सर्वज्ञःसर्वपूजितः॥सर्वकर्मकरो लोके विख्यातः सर्वकर्मसु ॥ ८९ ॥ हर्षणे जायते लोके महाभागो नृपप्रियः॥हृष्टः सदा धनैर्युक्तो वेद-

मान्, कीर्ति, पुष्टि, धनसे युक्त होता है, भाग्यवान्, गुणसंपन्न, विद्यावान्, रूपवान् होता है ॥ ८४ ॥ शूलयोगमें जन्मे तो शूल रोगकी पीडासे युक्त, धार्मिक, शास्त्रके पारको जाननेवाला होता है, विद्याके प्रयोजनमें निपुण, सदा यज्ञ करनेवाला होता है ॥ ८५ ॥ गंडयोगमें जन्मे तो गंडमाला रोगकी पीडासे युक्त, बहुत क्लेशवाला, बडा शिरवाला, छोटा शरीरवाला, महास्थूल, बहुत भोगी, दृढव्रत होता है ॥ ८६ ॥ वृद्धि योगमें जन्मे तो वह दीर्घ आयुवाला, सबको प्रिय दर्शन, सुरूप, बहुत पुत्रोंवाला, कलावान्, सुन्दर स्त्रीवाला होता है ॥ ८७ ॥ ध्रुवयोगमें जन्मे तो वह अत्यंत समर्थ स्थिर कर्म करनेवाला, धनवान्, अत्यंत भोगी, पराक्रमी होता है ॥ ८८ ॥ व्याघात योगमें जन्मे तो वह नर सर्वज्ञ, सर्वपूजित होता है, सब काम करनेवाला, लोकमें सब कामोंमें प्रसिद्ध हो ॥८९॥ हर्षण योगमें जन्मे तो लोकमें महाभोगी, राजाका प्रिय हो, हृष्ट, सदा धनोंकरके युक्त,

शास्त्रविशारदः ॥ २९० ॥ वज्रयोगे वज्रमुष्टिः सर्व-
विद्यासु पारगः॥धनधान्यसमायुक्तो मनुजो वज्रवि-
क्रमः ॥ ९१ ॥ सिद्धियोगे समुत्पन्नः सर्वसिद्धियुतो
भवेत् ॥ दाता भोक्ता सुखी कांतः शोकी रोगी च
मानवः ॥ ९२ ॥ व्यतीपाते च संजातो महाकष्टेन
जीवति ॥ जीवेच्चेद्भाग्ययोगेन स भवेदुत्तमो नृणाम्॥
॥ ९३ ॥ योगे वरीयसि भवो वरिष्ठो जायते नरः॥
शिल्पकाव्यकलाभिज्ञो गीतनृत्यादिकोविदः ॥
॥ ९४ ॥ परिघे च नरो जातः स्वकुलोन्नतिका-
रकः॥ शास्त्राभिज्ञः कविर्वाग्ग्मी दाता भोक्ता प्रियं-
वदः ॥ ९५ ॥ शिवयोगे नरो जातः सर्वकल्या-
णकारकः ॥ महादेवसमो लोके महाबुद्धिर्वर-
प्रदः ॥ ९६ ॥ सिद्धियोगे सिद्धिदाता मन्त्र-

वेद शास्त्रको जाननेवाला होता है ॥ २९० ॥ वज्र योगमें जन्मे तो वज्रके समान मुष्टिवाला,सब विद्याओंको जाननेवाला, धन धान्यसे युक्त, वज्र समान पराक्रमी हो ॥९१॥ सिद्धियोगमें जन्मे तो वह सब कामोंकी सिद्धिवाला हो, दाता, भोक्ता, सुखी, रूपवान्, शोकी,रोगी होता है ॥ ९२ ॥ व्यतीपातमें जन्मे तो वह महाकष्टसे जीवै जो भाग्यके योगसे जीवै तो मनुष्योंमें श्रेष्ठ हो ॥ ९३ ॥ वरीयान् योगमें जन्मे तो वह अत्यंत श्रेष्ठ हो,शिल्प काव्य आदि कलाको जाननेवाला गीत नृत्य आदिकोंको जाननेवाला हो ॥ ९४ ॥ परिघ योगमें जन्म-नेवाला नर अपने कुलकी उन्नति करै, शास्त्रको जाननेवाला, कवि, सुन्दर वाणीवाला, दाता, भोगी, प्रिय बोलनेवाला होता है ॥ ९५ ॥ शिवयोगमें जन्मे तो वह नर सब कल्याण करनेवाला, लोकमें महा-देवके समान, महा बुद्धिवाला, वरदायी होता है ॥ ९६ ॥ सिद्धि

सिद्धिप्रवर्त्तकः ॥ दिव्यनारीसमेतश्च सर्वसम्पद्युतो भवेत्॥९७॥साध्ये मानसिका सिद्धिर्यशोऽशेषः सुखागमः॥दीर्घसूत्रः प्रसिद्धश्च जायते सर्वसंमतः ॥९८॥ शुभे शुभशतैर्युक्तो धनवानपि जायते॥विज्ञानशास्त्रसम्पन्नो दाता ब्राह्मणपूजकः ॥९९॥ शुक्ले सर्वकलायुक्तः सर्वार्थज्ञानवान्भवेत्॥कचित्प्रतापी शूरश्च धनी सर्वजनप्रियः ॥ ३०० ॥ ब्रह्मयोगे महाविद्वान्वेदशास्त्रपरायणः ॥ ब्रह्मज्ञानरतो नित्यं सर्वकार्येषु कोविदः ॥ १ ॥ ऐन्द्रे भूपकुले जातो राजा भवति विश्रुतः ॥ अल्पायुश्च सुखी भोगी गुणवानपि जायते ॥ २ ॥ वैधृतौ जायते मर्त्यो निरुत्साहो बुभुक्षितः ॥ कुर्वाणोऽपि जनैः प्रीतिं प्रयात्यप्रियतां नरः ॥ ३ ॥

योगमें सिद्धिदाता, मन्त्रसिद्धिका प्रवर्तक, दिव्य स्त्रीसे युक्त, संपूर्ण संपत्तिसे युक्त होता है ॥ ९७ ॥ साध्य योगमें मनमें कार्य सिद्धिवाला, यशवाला, सुखी, दीर्घसूत्री (देरीमें काम करनेवाला), विख्यात, सबका माना हुआ होता है ॥ ९८ ॥ शुभ योगमें सैकडों शुभ कामोंसे युक्त, धनवान्, विज्ञान शास्त्रसे सम्पन्न, दाता, ब्राह्मणोंका पूजक होता है ॥९९॥ शुक्ल योगमें जन्मे तो वह कलाओंसे युक्त, सब प्रयोजनके ज्ञानवाला हो, कभी प्रतापी, शूरवीर, धनी, सब जनोंका प्रिय हो ॥ ३०० ॥ ब्रह्मयोगमें महाविद्वान्, वेदशास्त्रके जाननेवाला, हमेशा ब्रह्मज्ञानमें रत, सब कामोंमें चतुर होता है ॥ १ ॥ ऐंद्रयोगमें राजाके कुलमें जन्मनेवाला नर विख्यात राजा होवे, अल्प आयुवाला, सुखी, भोगी, गुणवान् होता है ॥ २ ॥ वैधृति योगमें जन्मे तो वह नर उत्साहरहित, बुभुक्षित (कंगाल) हो और मनुष्योंके संग प्रीति करता हुआ भी अप्रिय होजावे ॥३॥ इति विष्कंभादिजन्मयोगफलम् ॥

अथ करणफलम् ।

बवाख्ये करणे जातो मानी धर्मरतः सदा ॥ शुभमंगल-
कर्मा च स्थिरकर्मा च जायते ॥ ४ ॥ बालवे करणे
जातो देवतीर्थादिसेवकः ॥ विद्यावान्सौख्यसम्पन्नो
राजमान्यश्च जायते ॥ ५ ॥ कौलवे च नरो जातः
प्रीतिः सर्वजनैः सहः॥ संगतिर्मित्रवर्गैश्च मानवैश्चापि
मित्रता ॥६॥ तैतिले करणे जातः सौभाग्यगुणसंयुतः॥
स्नेहः सर्वजनैः सार्धं विचित्राणि गृहाणि च ॥ ७ ॥
गराख्ये कृषिकर्मा च गृहकार्यपरायणः ॥ यद्वस्तु
कांक्षितं तच्च लभ्यतेऽत्र महोद्यमैः ॥ ८ ॥ वणिजे
करणे जातो वाणिज्येनैव जीवति ॥ वांछितं
लभते लोके देशांतरगमागमैः ॥ ९ ॥ विष्ट्याख्ये

बवकरणमें जन्मनेवाला मानी, सदा धर्मरत, शुभ मंगल कर्म करनेवाला, स्थिर कर्मवाला होता है ॥ ४ ॥ बालवकरणमें जन्मनेवाला देवता, तीर्थादिकोंकी सेवा करनेवाला, विद्यावान्, सुखसे युक्त, राजासे मान्य हो ॥ ५ ॥ कौलवकरणमें जन्मनेवाला नर सब जनोंके संग प्रीति रखता है, मित्र जनोंकी संगाति करै, सब मनुष्योंसे मित्रता करै ॥ ६ ॥ तैतिलकरणमें जन्मे तो सौभाग्य गुणसे संयुक्त, सब जनोंके साथ स्नेह रखनेवाला हो, विचित्र घरोंकी प्राप्तिवाला होवे॥७॥ गरकरणमें जन्मे तो वह खेती करनेवाला तथा घरके काममें निपुण हो, जिस वस्तुकी अभिलाषा करै उसीको महा उद्यम करनेसे प्राप्त कर लेवै ॥ ८ ॥ वणिजकरणमें जन्मे तो वह वणिजकी आजीविका करै, देशांतरमें गमन करके अपने मन चाहे कामको सिद्ध करै ॥९॥ विष्टियोगमें जन्मे तो वह अशुभ वस्तुका आरम्भ करै, विषके कामोंमें

करणे जातो ह्यशुभारंभशीलवान् ॥ कुशलो विषकार्येषु परघातरतः सदा॥३१०॥ शकुनौ जन्म यस्याभूत्पौष्टिकादिक्रियाकृती ॥ औषधादिषु दक्षश्च भिषग्वृत्तिश्च जायते ॥११॥ करणे च चतुष्पादे देवद्विजरतः सदा ॥ गोकर्मा गोप्रभुर्लोके चतुष्पादचिकित्सकः ॥ १२ ॥ नागाख्ये करणे जातः स्थावरप्रीतिकारकः ॥ कुरुते दारुणं कर्म दुर्भगो लोललोचनः ॥ १३ ॥ किंस्तुघ्ने करणे जातः शुभकर्मरतो नरः॥ तुष्टिं पुष्टिं च मांगल्यं सिद्धिं च लभते सदा॥१४॥

अथ नवमांशफलम् ।

पिशुनश्चपलो दुष्टःपापकर्मा निराकृतिः॥परेषां व्यसने सक्तश्चौरश्च प्रथमांशके॥१५॥उत्पन्नविभवो भोक्ता

निपुण, सदा पराये घात करनेमें रत रहै ॥ ३१० ॥ जो शकुनिकरणमें जन्मे तो वह पुष्टिकारक क्रिया करनेवाला, औषध आदिकोंमें चतुर, वैद्यकी आजीविका करनेवाला होताहै ॥ ११ ॥ चतुष्पादकरणमें जन्मे तो वह सदा देवता ब्राह्मणोंमें भक्ति रक्खे, संसारमें गौओंका काम, गौओंका स्वामी तथा चौपायोंका इलाज करनेवाला हो ॥ १२ ॥ नागकरणमें जन्मे तो वह स्थावर (वृक्ष) से प्रीति रक्खै, दारुण काम करै, दुर्भाग्य, चंचल नेत्रोंवाला होताहै॥ १३ ॥ किंस्तुघ्नकरणमें जन्मे तो वह सदा शुभ कर्ममें लगा रहै, तुष्टि,पुष्टि, मंगलपना इत्यादि सिद्धियोंको प्राप्त करै ॥ १४ ॥ इति बवादिकरणजन्मफलम् ।

जन्मराशिके प्रथम नवांशकमें जन्मे तो चुगलपन करनेवाला, चञ्चल बुद्धिवाला, दुष्ट, पापकर्म करनेवाला, बुरी आकृतिवाला, अन्योंके व्यसनमें आसक्त तथा चोर होवे ॥ १५ ॥ दूसरे नवांशकमें

संग्रामविगतस्पृहः ॥ गंधर्वप्रमदासक्तो द्वितीयांशे नरो भवेत् ॥ १६ ॥ धर्मिष्ठः सततव्याधिः सर्वसारज्ञ एव च ॥ सर्वज्ञो देवताभक्तस्तृतीयांशे च जायते ॥ १७ ॥ चतुर्थांशेऽभिजातस्तु दीक्षितो गुरुभक्तिमान् ॥ यत्किंचिद्भूमिगं वस्तु तत्सर्वं लभते च सः ॥१८॥ सर्वलक्षणसंपन्नो राजा भवति विश्रुतः॥ दीर्घायुर्बहुपुत्रश्च जायते पंचमांशके ॥ १९ ॥ स्त्रीनिर्जितः शुभैर्हीनो बहुभाषी नपुंसकः॥अर्थध्वंसःप्रमादी च षष्ठांशे जायते नरः॥३२०॥विक्रांतो मतिमाञ्छूरः संग्रामेष्वपराजितः ॥ महोत्साही च संतोषी जायते सप्तमांशके॥२१॥कृतघ्नो मत्सरी क्रूरःक्लेशभोक्ता बहुप्रजः॥फलकालपरित्यागी जायते चाष्टमांशके॥२२॥

जन्मे तो ऐश्वर्यवान्, भोगी, युद्धकी इच्छारहित, गायन करनेवाला, स्त्रीविषे आसक्त होवे ॥ १६ ॥ तीसरे नवांशकमें जन्मनेवाला नर धर्मिष्ठ, निरन्तर व्याधिवाला, सम्पूर्ण सारको जाननेवाला, सर्वज्ञ, देवताका भक्त होवे ॥ १७ ॥ चौथे नवांशकमें जन्मे तो वह दीक्षित (यज्ञादिकारक) गुरुकी भक्तिवाला और भूमिमें गडे हुए धनको प्राप्त करनेवाला होता है॥ १८ ॥ पांचवें नवांशकमें जन्मे तो वह दीर्घ आयुवाला, बहुत पुत्रोंवाला, सब लक्षणोंसे सम्पन्न प्रसिद्ध राजा होता है ॥ १९ ॥ छठे नवांशकमें जन्मे तो वह स्त्रीके वशमें रहनेवाला, शुभ कामोंसे रहित, बहुत बोलनेवाला, नपुंसक, द्रव्यको नष्ट करनेवाला, प्रमादी होता है ॥ ३२० ॥ सातवें नवांशकमें जन्म लेवे तो वह बलवान्, बुद्धिमान्, शूर वीर, युद्धमें जीतनेवाला, महाउत्साही, संतोषी होता है ॥ २१ ॥ आठवें नवांशकमें जन्मे तो वह कृतघ्न ईर्षावाला, पापी, क्लेशभोगी, बहुत सन्तानवाला, फल (कार्य-

क्रियासु कुशलो दक्षः सुप्रतापी जितेन्द्रियः ॥ भृत्यैश्चावेष्टितो नित्यं जायते नवमेंऽशके ॥ २३ ॥

अथ गणफलम्।

सुंदरो दानशीलश्च मतिमान्सबलः सदा॥ अल्पभोगी महाप्राज्ञो नरो देवगणोद्भवः॥२४॥ मानी धनी विशालाक्षो लक्ष्यवेधी धनुर्धरः॥ गौरः पौरजनाह्लादी नरो मर्त्यगणोद्भवः ॥ २५ ॥ उन्मादी भीषणाकारः सर्वदा कलिवल्लभः ॥ नरो दुःखी सदा जातः प्रमेही राक्षसे गणे ॥ २६ ॥

अथ ऋतुफलम्।

महोद्यमी मनस्वी च तेजस्वी बहुकार्यकृत्॥नानादेशरसाभिज्ञो वसन्तर्तुभवो नरः ॥२७॥ बह्वारंभो जित-

सिद्धिके) कालको त्यागनेवाला होता है ॥ २२ ॥ जो जन्मराशिके नवमांशकमें उत्पन्न होवे तो वह क्रियाओंमें कुशल, चतुर, सुन्दर प्रतापवाला, जितेंद्रिय, भृत्य (नौकरों) वाला हो ॥ २३ ॥ इति जन्मराशिनवांशकफलम् ॥

देवगणमें उत्पन्न होनेवाला नर सुन्दर, दानी, बुद्धिमान् सदा बलवन्त, अल्प भोगी, महापंडित होता है ॥ २४ ॥ मनुष्य गणमें उत्पन्न होनेवाला नर मानी, धनी, विशाल नेत्रोंवाला, लक्ष्य (निसाना) को बांधनेवाला, धनुषधारी होता है। गौरवर्ण, पुरके जनोंको आनन्द करानेवाला होता है ॥ २५ ॥ राक्षस गणमें जन्मनेवाला नर उन्मादी, भयंकर, सदा कलह करनेवाला, दुःखी और प्रमेह रोगवाला होता है ॥ २६ ॥ इति गणफलम्।

वसन्तऋतुमें जन्मनेवाला नर महा उद्यमी, बुद्धिमान्, तेजस्वी, बहुत कार्य करनेवाला, अनेक देशोंके व्यवहारको जाननेवाला होता है ॥ २७ ॥ ग्रीष्म ऋतुमें जन्मे तो वह बहुत आरंभ कर्त्ता,क्रोधहीन,

क्रोधः क्षुधालुः कामुको नरः ॥ दीर्घः शूरो बुद्धिमांश्च ग्रीष्मे जातः सदा शुचिः ॥२८॥ गुणवान्भोगयुक्तश्च राजपूज्यो जितेन्द्रियः॥कुशलः सत्यवादी च वर्षर्तूत्थो नरो भवेत् ॥ २९ ॥ वाणिज्यकृषिवृत्तिश्च धनधान्यसमृद्धिमान् ॥ तेजस्वी बहुमान्यश्च शरज्जातो नरो मतः॥३३०॥ बहुवीर्यो नीतिविज्ञो ग्रामयुक्तः सदोद्यमी ॥ ह्रस्वपादगलो भीरुर्हेमंते जायते नरः॥३१॥ रूपयौवनसंपन्नो दीर्घसूत्रो मदोत्कटः ॥ क्षुधायुक्तः कामुकश्च शिशिरर्तुभवो नरः ॥ ३२ ॥

अथ पक्षफलम् ।

पूर्णचन्द्रनिभः श्रीमानुद्यमी बहुशास्त्रवित् ॥ कुशलो

भूखवाला, कामी, लंबा, शूर वीर, बुद्धिमान् होता है, सदा पवित्र रहता है ॥ २८ ॥ गुणवान्, भोगसे युक्त,राजपूज्य, जितेंद्रिय, कुशल, सत्यवादी ऐसा नर वर्षाऋतुमें जन्मनेवाला होता है ॥ २९॥ वणिज तथा खेती करनेवाला, धन धान्यकी समृद्धिवाला, तेजस्वी, बहुत मान्य ऐसा नर शरदृतुमें जन्मनेवाला होता है ॥ ३३० ॥ बहुत बलवान्, नीति जाननेवाला, ग्रामयुक्त, सदा उद्यमी, छोटे पैरोंवाला छोटी ग्रीवावाला, डरपोक ऐसा नर हेमंतऋतुमें जन्मनेसे होता है ॥ ३१ ॥ शिशिर ऋतुमें जन्मनेवाला नर रूपयौवनसे संयुक्त, दीर्घसूत्री (देरीमें काम करनेवाला), मदोत्कट, क्षुधायुक्त, कामी होता है ॥ ३२ ॥ इति ऋतुफलम् ॥

शुक्लपक्षमें जन्मनेवाला नर पूर्णचन्द्रमाके समान कांतिवाला, श्रीमान्, उद्यमी, बहुत शास्त्रोंको जाननेवाला, कुशल, ज्ञानसे युक्त

ज्ञानसंपन्नः शुक्लपक्षभवो नरः ॥ ३३ ॥ निष्ठुरो दुर्मुखो मूर्खः स्त्रीद्वेषी च जनोज्झितः ॥ जायते च परप्रेष्यः कृष्णपक्षोद्भवो नरः ॥ ३४ ॥

अथोच्चगतरव्यादिग्रहफलम् ।

महाधनी महोग्रश्च तुंगस्थे भास्करे नरः ॥ सुभूषणो महाभोगीधनी तुंगे निशाकरे।३५।उच्चे भौमे सुपुत्रश्च तेजस्वी गर्वितो नरः॥मेधावी दृढवाक्यश्च बलाढ्यश्च बुधे भवेत् ॥३६॥ राजपूज्यश्च विख्यातो विद्वानार्यो गुरौ नरः ॥ स्वोच्चे शुक्रे विलासी च हास्यगीतादिसं-युतः॥३७॥स्वोच्चगे रविपुत्रे च चक्रवर्ती धनी भवेत् ॥ राजलब्धनियोगश्च राहुः शनिसमो मतः ॥ ३८ ॥

हो ॥ ३३ ॥ कृष्णपक्षमें जन्मनेवाला कठोर, दुर्मुख, मूर्ख स्त्रीसे वैर करनेवाला, जनोंसे त्यागा हुआ पराई नौकरी करनेवाला हो ॥३४॥ इति पक्षफलम् ॥

सूर्य उच्चका होवे तो महाधनी,महा उग्र हो और चन्द्रमा उच्चका हो तो सुन्दर आभूषणोंवाला, भोगी, धनी होवे ॥ ३५ ॥ मंगल उच्चका हो तो सुन्दर पुत्रोंवाला, तेजस्वी, अभिमानी नर होवे । बुध उच्चका हो तो बुद्धिमान्, दृढवाक्यवाला, बलाढ्य होता है ॥३६ ॥ बृहस्पति उच्चका हो तो राजपूज्य, विख्यात, विद्वान्, श्रेष्ठजन होवे । शुक्र उच्चका होवे तो विलासी (भोगी) हास्य, गीत आदिकोंमें लगा रहता है ॥ ३७ ॥ शनि उच्चका हो तो चक्रवर्ती राजा, धनी वा राजासे लब्ध अधिकारवाला हो । राहुका फल शनिके समान जानना ॥ ३८ ॥ इति रव्यादीनां स्वोच्चगतफलम् ॥

अथ मूलत्रिकोणगतग्रहफलम् ।

धनी सुखी कार्यविज्ञो रवौ मूलत्रिकोणगे ॥ चन्द्रे
धनी सुभोक्ता च भौमे शूरोऽदयः खलः ॥ ३९ ॥
बुधे त्रिकोणे विज्ञश्च विनोदी विजयी नरः ॥ गुरौ
ग्रामपुरादीनां मठस्य च पतिर्भवेत् ॥ ३४० ॥
शुक्रे त्रिकोणे सुज्ञश्च सुखयुक्तो महोत्तमः ॥ मंदे
नरो धनैः पूर्णो महाशूरः कुलंधरः ॥ ४१ ॥
सिंहवृषाजप्रमदाकार्मुकभृत्तौलिकुंभधराः ॥ मूलत्रि-
कोणानि रविग्लौभौमज्ञेज्यशुक्रसौरीणाम् ॥ ४२ ॥

अथ स्वगृहस्थग्रहफलम् ।

स्वगृहस्थे रवौ लोके महोग्रश्च महोद्यमी ॥ चन्द्रे धर्मर-
तःसाधुर्मनस्वी रूपवानपि॥४३॥स्वगृहस्थे कुजे मल्लो

सूर्य मूलत्रिकोणमें हो तो धनी, सुखी, कार्यको जाननेवाला होवे। चन्द्रमा मूलत्रिकोणमें हो तो धनी, भोगी होवे। मंगल हो तो शूर वीर तथा दुष्टजन हो ॥ ३९ ॥ बुध मूलत्रिकोणमें हो तो पंडित, आनन्दयुक्त, विजयी मनुष्य हो, बृहस्पति हो तो ग्राम, पुर, मठ इन्होंका पति हो ॥ ३४०॥ शुक्र त्रिकोणमें हो तो पंडित, सुखयुक्त, महान्, उत्तम जन हो, शनि मूलत्रिकोणमें हो तो धनोंसे परिपूर्ण, महाशूर वीर, कुलको बढानेवाला हो ॥ ४१ ॥

अथ मूलत्रिकोणलक्षणम् । सिंह, वृष, मेष, कन्या, धन, तुला, कुम्भ राशि सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि इन ग्रहोंकी यथाक्रमसे मूलत्रिकोण कहलाती है ॥ ४२ ॥ इति मूलत्रि-कोणफलम् ॥

सूर्य अपने घरमें बैठा हो तो लोकमें महाउग्र, महाउद्यमी हो। चन्द्रमा हो तो धर्ममें रत, साधु, मनस्वी, रूपवान् हो ॥४३ ॥ मंगल

धनवानपराजितः॥बुधे नानाकलाभिज्ञः पंडितो धनवान्नरः ॥४४॥धनी काव्यश्रुतिज्ञश्च सुचेष्टः स्वगृहे गुरौ ॥ स्फीतः कृषीवलः शुक्रे शनौ मान्यः खलो नरः ॥ ४५ ॥

अथ मित्रगृहस्थग्रहफलम् ।

सूर्ये मित्रगृहे ख्यातः शास्त्रज्ञः स्थिरसौहृदः ॥ चन्द्रे नरो भाग्ययुक्तश्चतुरो धनवानपि॥४६॥ भौमे शस्त्रोपजीवी च बुधे रूपधनान्वितः॥गुरौ मित्रगृहे पूज्यः सतां सत्कर्मसंयुतः ॥४७॥ शुक्रे मित्रगृहे लोके धनी बंधुजनप्रियः ॥ शनौ परान्नभोजी च कुकर्मनिरतो नरः ॥ ४८ ॥

अपने घरमें हो तो मल्ल, धनवान्, अपराजित (नहीं हारनेवाला) हो । बुध हो तो अनेक कला जाननेवाला, धनवान्, पंडित जन हो ॥४४॥ बृहस्पति अपने घरमें हो तो धनी, कवि, वेदवेत्ता, सुंदर चेष्टावाला हो। शुक्र हो तो उज्ज्वल स्वरूपवाला, कृषीवल (खेती करनेवाला) हो। शनि हो तो मान्य,दुष्टजन होता है ॥ ४५ ॥ इति स्वगृहस्थग्रहफलम् ॥

सूर्य मित्रके घरमें हो तो प्रसिद्ध, शास्त्रज्ञ, स्थिरमित्रतावाला हो । चंद्रमा हो तो भाग्ययुक्त, चतुर, धनवान् हो ॥ ४६ ॥ मंगल हो तो शस्त्रकी आजीविकावाला, बुध हो तो रूप धनसे युक्त हो । बृहस्पति मित्रके घरमें हो तो श्रेष्ठ जनोंका पूज्य,शुभ कर्म करनेवाला हो॥४७॥ शुक्र मित्रके घरमें हो तो लोकमें धनी बंधुजनोंका प्रिय हो, शनि मित्र घरमें हो तो पराये अन्नको भोजन करनेवाला, कुकर्मी जन हो ॥ ४८ ॥ इति मित्रराशिस्थरव्यादिफलम् ॥

अथ नीचराशिस्थरव्यादिफलम् ।

नीचे सूर्ये भवेत्प्रेष्यो बंधुभिर्वर्जितो नरः ॥ चंद्रे रोगी स्वल्पपुण्यो दुर्भगो नीचराशिगे ॥ ४९ ॥ नीचे भौमे भवेन्नीचः कुत्सितो व्यसनातुरः॥बुधे क्षुद्रो बंधुवैरी गुरौ दीनो मलान्वितः ॥३५०॥ शुक्रे नीचे नष्टदारः स्वतंत्रः शीलवर्जितः॥शनौ काणो दरिद्रश्च गताचारोऽतिगर्हितः ॥ ५१ ॥

अथ शत्रुगृहस्थग्रहफलम् ।

सूर्ये रिपुगृहे निःस्वो विषयैः पीडितो नरः॥चंद्रे हृदयरोगी च भौमे जायाजडोऽधनः॥५२॥बुधे रिपुगृहे मूर्खो वाग्धनो दुःखपीडितः ॥ जीवेऽरिभे नरः क्लीबो नाप्तवृत्तिर्बुभुक्षितः॥५३॥शुक्रे शत्रुगृहे भृत्यः कुबुद्धि-

सूर्य नीचका हो तो सेवा करनेवाला, भाइयोंसे त्यागा हुआ रहै । चंद्रमा नीचराशिका होवे तो रोगी,स्वल्प पुण्यवाला, कंगाल हो॥४९॥ मंगल नीचका हो तो नीच, कुत्सित, व्यसनवाला हो । बुध हो तो तुच्छ जन, बंधु जनोंसे वैर करनेवाला हो । बृहस्पति हो तो दीन मलिन रहै ॥ ३५० ॥ शुक्र नीचका हो तो उसकी स्त्री मरै, शीलरहित स्वतंत्र विचरै । शनि नीचका हो तो काणा, दरिद्री हो, आचार रहित अत्यंत निंदित हो ॥ ५१ ॥ इति नीचस्थफलम् ॥

सूर्य शत्रुके घरमें हो तो दरिद्री, विषयोंसे पीडित जन हो।चंद्रमा हो तो हृदयमें रोगवाला हो । मंगल हो तो मूर्खस्त्रीवाला, निर्धन हो॥५२॥ बुध शत्रुके घरमें हो तो मूर्ख, बातोंकाही धनवाला दुःखी हो । बृहस्पति शत्रुके घरमें हो तो नपुंसक हो, आजीविकाहीन, बुभुक्षित हो ॥ ५३ ॥ शुक्र शत्रुके घरमें हो तो भृत्य, कुबुद्धी, दुःखी जन हो । शनि हो

दुःखितो नरः ॥ शनौ व्याध्यर्थशोकेन संतप्तो मलिनो भवेत् ॥ ५४ ॥

अथाश्विन्यादिजन्मनक्षत्रफलम् ।

सुरूपः सुभगो दक्षः स्थूलकायो महाधनी ॥ अश्विनीसम्भवो लोके जायते धनवल्लभः ॥५५॥ अरोगी सत्यवादी च सप्राणश्च दृढव्रतः ॥ भरण्यां जायते लोके स सुखी मतिमानपि ॥ ५६ ॥ कृपणः पापकर्मा च क्षुधालुर्नित्यपीडितः ॥ अकर्म कुरुते नित्यं कृत्तिकासंभवो नरः ॥ ५७ ॥ धनी कृतज्ञो मेधावी नृपमान्यः प्रियंवदः ॥ सत्यवादी सुरूपश्च रोहिणीजो भवेन्नरः ॥ ५८ ॥ चपलश्चतुरो धीरः क्रूरकर्माप्यकर्मकृत् ॥ अहंकारी परद्वेषी मृगे भवति मानवः ॥ ५९ ॥ कृतघ्नो गर्वितो हीनो नरः

तो बीमारी और धनके शोकसे दुःखी और मलिन हो ॥ ५४ ॥

इति शत्रुराशिस्थफलम् ।

अश्विनी नक्षत्रमें जन्मनेवाला नर सुरूप, सुभोगी, स्थूल शरीरवाला, महाधनी हो ॥ ५५॥ भरणी नक्षत्रमें जन्मनेवाला नर रोगरहित सत्यवादी, प्राणोंसहित दृढ नियमवाला हो, सुखी, बुद्धिमान् होता है ॥ ५६ ॥ कृत्तिकाविषे जन्मनेवाला नर कृपण, पापी, भूखवाला, नित्य पीडित, बुरे काम करनेवाला होता है ॥ ५७ ॥ रोहिणी नक्षत्रविषे जन्मनेवाला नर धनी, कृतज्ञ, मेधावी, राजासे मान्य, प्रिय बोलनेवाला, सत्यवादी, सुरूप होता है ॥ ५८ ॥ मृगशिरमें जन्मनेवाला चपल, चतुर, धीर, क्रूर, बुरे काम करनेवाला हो, अहंकारी और द्वेषी हो ॥ ५९ ॥ आर्द्राविषे जन्मनेवाला कृतज्ञ,

पापरतः शठः ॥ आर्द्रानक्षत्रसंजातो धनधान्यविवर्जितः ॥ ३६० ॥ शांतः सुखी च भोगी च सुभगो जनवल्लभः ॥ पुत्रमित्रादिभिर्युक्तो जायते च पुनर्वसौ ॥६१॥ देवधर्मरतो नित्यं बुद्धियुक्तो धनप्रियः॥ पुष्यर्क्षे जायते लोके शांतात्मा सुभगः सुखी ॥६२॥ सर्वभक्षः कृतांतश्च कृतघ्नो वंचकः खलः॥आश्लेषायां नरो जातो भ्रष्टकर्मा च जायते ॥ ६३ ॥ कल्याणं प्रथमे पादे द्वितीये च धनक्षयः॥मातुःपीडा तृतीये च पितुः सार्पे चतुर्थके॥६४॥बहुभृत्यो धनी भोगी पितृभक्तो महोद्यमी ॥ चमूनाथो राजसेवी मघायां जायते नरः॥६५॥विद्यागोधनसंयुक्तो गम्भीरःप्रमदा

अभिमानी, हीन, पापरत, मूर्ख, धनधान्यरहित होता है ॥ ३६० ॥ पुनर्वसुमें जन्मनेवाला शांत, सुखी, भोगी, ऐश्वर्यवान्, जनोंका प्रिय, पुत्र मित्रादिकोंसे युक्त होता है ॥ ६१ ॥ पुष्य नक्षत्रमें जन्मनेवाला नर देवधर्ममें नित्य तत्पर, बुद्धियुक्त, धनप्रिय, शांतचित्तवाला, सुंदर ऐश्वर्यवान्, सुखी होवे ॥ ६२ ॥ आश्लेषा नक्षत्र विषे जन्मनेवाला सब कुछ खानेवाला, कृतांत (दुष्टस्वभाववाला), कृतघ्न, ठग, दुष्ट, भ्रष्टकर्म करनेवाला होता है ॥ ६३ ॥ आश्लेषानक्षत्रके प्रथम चरणमें जन्मे तो कल्याण करै, दूसरे चरणमें जन्मे तो धनको नष्ट करै, तीसरे चरणमें माताको पीडा करै, चौथे चरणमें जन्मे तो पिताको नष्ट करै ॥ ६४ ॥ मघा नक्षत्रमें जन्मे तो बहुत भृत्योंवाला धनी, भोगी, पिताका भक्त, महा उद्यमी हो; सेनाका पति, राजसेवी हो ॥ ६५ ॥ पूर्वाफाल्गुनीमें जन्मे तो विद्या और गौसम्बन्धी

प्रियः ॥ पूर्वाफाल्गुनिजातस्तु सुखी पंडितपूजितः ॥ ६६ ॥ दाता शूरो मृदुर्वक्ता धनुर्वेदार्थपण्डितः ॥ उत्तराफाल्गुनीजातो महायोद्धा जनप्रियः ॥ ६७ ॥ असत्यवचनो दुष्टः सुरापो बन्धुवर्जितः॥हस्ते जातो भवेच्चौरो जायते परदारगः ॥६८॥ पुत्रदारयुतस्तुष्टो धनधान्यसमन्वितः ॥ देवब्राह्मणभक्तश्च चित्रायां जायते नरः ॥६९॥ कोविदो धार्मिकोऽल्पार्थः कृपणः प्रियवल्लभः॥सुखी स्वदेवभक्तश्च स्वातीजातो भवेन्नरः ॥३७०॥अतिलुब्धोऽतिपापी च निष्ठुरः कलहप्रियः॥ विशाखायां नरो जातो वेश्याजनरतो भवेत् ॥७१॥ पुरुषार्थी प्रवासी च बन्धुकार्ये सदोद्यमी॥अनुराधा-

धनसे संयुक्त, गंभीर, स्त्रियोंका प्रिय, सुखी, पंडित जनोंसे पूजित होवे ॥ ६६ ॥ उत्तराफाल्गुनीमें जन्मे तो दाता, शूरवीर, सरल, उत्तम बोलनेवाला, धनुषविद्यामें निपुण, महायोद्धा, सब जनोंको प्रिय हो ॥ ६७ ॥ हस्तनक्षत्रमें जन्मनेवाला असत्यवादी, दुष्ट, मदिरा पीनेवाला, बंधुहीन, चोर, पराई स्त्रीसे रमण करनेवाला होता है ॥६८॥ चित्राविषे जन्मनेवाला नर पुत्र स्त्रीसे संयुक्त, प्रसन्न, धन धान्यसे संयुक्त, देवता और ब्राह्मणोंका भक्त होता है ॥६९॥ स्वातीनक्षत्रमें जन्मनेवाला नर पंडित, धार्मिक, स्वल्प धनवाला, कृपण, स्त्रीसे प्रिय रहनेवाला, सुखी, अपने इष्टदेवका भक्त हो ॥ ३७० ॥ विशाखानक्षत्रमें जन्मनेवाला नर अतिलोभी, पापी, कठोर, कलह करनेवाला, वेश्यासे रमण करनेवाला होता है ॥ ७१ ॥ पुरुषार्थी, परदेशमें रहनेवाला भाईके काममें सदा उद्यमी, सदा प्रसन्न ऐसा नर अनुराधा नक्षत्रमें जन्म-

भवो लोकः सदा हृष्टश्च जायते ॥ ७२ ॥ बहुमित्रः प्रधानश्च विद्यार्थी च विचक्षणः॥ज्येष्ठाजातो धर्मरतो जायते शूद्रपूजितः ॥ ७३ ॥ स्थिरभोगी च मानी च धनवांश्च सुखी भवेत् ॥ तृतीयपादे तुर्ये च मलाद्येऽर्धे परित्यजेत् ॥७४॥ आद्यपादे पितुः पीडा मूले मातुर्द्वितीयके॥ तृतीये धनहानिश्च चतुर्थे सर्वदा सुखम् ॥ ७५ ॥ दृष्टमात्रोपकारी च भाग्यवांश्च जनप्रियः॥ पूर्वाषाढाजातनरःसकलार्थविचक्षणः ॥७६॥बहुमित्रो महाकायो धार्मिको विनयी सुखी॥ उत्तराषाढसंभूतः शूरश्च विजयी रणे॥७७॥कृतज्ञो विनयी दाता सदा रोगविवर्जितः ॥ श्रीमांश्च बहुसंतानः श्रवणे जायते

नेवाला होता है ॥ ७२ ॥ बहुत मित्रोंवाला, मुख्यजन, विद्याका प्रयोजनवाला, पंडित, धर्ममें तत्पर, शूद्रजनोंसे पूजित ऐसा नर ज्येष्ठानक्षत्रमें जन्मनेवाला होता है ॥७३॥ स्थिर भोगी, मानी, धनवान्, सुखी ऐसा नर मूलनक्षत्रके तीसरे चरणमें या चौथे चरणमें जन्मनेवाला होता है, मूलके पूर्वार्द्धको त्याग दे (निषेध है)॥ ७४ ॥ मूलके प्रथम चरणमें जन्मे तो पिताको पीडा हो, दूसरेमें जन्मे तो माताको पीडा हो, तीसरेमें जन्मे तो धनकी हानि करै, चौथेमें सब प्रकारका सुख हो ॥७५॥ पूर्वाषाढामें जन्मनेवाला नर देखने मात्रसे उपकार करै, भाग्यवान्, सब जनोंका प्रिय हो, सब कामोंमें चतुर हो ॥ ७६ ॥ उत्तराषाढामें जन्मनेवाला नर बहुत मित्रोंवाला, महाशरीरवाला, धार्मिक, विनयी, सुखी,शूरवीर, रणमें विजयी होवे॥७७॥ श्रवणमें जन्मनेवाला कृतज्ञ, विनयी, दानी, सदा रोगसे वर्जित,लक्ष्मी-

नरः ॥७८॥ गीतप्रियो बन्धुमान्यो हेमरत्नैरलंकृतः धनिष्ठायां नरो जातश्चैकः शतपतिर्भवेत् ॥ ७९ ॥ कृपणो धनपूर्णश्च परदारोपसेवकः ॥ मानवः शततारायां विदेशगमने रतः ॥३८०॥ वक्ता सुखी प्रजायुक्तो बहुनिद्रो निरर्थकः ॥ पूर्वाभाद्रपदाजातो नरो भवति दुःखितः ॥ ८१ ॥ गौरः समस्तधर्मज्ञः शत्रुघाती च पामरः ॥ उत्तराभाद्रनक्षत्रजातः साहसिको भवेत् ॥ ८२ ॥ सम्पूर्णाङ्गः शुचिर्दक्षः साधुः शूरो विचक्षणः ॥ रेवतीसम्भवो लोके धनधान्यैरलंकृतः ॥ ८३ ॥ निर्वेधे सौम्यसंयुक्ते नक्षत्रे शोभनं फलम्॥

वान्, और बहुत संतानवाला हो ॥ ७८ ॥ धनिष्ठामें जन्मनेवाला गीतमें प्रिय, बंधुजनोंसे मान्य, सुवर्ण रत्नोंसे विभूषित, तथा अकेलाही सैकडोंका पति होवे ॥७९॥ शतभिषामें जन्मनेवाला नर कृपण, धनसे पूर्ण, पराई स्त्रीसे रमण करनेवाला, विदेशमें गमन करनेवाला होता है ॥३८०॥ पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रमें जन्मनेवाला नर (अच्छे प्रकारसे) कहनेवाला, सुखी, संतानसे युक्त, बहुत नींदवाला, निरर्थक रहनेवाला, दुःखित होवे ॥ ८१ ॥ उत्तराभाद्रपद नक्षत्रमें जन्मनेवाला गौरवर्ण, सब धर्मको जाननेवाला, शत्रुनाशक, तुच्छजन, हठ करनेवाला होता है ॥८२॥ रेवती नक्षत्रमें जन्मनेवाला नर संपूर्ण (उत्तम) अंगोंवाला, पवित्र, चतुर, साधुजन, शूरवीर, पंडित, धन धान्यसे विभूषित होता है ॥ ८३ ॥ वेधरहित अथवा शुभग्रहसे संयुक्त हुए नक्षत्रविषे जन्मे तो शुभफल हो, जो वेधसहित और क्रूर ग्रहसे

विपरीतफलं तस्मै सवेध क्रूरपीडिते ॥ ३८४ ॥
इति जन्मनक्षत्रफलम् ॥ इति श्रीसर्वशास्त्रविशारदश्रीकाशीनाथकृतौ जातकलग्नचन्द्रिकायां प्रथमः परिच्छेदः ॥ १ ॥

अत्र द्वितीयपरिच्छेदः ।

तत्र लग्नादिद्वादशभावस्थरविफलम् ।

लग्ने सूर्येऽतितीव्रश्च चंचलात्मा स्मरातुरः॥ नेत्ररोगी पीडितांगो जायते चारुणाकृतिः ॥ १ ॥ सूर्ये धने विवादी च बहुशत्रुश्च निर्धनः ॥ परापवादी सेर्ष्यश्च कृतघ्नश्च नरो भवेत् ॥२॥ तृतीयगे दिवानाथे प्रसिद्धो रोगवर्जितः ॥ भूपतिश्च दयालुश्च सुशीलः स भवेन्नरः ॥३॥ सूर्ये चतुर्थे दुर्बुद्धिःकृशांगःसुखवर्जितः ॥ अप्रभावो निष्ठुरश्च दुष्टसंगी भवेन्नरः॥४॥पञ्चमेऽर्के

पीडित नक्षत्र हो तो विपरीत (अशुभ) फल हो ॥ ३८४ ॥ इति जन्मनक्षत्रफलम् ॥

इति श्रीवेरीपुरनिवासी-गौडवंशोद्भवद्विजशालग्रामात्मजपण्डितवसतिराम-विरचितलग्नचंद्रिकाभाषाटीकायां प्रथमः परिच्छेदः ॥ १ ॥

लग्नमें सूर्य हो तो अत्यंत तेज स्वभाववाला, चंचल मनवाला, कामदेवसे पीडित होता है; नेत्ररोगी, पीडित शरीरवाला, लाल आकृतिवाला होवे ॥ १ ॥ दूसरे घरमें सूर्य हो तो विवादी, बहुत शत्रुओंवाला, निर्धन, परसे विवाद करनेवाला, कृतघ्न होता है ॥ २ ॥ तीसरे घरमें सूर्य हो तो प्रसिद्ध, रोगरहित, राजा, दयालु तथा सुंदर स्वभाववाला नर होता है ॥ ३ ॥ चौथे घरमें सूर्य होवे तो दुष्ट बुद्धिवाला, कृशांग, सुखरहित होता है, प्रभावरहित, कठोर तथा दुष्ट जनोंकी संगतिमें रहे ॥ ४ ॥ पांचवें घरमें सूर्य हो तो क्रोधयुक्त,

कोपयुक्तः कुरूपः शीलवर्जितः ॥ कुसंगलब्धवृत्तिश्च गतमांसश्च जायते ॥५॥ षष्ठ सूर्ये गतारिश्च ख्यातमानः सुखी शुचिः ॥ शूरोऽनुरागी भूपालसंमतश्च भवेन्नरः॥६॥सप्तमेऽर्के कुदारश्च दुष्टप्रीतोऽल्पपुत्रकः॥ गुह्यरोगी सपापश्च जातको हि प्रजायते ॥ ७ ॥अष्टमस्थे दिवानाथे कृतघ्नो हीनमानसः ॥ शत्रुदग्धो वृथागामी बन्धुहीनश्च जायते ॥८॥ नवमस्थे रवौ जातः कुकर्मा भाग्यवर्जितः ॥ विद्याविवेकहीनश्च कुशीलश्च प्रजायते॥९॥ दशमेऽर्के बन्धुहीनःकुकर्मा शीलवर्जितः॥स्त्रीचञ्चलोर्हीनतेजा हीनकोशश्चजायते ॥१०॥ लाभे सूर्ये समुत्पन्नो नानालाभसमन्वितः ॥ सात्त्विको धार्मिको मानी रूपवानपि जायते॥११॥

कुरूप, शीलरहित, मांसहीन होताहै ॥ ५ ॥ छठे घरमें सूर्य हो तो शत्रुरहित, विख्यात,सुखी,पवित्र, शूरवीर, अनुरागी, राजाका संमत (माना हुआ), होता है ॥ ६ ॥ सातवें घरमें सूर्य हो तो कुत्सित स्त्रीवाला, दुष्टोंसे प्रीति करनेवाला, अल्प पुत्रवाला, गुदाके रोगवाला पापी होता है ॥ ७ ॥ आठवें घरमें सूर्य हो तो कृतघ्न, हीन मनवाला, शत्रुओं करके दग्ध किया हुआ, वृथागमन करनेवाला, बंधुओंसे हीन होता है ॥ ८ ॥ नवमें सूर्य हो तो कुकर्मी, भाग्यहीन, विद्याविवेकहीन, दुष्ट स्वभाववाला हो ॥ ९ ॥ दशवें घरमें सूर्य हो तो बन्धुओंसे हीन हो, कुकर्मी, शीलरहित, स्त्रियोंमें चंचल, तेजहीन, द्रव्यहीन होता है ॥ १० ॥ ग्यारहवें घरमें सूर्य हो तो जन्मनेवाला नर अनेक लाभोंसे संयुक्त, सत्त्वगुणी, धार्मिक, मानी, रूपवान् होता

व्यये सूर्ये नरो रोगी सत्त्वहीनो वृथाटनः ॥ असद्व्ययी पुत्रदारभक्तिहीनश्च जायते ॥ १२ ॥

अथ चन्द्रद्वादशभावफलानि ।

लग्ने चन्द्रे जडः शुद्धः प्रसन्नो धनपूरितः॥ स्त्रीवल्लभो धार्मिकश्च कृतघ्नश्च नरो भवेत् ॥ १३ ॥ चन्द्रे धने धनैः पूर्णो नृपपूज्यो गुणान्वितः ॥ शास्त्रानुरागी सुभगो जनप्रीतश्च जायते॥१४॥ तृतीयस्थे निशानाथे धनविद्यादिभिर्युतः ॥ कफाधिकः कामुकश्च वंशमुख्योऽपि जायते॥ १५ ॥ चतुर्थस्थे निशानाथे पुत्रदारसमन्वितः ॥ धनी सुखी यशस्वी च विद्यावानपि स स्मृतः॥१६॥सुते चन्द्रे सुताढ्यश्च रोगी कामी भयानकः ॥ कृत्रिमैःपौरुषैर्युक्तो विनयी च भवेन्नरः ॥ १७ ॥ षष्ठे चन्द्रे वित्तहीनो मृदुकायो-

है ॥ ११ ॥ बारहवें घरमें सूर्य हो तो रोगी, बलहीन, वृथागमन करनेवाला, वृथा खर्च करनेवाला, भक्तिहीन होता है ॥ १२ ॥ इति सूर्यद्वादशभावफलानि ।

लग्नमें चन्द्रमा हो तो जड, शुद्ध, प्रसन्न, धनसे पूरित, स्त्रीका पियारा, धार्मिक, कृतघ्न होता है ॥ १३ ॥ धनस्थानमें चन्द्रमा हो तो धनसे परिपूर्ण, राजासे पूज्य, गुणयुक्त, शास्त्रानुरागी, सुंदर जनोंसे प्रीति करनेवाला हो ॥१४॥ तीसरे घरमें चंद्रमा हो तो धन और विद्यादिकोंसे युक्त हो, अधिक कफवाला, कामी, वंशमें मुख्य होता है ॥ १५ ॥ चौथे घरमें चन्द्रमा हो तो पुत्र और स्त्रीसे युक्त हो, धनी, सुखी, यशस्वी, विद्यावान् भी होता है ॥ १६ ॥ पांचवें घरमें चन्द्रमा हो तो पुत्रयुक्त, रोगी, कामी, भयानक हो, कृत्रिम पुरुषार्थोंसे युक्त, विनयवाला नर होता है ॥ १७॥ छठे घरमें

ऽतिलालसः ॥ मन्दाग्निस्तीक्ष्णदृष्टिश्च पापबुद्धिर्भवेन्नरः ॥ १८ ॥ चन्द्रे च सप्तमे जातो दुःखी कष्टी च वञ्चकः ॥ कृपणो बहुवैरी च जायते पारदारिकः ॥ १९ ॥ अष्टमे तारकानाथो दीनोऽल्पायुः सकष्टकः॥प्रगल्भश्च कृशांगश्च पापबुद्धिर्भवेन्नरः॥२०॥ धर्मे चन्द्रे चारुकांतिः स्वधर्मनिरतः सदा॥वीतरोगः सतां श्लाघ्यः पापहीनश्च जायते॥२१॥ कर्मस्थाने सुधारश्मौ बहुभाग्यो महाधनी ॥ मनस्वी च मनोज्ञश्च राजमान्यश्च जायते।२२।लाभे चन्द्रे लाभयुतः प्रगल्भः सुभगो नरः॥ सुमार्गगामी लज्जालुःप्रतापी भाग्यवान् भवेत्॥२३॥व्यये चन्द्रे पापबुद्धिर्बहुभक्षी

चन्द्रमा हो तो धनहीन, कोमल शरीरवाला, अत्यन्त लालची, मन्दाग्निवाला, तीक्ष्ण दृष्टिवाला, पापबुद्धिवाला हो ॥ १८ ॥ सातवें चंद्रमा हो तो दुःखी, कष्टी, ठग, कृपण, बहुत शत्रुओंवाला, पराई स्त्रीसे रमण करनेवाला हो ॥ १९ ॥ आठवें घरमें चन्द्रमा हो तो दीन (गरीब), अल्प आयुवाला, कष्टवाला, प्रगल्भ (भरखम), दुबला, पापबुद्धिवाला हो ॥ २० ॥ नववें घरमें चन्द्रमा हो तो उत्तम कांतिवाला, सदा अपने धर्ममें रत, रोगरहित, श्रेष्ठ जनोंसे श्लाघ्य पापहीन हो ॥ २१ ॥ दशवें घरमें चन्द्रमा हो तो बहुत भाग्यवाला, महाधनी, मनस्वी, मनोहर, राजमान्य हो ॥ २२ ॥ ग्यारहवें घरमें चन्द्रमा हो तो लाभयुक्त, प्रगल्भ (भरखम), ऐश्वर्यवान्, सुमार्गगामी, लज्जावाला, प्रतापी, भाग्यवान् होता है ॥२३॥ बारहवें घरमें चन्द्रमा हो तो पापबुद्धिवाला, बहुत खानेवाला, हारनेवाला,

पराजितः ॥ कुलाधमो मद्यपश्च विकारी जातको भवेत् ॥ २४ ॥

अथ लग्नादिद्वादशभावस्थकुजफलम् ।

भौमे लग्ने कुरूपश्च रोगी बन्धुविवर्जितः।असत्य-वादी निर्द्रव्यो जायते पारदारिकः ॥ २५ ॥ धने कुजे धनैर्हीनःक्रियाहीनश्च जायते ॥ दीर्घसूत्री सत्यवादी पुत्रवानपि मानवः ॥२६॥ तृतीयगे कुजे जातः प्रतापी शीलसंयुतः ॥ रणे शूरो राजमान्यो भुवि ख्यातश्च जायते ॥ २७ ॥ चतुर्थे भूसुते कृष्णः पित्ताधिक्योऽरिनिर्जितः ॥ वृथाटनो हीन-पुत्रो महाकामी च जायते॥ २८ ॥ पञ्चमस्थे धरा-सूनौ कुसंतानः सदारुजः॥ बन्धुवर्गे विरक्तश्च नरो बुद्धिविवर्जितः ॥२९॥ षष्ठे भौमे शत्रुहीनो नानार्थैः

कुलमें अधम, मदिरा पीनेवाला, विकारी हो ॥ २४ ॥ इति लग्नादि-द्वादशभावस्थचन्द्रफलम् ।

मंगल लग्नमें हो तो कुरूप, रोगी, बंधुहीन, झूठ बोलनेवाला, निर्धन, अन्य स्त्रीसे रमण करनेवाला हो ॥२५॥ धनस्थानमें मंगल हो तो धनहीन, क्रियाहीन, दीर्घसूत्री, सत्य बोलनेवाला, पुत्रवान् हो ॥ २६ ॥ तीसरे घरमें मंगल हो तो प्रतापी, शीलयुक्त, युद्धमें शूर, वीर, राजमान्य, पृथ्वीपर विख्यात होता है ॥ २७ ॥ चौथे घरमें मंगल हो तो काला वर्णवाला, अधिक पित्तवाला, शत्रुओंसे हाराहुआ, वृथागमन करनेवाला, पुत्रहीन, महाकामी होता है ॥ २८ ॥ पांचवें घरमें मंगल हो तो नेष्ट सन्तानवाला, सदारोगी, बन्धुजनोंमें विरक्त, बुद्धिरहित जन होता है ॥ २९ ॥ छठे घरमें मंगल हो तो

परिपूरितः॥स्त्रीलालसः पुष्टदेहः शुभचित्तश्च जायते ॥३०॥भूमिपुत्रे सप्तमगे रुधिराक्तोऽपि कोपवान् ॥ नीचसेवी वञ्चकश्च निर्गुणोऽपि भवेन्नरः॥३१॥अष्टमे मंगले कुष्ठी स्वल्पायुः शत्रुपीडितः॥अल्पद्रव्यः सरोगश्च निर्गुणोऽपि हि जायते ॥३२॥ धर्मस्थे धरणीपुत्रे कुकर्मा गतपौरुषः॥नीचानुरागी क्रूरश्च सकष्टश्च प्रजायते ॥३३॥ कर्मभावे महीपुत्रे शुभकर्मा शुभान्वितः॥सुपुत्री स्यात्सुखी शूरो गर्विष्ठोऽपि भवेन्नरः ॥३४॥ लाभे भौमे भूरिलाभो नानापापान्नभक्षकः॥ नेत्ररोगी भूपमान्यो देवद्विजरतो नरः ॥३५॥ असद्व्ययी व्यये भौमे नास्तिको निष्ठुरः शठः॥ बहुवैरी विदेशे च सदा गच्छति मानवः ॥ ३६ ॥

शत्रुरहित, अनेक धनोंसे परिपूरित, स्त्रीकी लालसावाला, पुष्ट शरीरवाला, शुभ चित्तवाला होता है ॥ ३० ॥ मंगल सातवें घरमें हो तो रुधिरसे भरा हुआ, क्रोधी, नीच जनोंकी सेवा करनेवाला, ठग, निर्गुण मनुष्य होता है ॥ ३१ ॥ आठवें मंगल हो तो कुष्ठी, स्वल्प आयुवाला, शत्रुसे पीडित, अल्प द्रव्यवाला, रोगी और निर्गुण हो ॥३२॥ नववें घरमें मंगल हो तो कुकर्मी, पुरुषार्थरहित, नीच जनोंका स्नेही, क्रूर, कष्टसहित रहता है ॥ ३३ ॥ दशवें घरमें मंगल हो तो शुभ कर्मवाला, आनंदयुक्त, सुंदर पुत्रोंवाला; सुखी, शूर वीर, अभिमानी हो ॥ ३४ ॥ ग्यारहवें घरमें मंगल हो तो बहुत लाभ हो, अनेक प्रकारके पापान्नको भक्षण करे, नेत्ररोगी, राजमान्य, देवता और ब्राह्मणकी भक्तिवाला हो ॥ ३५ ॥ बारहवें घरमें मंगल हो तो बुरे काममें द्रव्य खर्च करनेवाला, नास्तिक, कठोर, मूर्ख, बहुतोंका वैरी, सदा परदेशमें गमन करे ॥ ३६ ॥ इति तन्वादिभावगतभौमफलम् ॥

अथ तन्वादिभावगतबुधफलम् ।

लग्ने बुधे च गीतज्ञो निष्पापो भूपपूजितः॥रूपज्ञानयशोयुक्तःप्रगल्भो मानवो भवेत्॥३७॥धनभावे चंद्रपुत्रे धनधान्यादिपूरितः॥शुभकर्मा सुखी नित्यंराजपूज्यश्च जायते॥३८॥तृतीयस्थे बुधे जातः प्रशस्तो बन्धुमानितः॥धर्मध्वजी यशस्वीच गुरुदेवार्चको भवेत्॥३९॥ चतुर्थे चंद्रपुत्रे च बहुभृत्ययशोन्वितः॥पटुवाक्यो भाग्ययुक्तःसत्यवादी च जायते॥४०॥पञ्चमे रोहिणीपुत्रे पुत्रपौत्रसमन्वितः॥सुबुद्धिःसत्त्वसम्पन्नःसुखी भवति मानवः॥४१॥षष्ठे बुधे नृशंसश्च विरोधी सर्वबंधुषु॥ ईर्षाधिकःकामपरोविद्वानपि भवेन्नरः॥४२॥सप्तमस्थे सोमपुत्रे रूपविद्याधिको नरः॥सुशीलः कामशास्त्रज्ञो

लग्नमें बुध हो तो गायन विद्या जाननेवाला, पापरहित, राजासे पूजित, रूपवान् और यशसे संयुक्त भरखम हो ॥३७॥ दूसरे घरमें बुध हो तो धन धान्यसे भरपूर, शुभ कर्म करनेवाला, नित्य सुखी, राजपूज्य होवे ॥ ३८ ॥ तीसरे घरमें बुध हो तो श्रेष्ठजन, बन्धुओंसे मान्य, धर्मकी ध्वजारूप, यशवाला, गुरु और देवताका पूजक हो ॥ ३९ ॥ चौथे घरमें बुध हो तो बहुत भृत्योंवाला, यशयुक्त, अच्छा बोलनेवाला, भाग्ययुक्त, सत्य बोलनेवाला हो ॥ ४० ॥ पांचवें घरमें बुध हो तो पुत्र पौत्रादिकोंसे युक्त हो, सुन्दर बुद्धिवाला, बलयुक्त सुखी मनुष्य हो ॥ ४१ ॥ छठे घरमें बुध हो तो जन्मनेवाला नर क्रूर हो, सब बंधुओंमें विरोधी, अधिक ईर्षावाला, काममें तत्पर, विद्वान् हो ॥ ४२ ॥ सातवें घरमें बुध हो तो अधिक रूप और अधिक विद्यावाला हो, सुन्दर शीलवाला, कामशास्त्रको जाननेवाला

नारीमान्यश्च जायते ॥ ४३ ॥ बुधेऽष्टमे कृतघ्नश्च कुबुद्धिः पारदारिकः ॥ कामातुरोऽसत्यवादी रोगयुक्तो भवेन्नरः ॥४४॥ धर्मे बुधे धार्मिकश्च कूपारामादिकारकः ॥ सत्यवादी च दांतश्च जायते पितृवत्सरः ॥४५॥ दशमस्थे बुधे जातो धनधान्ययशोन्वितः ॥ बहुभाग्यश्च विजयी कांतियुक्तश्च मानवः॥४६॥लाभे बुधे नित्यलाभो नीरोगश्च सदा सुखी ॥ जनानुरागवृत्तिश्च कीर्तिमानपि जायते॥४७॥बुधे व्यये व्ययी लोके रोगी बन्धुसमन्वितः ॥ पापासक्तः पराधीनः परपक्षी च जायते ॥ ४८ ॥

अथ गुरुद्वादशभावफलम् ।

लग्ने गुरौ सुशीलश्च प्रगल्भो रूपवानपि॥नृपाभीष्टश्च

स्त्रियोंसे मान्य हो ॥ ४३ ॥ आठवें घरमें बुध हो तो कृतघ्न, कुबुद्धि, पराई स्त्रीसे रमण करनेवाला, कामातुर, असत्य बोलनेवाला, रोगसे युक्त होता है ॥ ४४ ॥ नववें स्थानमें बुध हो तो धार्मिक, वापी और बाग आदिका करनेवाला, सत्य बोलनेवाला दांत (जितेंद्रिय) पिताका प्रिय हो ॥ ४५ ॥ दशवें घरमें बुध हो तो धन धान्य और यशसे युक्त, बहुत भाग्यवाला, विजयी, कांतियुक्त मनुष्य होता है ॥ ४६ ॥ ग्यारहवें घरमें बुध हो तो नित्यलाभ हो, रोगरहित, सदा सुखी रहै, मनुष्योंमें स्नेह रक्खै, कीर्तिमान् हो ॥ ४७ ॥ बारहवें घरमें बुध हो तो संसारमें द्रव्य खर्चनेवाला हो, रोगी हो, बन्धुजनोंसे युक्त हो, पापमें आसक्त रहै, पराधीन, अन्यका पक्ष करनेवाला हो ॥ ४८ ॥ इति बुधद्वादशभावफलम् ॥

लग्नमें बृहस्पति हो तो सुन्दर शीलवाला, भरखम, रूपवान्,

नीरोगी ज्ञानी सौम्यश्च जायते ॥४९॥ धने जीवे धनी लोकः कृतघ्नो बन्धुसंयुतः॥गजाश्वमहिषीयुक्तःकांतिमानपि जायते ॥५०॥ जीवे तृतीये तेजस्वी कर्मदक्षो जितेन्द्रियः ॥ मित्राप्तसुखसंपन्नस्तीर्थयात्राप्रियो भवेत् ॥ ५१ ॥ सुखे जीवे सुखी लोके सुभगो राजपूजितः ॥ विजितारिः कुलाध्यक्षो गुरुभक्तश्च जायते ॥ ५२ ॥ सुते जीवे सुतैर्युक्तो धार्मिकः पंडितः सुखी॥शुद्धचेता दयायुक्तो विनयी च भवेन्नरः॥५३॥ षष्ठे गुरौ विघ्नयुक्तो बहुशत्रुरनिष्ठुरः॥ उद्वेगी मतिहीनश्च कामुको जायते नरः ॥ ५४ ॥ सप्तमस्थे सुराचार्ये कामचित्तो महाबलः ॥ धनी दाता प्रगलभश्च चित्रकर्मा प्रजायते॥५५॥जीवेऽष्टमे सदा रोगी कृपणः

राजासे मान्य, रोगरहित, ज्ञानी, सौम्य जन हो ॥ ४९ ॥ दूसरे घरमें बृहस्पति हो तो धनी, कृतज्ञ, बन्धुजनोंसे युक्त हो, हस्ती घोडे और भैंस इन्होंसे युक्त हो, कांतिमान् हो ॥ ५० ॥ तीसरे घरमें बृहस्पति हो तो तेजस्वी, काममें चतुर, जितेंद्रिय, मित्रसे प्राप्त सुखसे संपन्न हो, तीर्थयात्रामें प्रीतिवाला नर हो ॥ ५१ ॥ चौथे घरमें बृहस्पति हो तो संसारमें सुखी, ऐश्वर्यवान् हो, राजासे मान्य, शत्रुओंको जीतनेवाला, कुलका पति, गुरुकी भक्तिवाला हो, ॥ ५२ ॥ पांचवें घरमें बृहस्पति हो तो पुत्रादिकोंसे युक्त हो धार्मिक, पंडित, सुखी हो, शुद्ध चित्तवाला, दयायुक्त, विनयी जन होवे ॥ ५३ ॥ छठे घरमें बृहस्पति हो तो विघ्नयुक्त, बहुत शत्रुओंवाला, कठोर, उद्वेगी, बुद्धिहीन, कामी जन होता है ॥ ५४ ॥ सातवें घरमें बृहस्पति हो तो कामी, महाबली, धनी, दानी, प्रगल्भ (भरखम), विचित्र कर्म करने वाला हो ॥ ५५ ॥ आठवें घरमें बृहस्पति हो तो सदारोगी,कृपण,

शोकसंयुतः ॥ बहुवैरी कुकर्मा च कुरूपश्च भवेन्नरः ॥५६॥धर्मे जीवे धर्मकर्ता साधुसंगी च शास्त्रवित्॥ विनयी तीर्थसेवी च ब्रह्मज्ञश्च स जायते।५७।कर्मभावगते जीवे पुण्यकीर्तिसुखान्वितः।।राजतुल्यःसुरूपश्च दयालुर्जायते नरः५८॥लाभे गुरौ विवेकीस्याद्धस्त्यश्वादिधनैर्युतः ॥ अलोलुपः सुरूपश्च गुणवानपि जायते॥५९॥व्यये बृहस्पतौ रोगी व्यसनी परधर्मकृत्॥ बन्धुवैरी नीचसेवी गुरुद्वेषी च जायते॥६०॥

अथ शुक्रद्वादशभावफलम् ।

लग्ने शुक्रे सुशीलश्च वृत्तिमानपि सुन्दरः ॥ शुचिर्विद्वान् मनोज्ञश्च धार्मिकश्च भवेन्नरः॥६१ ॥धने शुक्रे धनी विद्वान्बन्धुमान्यो नृपार्चितः ॥ यशस्वी गुरु-

शोकसंयुक्त बहुतोंका वैरी, कुरूपी होवे ॥ ५६ ॥ नवमें घरमें बृहस्पति हो तो साधुओंका संगी, शास्त्रको जाननेवाला, विनयी, तीर्थ सेवा करनेवाला, ब्रह्मवेत्ता हो ॥ ५७ ॥ दशवें घरमें बृहस्पति हो तो पुण्य, कीर्ति, सुख इनसे युक्त हो, राजाके समान हो, सुन्दर रूपवाला दयालु जन हो ॥ ५८ ॥ ग्यारहवें घरमें बृहस्पति हो तो ज्ञानी, हस्ती घोडे आदि धनोंकरके युक्त, अत्यंत तृष्णा करके रहित, सुंदर रूपवाला, गुणवान् भी होवे ॥ ५९ ॥ बारहवें घरमें बृहस्पति हो तो रोगी हो, व्यसनी हो, सदा पराये धर्मको करै, बंधुओंसे वैर करै, नीचसेवी, गुरुका द्वेषी हो ॥ ६० ॥ इति गुरुद्वादशभावफलम् ॥

लग्नमें शुक्र हो तो सुंदर शीलस्वभाववाला, अच्छी वृत्तिवाला, सुंदर पवित्र, विद्वान्, मनोहर धार्मिक नर हो ॥ ६१ ॥ दूसरे घरमें शुक्र हो तो धनी, विद्वान्, बंधुओंसे मान्य, राजासे पूजित हो, यशस्वी

भक्तश्च कृतज्ञश्च भवेन्नरः ॥६२॥ भार्गवे सहजे जातो धनधान्यसुतान्वितः ॥ नीरोगी राजमान्यश्च प्रतापी चापि जायते॥६३॥ सुखे शुक्रे सुखी विज्ञो बहुभार्यो धनान्वितः ॥ ग्रामाधिपो यशस्वी स्याद्विवेकी च भवेन्नरः ॥ ६४ ॥ सुते शुक्रे समृद्धश्च सुरूपोऽपि सदा नरः ॥ पुत्रकन्यापौत्रयुतः सुभगोऽपि भवेन्नरः ॥६५॥ षष्ठे शुक्रो भवेद्दम्भी जाड्यहानिभयान्वितः ॥ दुःसंगी कलही तातद्वेषी चैव सदा नरः ॥ ६६ ॥ सप्तमे भृगुपुत्रे स्याद्धनी द्विव्यांगनायुतः ॥ नीरोगः सुखसंपन्नो बहुभाग्यश्च जायते ॥६७॥ अष्टमस्थे दैत्यपूज्ये सरोगः कलहप्रियः ॥ वृथाटनी कार्यहीनो जनानां च प्रियो मतः ॥६८॥ धर्मे शुक्रे धर्मपूर्णो

गुरुका भक्त कृतज्ञ होवे ॥ ६२ ॥ तीसरे घरमें शुक्र हो तो धन धान्य और पुत्रसे युक्त, रोगरहित, राजमान्य, प्रतापी हो ॥ ६३ ॥ चौथे घरमें शुक्र हो तो सुखी, पंडित हो, बहुत स्त्रियोंवाला, धनसे युक्त हो, ग्रामका अधिपति, यशस्वी, विवेकी हो॥६४॥ पांचवें घरमें शुक्र हो तो समृद्धिमान्, सुंदर, रूपवान् हो, पुत्र पौत्रादिकोंसे युक्त हो, बहुत ऐश्वर्यवान् हो ॥ ६५ ॥ छठे घरमें शुक्र हो तो पाखंडी हो, मूर्खता रहे, निर्भयपना रहे, दुष्ट जनोंकी संगतिवाला, कलहकारी, पितासे वैर करनेवाला हो ॥ ६६ ॥ सातवें घरमें शुक्र हो तो धनी, द्रिव्यस्त्रीसे संयुक्त, रोगरहित, सुखसंपन्न तथा बहुत भाग्यवान् हो ॥ ६७ ॥ आठवें घरमें शुक्र हो तो रोगी हो, कलहमें प्रीति रहे, वृथा गमन करताहै, कार्यहीन हो, सब जनोंका प्रिय हो ॥ ६८ ॥ नववें घरमें शुक्र हो तो धर्मसे परिपूर्ण हो, ज्ञान बढाहुआ, सुखी,धनी,

ज्ञानवृद्धः सुखी धनी॥नरेन्द्रमान्यो विजयी नराणां च प्रियः सदा ॥६९॥ कर्मस्थिते भृगोः पुत्रे सुकर्मा निधिरत्नवान्॥ राजसेवी धार्मिकश्च जायते दयिता-प्रियः॥७०॥लाभे शुक्रे सदा लाभो यशःसत्यगुणा-न्वितः॥धनी भोगी क्रियाशुद्धो जायते मानवोत्तमः॥ ॥७१॥व्यये शुक्रे व्ययाढ्यश्च गुरुमित्रविरोधवान् ॥ मिथ्यावादी बन्धुवर्गे गुणहीनोऽपि जायते ॥ ७२ ॥

अथ शनिद्वादशभावफलम् ।

लग्ने शनौ सदा रोगी कुरूपः कृपणो नरः॥ कुशीलः पापबुद्धिश्च शठश्च भवति ध्रुवम् ॥ ७३ ॥ धने मन्दे धनैर्हीनो वातपित्तकफातुरः॥देहास्थिपित्तरोगश्च गुणैः स्वल्पोऽपि जायते॥७४॥छायात्मजे तृतीयस्थे प्रसन्नो

हो, राजासे मान्य, विजयी, मनुष्योंका सदा प्रिय रहे ॥ ६९ ॥ दशवें घरमें शुक्र हो तो सुन्दर कर्म करनेवाला, खजाना तथा रत्नोंवाला, राजसेवी, धार्मिक, स्त्रीका प्रिय हो ॥७० ॥ ग्यारहवें घरमें शुक्र हो तो सदा लाभ हो, यश, सत्य और गुणसे युक्त हो, धनी, भोगी, शुद्ध क्रियावाला, उत्तम मनुष्य हो॥ ७१ ॥ बारहवें घरमें शुक्र हो तो खर्चावाला, गुरु मित्रसे विरोध करनेवाला, गूढ बोलनेवाला, बंधुज-नोंमें गुणहीन हो ॥ ७२ ॥ इति शुक्रद्वादशभावफलम् ॥

लग्नमें शनि हो तो सदा रोगी रहे, कुरूप, कृपण, कुशील, पाप-बुद्धिवाला, निश्चय मूर्ख होवे ॥ ७३ ॥ दूसरे घरमें शनि हो तो धन-हीन, वात पित्त कफसे पीडित, देहमें अस्थिरोग, तथा पित्तरोग-वाला, स्वल्पगुणी हो ॥ ७४ ॥ तीसरे घरमें शनि हो तो प्रसन्न,

गुणवत्सलः ॥ शत्रुमर्दी नृणां मान्यो धनी शूरश्च जायते ॥७५॥ सुखे मन्दे सुखैर्हीनो हतार्थो बांधवैर्नरः ॥ गुणस्वभावो दुःसंगी कुजनैश्च न संशयः ॥ ७६ ॥ पुत्रे मन्दे पुत्रहीनः क्रियाकीर्तिविवर्जितः ॥ हीनकोशो विरूपश्च मानवो भवति ध्रुवम्॥७७॥शत्रुभावस्थिते मंदे शत्रुहीनो महाधनी॥पशुपुत्रयशोयुक्तो निरोगो जायते नरः॥७८॥ कलत्रस्थे मित्रपुत्रे सकलत्रो रुजान्वितः ॥ बहुशत्रुर्विवर्णश्च कृशश्च मलिनो भवेत्॥७९॥क्रोधातुरोऽष्टमे मन्दे दरिद्रो बहुरोगवान् मिथ्याविवादकर्त्ता स्याद्वातरोगी भवेन्नरः ॥ ८० ॥ धर्मे मन्दे धर्महीनो विवेकी च रिपोर्वशः ॥ नृशंसो जायते लोके परदाररतः सदा॥८१॥ कर्मभावे सूर्य-

गुणमें प्रिय, शत्रुओंका नाशक, मनुष्योंका मान्य, धनी, शूरवीर होवे ॥ ७५ ॥ चौथे घरमें शनि हो तो सुखहीन, बंधुजनों करके हरा हुआ धनवाला अर्थात् उसके भाई धनको हरलेवें, गुणका स्वभाववाला, दुष्ट जनोंके साथ दुष्ट संगवाला निश्चय हो ॥ ७६ ॥ पांचवें घरमें शनि हो तो पुत्रहीन, क्रिया कीर्तिहीन, द्रव्यहीन बुरे रूपवाला हो ॥ ७७ ॥ छठे घरमें शनि हो तो शत्रुहीन, महाधनी, पशु पुत्र यशयुक्त, रोगरहित हो ॥ ७८ ॥ सातवें घरमें शनि हो तो स्त्रीसहित रोगी रहे, बहुत शत्रु रहैं, बुरा वर्ण हो, दुबला हो, मलीन हो ॥ ७९ ॥ आठवें शनि हो तो क्रोधातुर, दरिद्री, बहुत रोगवाला हो, झूठ विवाद करनेवाला वातरोगी मनुष्य होवे ॥ ८० ॥ नववें घरमें शनि हो तो धर्महीन हो, ज्ञानी हो, शत्रुके वशमें रहे, क्रूर, पराई स्त्रीसे सर्वदा रमण करनेवाला हो ॥ ८१ ॥ दशवें घरमें शनि हो

पुत्रे कुकर्मी धनवर्जितः॥दयासत्यगुणैर्हीनश्चंचलोऽपि भवेत्सदा ॥८२॥ छायात्मजे तु लाभस्थे सर्वविद्याविशारदः ॥ खरोष्ट्रमहिषैः पूर्णो राजमान्योऽशुचिर्भवेत् ॥ ८३ ॥ असद्व्ययी व्यये मन्दे कृतघ्नो वित्तवर्जितः॥बन्धुवैरी कुवेषः स्याच्चंचलश्च सदा नरः॥८४॥

अथ स्त्रीजन्मलग्नविचारः ।

लग्ने च सप्तमे पापे सप्तमे वत्सरे पतिः॥म्रियते चाष्टमे वर्षे चन्द्रो षष्ठेऽष्टमे यदा॥८५॥गुरौ शुक्रे मृतापत्या मृतगर्भा च मंगले ॥ अष्टमस्थो ग्रहो नूनं स्त्रियाश्चेत शोभनो न सः ॥८६॥ एकः पुत्रो भवेद्राजा पंचमस्थो यदा रविः॥मंगले च त्रयःपुत्रा गुरौ पंच प्रकीर्तिताः ८७॥

तो कुकर्मी, धनहीन हो, दया सत्य और गुण करके हीन हो, सदा चंचल रहै ॥ ८२ ॥ ग्यारहवें घरमें शनि हो तो सब विद्यामें निपुण हो, गधा, ऊंट, भैंस इत्यादिकोंसे पूर्ण, राजाके मान्य रहै और अपवित्र रहै ॥ ८३ ॥ ग्यारहवें घरमें शनि हो तो वृथा खर्च करे, कृतघ्न हो, धनहीन होवे, बंधुओंका वैरी, कुवेष धारण रक्खे, सर्वदा चञ्चल रहै । (राहुकेतुका फल शनिके समान जानना) ॥ ८४ ॥ इति लग्नादिद्वादशभावगतशनिफलम् ॥

अथ स्त्रीजन्मलग्नविचारः । लग्नमें और सातवें पापग्रह हो तो सातवें वर्षमें पति मरै, जो छठे आठवें घरमें चंद्रमा हो तो आठवें वर्षमें पति मरै ॥ ८५ ॥ बृहस्पति और शुक्र आठवें घरमें होवे तो उसके संतान नहीं जीवे, आठवें घरमें मंगल हो तो गर्भ नष्ट हो. स्त्रीके जन्मसमय आठवें घरमें कोई ग्रह शुभदायी नहीं है ॥ ८६ ॥ पांचवें घरमें सूर्य हो तो एकही पुत्र राजा हो, मंगल हो

पंचमस्थे निशानाथे स्त्रियाः कन्याद्वयं भवेत् ॥ बुधे कन्याश्चतस्त्रश्च शुक्रे सप्त च कन्यकाः॥ ८८ ॥ षडेव कन्या जायंते धर्मस्थाने यदा सितः ॥ सप्तमे चेद्यदा राहुः स्त्रियाः पुत्रस्तदा भवेत् ॥८९॥ सुरूपा भार्गवे लग्ने साहंकारा धरासुते ॥ बुधे वक्रा गुरौ शुद्धा शनौ दारिद्र्यदुर्भगा ॥९०॥ पापयोरन्तरे लग्ने चन्द्रे वा यदि कन्यका ॥ जायते च तदा हंति पितृश्वशुरयोः कुलम् ॥ ९१ ॥ द्वादशे चाष्टमे भौमे क्रूरे तत्रैव संस्थिते ॥ लग्ने च सिंहिकापुत्रे रंडा भवति कन्यका ॥ ९२ ॥ सप्तमे भार्गवे जाता कुलदोषकरी भवेत् ॥ कर्कराशिस्थिते भौमे स्वैरं भवति वेश्मसु ॥ ९३ ॥ लग्नात्सप्तमगः पापश्चन्द्रात्सप्तमगोऽपि वा ॥ सद्यो

तो तीन पुत्र हों, बृहस्पति हो तो पांच हों ॥ ८७॥ पांचवें चंद्रमा हो तो स्त्रीके दो कन्या होवें, बुध हो तो चार कन्या हों, शुक्र हो तो सात कन्या हों ॥ ८८ ॥ यदि नवमें घरमें शुक्र हो तो छः कन्या हों, सातवें घरमें राहु हो तो स्त्रीके पुत्र हो ॥ ८९ ॥ शुक्र लग्नमें हो तो सुंदर रूपवती स्त्री हो, मंगल हो तो अहंकारयुक्त स्वभाववाली हो, बुध हो तो कुटिला, बृहस्पति हो तो शुद्ध हो, शनि हो तो दरिद्रा दुर्भगा हो॥९०॥पापग्रहोंके मध्यमें लग्न हो अथवा चंद्रमा हो तो जन्मनेवाली कन्या पिता और ससुरालके कुलको नष्ट करै॥९१॥ बारहवें, आठवें घरमें मंगल हो और तहांही क्रूर ग्रह बैठा हो, लग्नमें राहु हो तो वह कन्या रांड हो ॥९२॥ सातवें शुक्र हो तो जन्मनेवाली कन्या कुलको दोष लगानेवाली हो, कर्क राशिपर मंगल हो तो व्यभिचारिणी हो ॥९३॥ लग्नमें सातवें घरमें और चन्द्रमासे भी

निहंति दम्पत्योरेको नास्त्यत्र संशयः ॥ ९४ ॥ लग्ने व्यये चतुर्थे च पञ्चमे सप्तमेग्रहाः॥पतिवश्या भवेन्नारी नारीवश्यो भवेत्पतिः ॥ ९५ ॥ इति स्त्रीजन्मलग्नाद्ग्रहयोगफलम् ॥ इति श्रीसर्वशास्त्रविशारदश्रीकाशीनाथकृतजातकलग्नचन्द्रिकायां ग्रहयोगो नाम द्वितीयः परिच्छेदः ॥ २ ॥

अथ तृतीयपरिच्छेदः ।

अथ सूर्यपुरुषाकृतिचक्रम् ।

लिखित्वा नरचक्रं च यत्र सूर्यो व्यवस्थितः॥तन्नक्षत्रादिकं कृत्वा त्रयं दद्याच्च मस्तके ॥९६॥ वदने च त्रयं दद्यादेकैकं स्कंधयोर्द्वयोः ॥बाहुद्वये तथैकैकं पाण्योरेकैकमेव च ॥९७॥ ऋक्षाणि हृदये पञ्च नाभौ स्यादेकमेव हि ॥ ऋक्षं गुह्ये भवेदेकमेकैकं जानुनो-

सातवें घरमें यदि एकभी पापग्रह हो तो शीघ्रही पतिसहित स्त्रीको नष्ट करे इसमें सन्देह नहीं ॥ ९४ ॥ लग्नमें, बारहवें, चौथे, पांचवें, सातवें ग्रह होवें तो स्त्री पतिके वशमें रहै, पति स्त्रीके वशमें रहै ॥ ९५ ॥

इति श्रीवेरीपुरनिवासी-द्विजशालग्रामात्मजपंडितवसतिरामविरचित-लग्नचंद्रिकाभाषाटीकायां द्वितीयः परिच्छेदः ॥ २ ॥

अथ तृतीयः परिच्छेदः ॥ मनुष्यके आकारचक्र लिखके जहां सूर्य स्थित हो उस नक्षत्रको आदिमें करके तीन नक्षत्र मस्तकपर धरै॥९६॥ तीन मुखपर धरै, दोनों कन्धोंपर एक २ धरै, दोनों भुजाओंपर एक २ धरै, दोनों हाथों विषे एक २ धरै ॥ ९७ ॥ हृदयपर पांच नक्षत्र धरै,

र्द्वयोः ॥९८॥ नक्षत्राणि षडन्यानि निदध्यात्पादयो-र्बुधः ॥ सूर्यनक्षत्रतो जन्मनक्षत्रावधि गण्यते ॥९९॥ मस्तकस्थे च नक्षत्रे पट्टबंधी भवेन्नरः॥मुखे मिष्टान्न-भोक्ता स्यात्स्कंधभे गजवाहनः ॥ १०० ॥ ५०० ॥ बाह्वोर्भे बलवान्मर्त्यः पाणिभे तस्करो भवेत्॥ हृदये चेश्वरो जातो नाभौ स्वल्पेन तोषितः ॥१॥ गुह्यभे परदारः स्याज्जानुभे परदेशगः॥ पापस्थिते स्वनक्षत्रे निर्धनोऽल्पायुरेव च ॥ २ ॥

अथ चन्द्रडिंभचक्रम् ।

जन्मराशेश्च नक्षत्रान्नक्षत्रं वर्तमानकम् ॥गणयेद्गणकः प्राज्ञश्चन्द्रस्यैव शुभाशुभम् ॥ ३ ॥ षडास्ये६पृष्ठके

नाभीपर एकही नक्षत्र धरै, गुदापर एक नक्षत्र धरै, दोनों गोडोंपर एक २ धरै ॥ ९८ ॥ फिर बाकी रहे छः नक्षत्रोंको पैरोंमें धर देवे पीछे सूर्यके नक्षत्रसे जन्मके नक्षत्र तक गिने ॥ ९९ ॥ मस्तकपर स्थित नक्षत्रमें हो तो पट्टबंधी (चपरास बांधने आदिसे राजसेवा आदिमें नियुक्त), मुखमें आवे तो मिष्टान्न भोजन करै, दोनों कन्धोंपर आवे तो हस्तीकी सवारी करै ॥ १०० ॥ ५०० ॥ भुजापर नक्षत्र हो तो बलवान् मनुष्य हो, हाथोंपर नक्षत्र हो तो चोरी करै, हृदयपर हो तो ऐश्वर्यवान् हो, नाभिपर हो तो थोडी वस्तुसे सन्तुष्ट होजावे ॥ १ ॥ गुदापर नक्षत्र आवे तो पराई स्त्रीसे रमण करै, गोडोंपर नक्षत्र हो तो परदेशमें गमन करै, यदि अपना जन्मनक्षत्र पैरोंपर स्थित होवै तो निर्धन और अल्प आयुवाला हो ॥ २ ॥ इति सूर्यपुरुषाकृति-चक्रफलम् ॥

जन्मराशिके नंक्षत्रसे वर्तमान नक्षत्रतक बुद्धिमान् ज्योतिषी गिनै फिर चन्द्रमाका शुभाशुभ फल कहै ॥ ३ ॥ छः नक्षत्र मुखपर धरै,

षट्कं ६ करे षट्कं ६ त्रयं ३ गुदे॥त्रयं३पादे त्रयं ३ पीठे दातव्यं गणकोत्तमैः॥४॥मुखे हानिश्च विज्ञेया धनहानिश्च पृष्ठभे ॥ हस्ते राजभयं ज्ञेयं राजमानं च गुह्यभे ॥५॥ स्थानभ्रष्टो भवेत्पादे कंठे सर्वसुखं भवेत्॥ जन्मनक्षत्रतश्चंद्रनक्षत्रस्य फलं क्रमात् ॥ ६ ॥

अथ भौमनरचक्रम् ।

यस्मिन्नृक्षे भवेद्भौमस्तदादित्रीणि मस्तके॥त्रयं नेत्रे त्रयं मौलौ चतुष्कं बाहुयुग्मके ॥ ७ ॥ कंठे द्वयं पंच हृदि त्रयं गुह्ये श्रुतिः पदोः॥मुखे रोगो धनं नेत्रे यशो मौलौ धनं हृदि॥८॥कंठे हिक्का रतिर्गुह्ये पादे देशांतरं व्रजेत्॥वामबाहौ भवेद्रोगो दक्षिणे गणको भवेत्॥९॥

पीठपर छः धरै, गुदापर तीन धरै, पैरोंपर तीन धरै, पीठपर तीन धरै उत्तम ज्योतिषी इस प्रकार नक्षत्र स्थापन करै ॥ ४ ॥ मुखके नक्षत्रोंमें हानि हो, पीठके नक्षत्रोंमें धनकी हानि हो, हाथके नक्षत्रोंमें राजासे भय हो, गुदाके नक्षत्रोंमें राजासे मान हो ॥५॥ पैरोंमें हो तो स्थानसे भ्रष्ट हो, कंठपर सब सुखदायी कहे हैं। इस प्रकार जन्मनक्षत्रसे क्रमसे चन्द्रनक्षत्रका फल कहा है॥६ ॥ इति चन्द्रडिंभचक्रम् ॥

जिस नक्षत्रपर मंगल हो उससे आदि लेके तीन नक्षत्र मस्तकपर धरै, फिर तीन नेत्रपर, तीन ललाटपर धरै, चार नक्षत्र दोनों भुजापर धरै ॥ ७ ॥ कंठपर दो नक्षत्र धरै, हृदयपर पांच नक्षत्र धरै, गुदापर तीन नक्षत्र धरै, पैरोंपर चार नक्षत्र धरै, मुखपर होवे तो रोग हो, नेत्रोंमें धन हो, मस्तकपर यश, हृदयपर धन हो ॥ ८ ॥ कंठपर हिचकी रोग, गुदापर हो तो अरुचि रोग हो, पैरोंमें हो तो विदेशमें गमन करै, बायीं भुजापर हो तो रोग हो, दाहिनीपर हो तो ज्योतिषी होवे ॥ ९ ॥ इति भौमनरचक्रम् ।

अथ बुधनरचक्रम् ।

बुधो यत्र भवेद्दक्षे तदादौ विलिखेत्क्रमात् ॥ मुखे ज्ञानाय पंच स्युर्नेत्रे राज्याय पंच च॥१०॥ पंचकंठे सुखाय स्याद्धृदि ज्ञानाय पंच च ॥ क्षयाय पादयोः पंच करयोर्ज्ञानदं द्वयम् ॥ ११ ॥ एकं गुह्यस्थनक्षत्रं क्षयदं परिकीर्तितम् ॥ बुधभाज्जन्मभं यावद्बुधचक्रं विचारयेत् ॥ १२ ॥

अथ गुरुडिम्भचक्रम् ।

मौलौ चत्वारि राज्यं युगपरिगणितं स्कंधयुग्मे च लक्ष्मीरेकं कंठे विभूतिर्मदनपरिमितं वक्षसि प्रीतिलाभः । षड्भिः पीडांघ्रियुग्मे जलधिपरिमितं वामबाहौ च मृत्युर्दृग्युग्मे त्रीणि दद्युर्नृपतिसमसुखं वाक्पतेश्चक्रमेतत् ॥ १३ ॥

जिस नक्षत्रपर बुध हो उसको आदि लेके क्रमसे लिखे तहां मुख पर पांच नक्षत्र ज्ञानदायी हैं, नेत्रपर पांच नक्षत्र राज्य देनेवाले हैं ॥ १० ॥ कंठपर पांच नक्षत्र सुखदायी हैं, हृदयपर पांच नक्षत्र ज्ञानदायी हैं, फिर पैरोंपर पांच नक्षत्र नाश करनेवाले हैं, हाथोंपर दो नक्षत्र ज्ञानदायी हैं ॥ ११ ॥ गुदापर एक नक्षत्र नाश करनेवाला है इस प्रकार बुधके नक्षत्रसे जन्मनक्षत्रतक बुधचक्रको विचारै ॥ १२ ॥ इति बुधपुरुषाकारचक्रम् ॥

मस्तकपर चार नक्षत्र राज्यदायी हैं, चार नक्षत्र दोनों कंधोंपर लक्ष्मी देनेवाले हैं, एक नक्षत्र कंठपर ऐश्वर्य देनेवाला है, पांच नक्षत्र हृदयमें धरे वे प्रीति देनेवाले हैं, छः नक्षत्र दोनों पैरोंपर धरै सो पीडा करनेवाले हैं, फिर चार नक्षत्र बायीं भुजापर हैं वे मृत्यु देनेवाले हैं, दोनों नेत्रोंपर तीन नक्षत्र हैं वे राजाके समान सुख देनेवाले हैं ऐसा यह बृहस्पतिका चक्र है ॥ १३ ॥ इति गुरुडिंभचक्रम् ॥

अथ शुक्रडिंभचक्रम्।

मौलौ पंच द्वयं वक्त्रे चतुष्कं हृदये स्वभात्॥सप्त बाहौ त्रयं गुह्ये द्वे जान्वोर्जलधिः पदे ॥१४॥ सुखं हृदि तथा मौलौ गुह्यभे मरणं ध्रुवम्॥मुखे सुभोजनं बाहौ मृत्युर्जानुपदोर्व्यथा ॥ १९ ॥

अथ शनिडिंभचक्रम्।

यस्मिञ्छनिश्चरति वक्त्रगते तदृक्षं चत्वारि दक्षिणकरेऽङ्घ्रियुगे भषट्कम्। चत्वारि वामकरगान्युदरे च पंच मूर्ध्नि त्रयं नयनयोर्द्वितयं गुदे च ॥ १६ ॥ मुखस्थिते भानुसुतेऽतिपीडा लक्ष्मीर्यशोदक्षिणहस्तसंस्थे ॥ पादद्वये निष्फलता च वामे करे च युद्धे तनुसंशयश्च ॥ १७ ॥ हृद्यर्थो

शुक्रके नक्षत्रसे लेके पांच नक्षत्र मस्तकपर धरै, दो मुखपर धरै, चार नक्षत्र हृदयपर धरै, सात नक्षत्र भुजापर धरै, तीन गुदापर, दो गोडोंपर, चार पैरोंपर धरै ॥ १४ ॥ हृदयपर तथा मस्तकपर जन्मनक्षत्र आवे तो सुख हो, गुदापर हो तो मृत्यु हो, मुखपर सुंदर भोजन मिले, भुजापर मृत्यु, गोड और पैरोंपर आवे तो पीडा हो ॥ १९ ॥ इति शुक्रडिंभचक्रम् ॥

जिस नक्षत्रपर शनि हो वह नक्षत्र मुखपर धरना, फिर उससे आगेके चार नक्षत्र नरचक्रमें दहिने हाथपर धरै, दोनों चरणोंपर छः नक्षत्र धरै, चार नक्षत्र बायें हाथपर धरै, उदरपर पांच रक्खै, मस्तकपर तीन, नेत्रोंपर दो नक्षत्र धरै, गुदापरभी दो नक्षत्र धरै ॥ १६ ॥ शनि मुखपर स्थित हो तो अत्यंत पीडा हो, दहिने हाथपर हो तो लक्ष्मी और यश प्राप्त हो, दोनों पैरोंपर निष्फलता, बायें हाथपर हो तो युद्धमें शरीरका संदेह हो ॥ १७ ॥ हृदयपर द्रव्यप्राप्ति, मस्तकपर

---

१ गुदैकमिति पाठे सप्तविंशतिनक्षत्रसंख्या न भवतीति गुदे चेति गुदेपि द्वयमित्यर्थः।

मस्तके राज्यं नेत्रयोः परमं सुखम् ॥ गुदे च प्राण-संदेहः शनिचक्रे विनिर्दिशेत् ॥ १८ ॥ मुखाच्चरति गुह्ये च गुह्यादायाति मस्तके ॥ मस्तकाल्लोचने याति लोचना-द्धृदयं व्रजेत् ॥ १९ ॥ हृदयाद्वामहस्तं च वामहस्तात्पद-द्वयम् ॥ पादाच्च दक्षिणं हस्तं शनिचारोऽयमुच्यते ॥ २० ॥

अथ राहुपुरुषाकृतिचक्रम् ।

यस्मिन्नृक्षे भवेद्राहुस्तदादौ सप्त पादयोः ॥ दक्षिणे च करे पंच शिरसि त्रीणि दापयेत् ॥ २१ ॥ नक्षत्रे द्वे हृदि न्यस्य मुखे चैकं नियोजयेत् ॥ पंच वामकरे दद्या-न्नाभौ चैकं नियोजयेत् ॥ २२ ॥ गुह्यदेशे त्रयं दद्या-द्राहुचक्रमिदं स्मृतम् ॥ २३ ॥ पादयोर्धनहानिः स्यात्सन्तापो दक्षिणे करे ॥

राज्यप्राप्ति हो, नेत्रोंपर परम सुख हो, गुदापर प्राणोंका संदेह हो ऐसा शनिचक्रमें कहना ॥ १८ ॥ (कहीं ऐसा भी मत है कि) शनैश्चर मुखसे गुदापर जाता है, गुदासे मस्तकपर आता है, मस्तकसे नेत्रोंपर आता है, नेत्रोंसे हृदयपर आता है ॥ १९ ॥ हृदयसे बायें हाथपर, बायें हाथसे दोनों पैरोंपर, पैरोंसे दहिने हाथपर आता है ऐसा यह शनिचार (चलना) है ॥ २० ॥ इति नराकारशनिचक्रम् ॥

जिस नक्षत्रपर राहु हो उससे आदि लेके सात नक्षत्र पैरोंपर धरै, फिर पांच नक्षत्र दहिने हाथपर धरै, तीन नक्षत्र शिरपर धरै ॥ २१ ॥ दो नक्षत्र हृदयपर धरै, एक मुखपर धरै, पांच बायें हाथपर धरै, एक नक्षत्र नाभिपर धरै ॥ २२ ॥ तीन नक्षत्र गुदापर धरै ऐसा राहु-चक्र कहा है ॥ २३ ॥ पैरोंपर जन्मनक्षत्र आवे तो धनकी हानि हो, दहिने हाथपर हो तो संताप हो, मस्तकविषे हो तो शत्रुसे भय हो,

मस्तके च भयं शत्रोर्हृदये दुर्जनप्रियः ॥ २४ ॥ मुखे दुर्जनसंहारो मृत्युर्वामकरे भवेत् ॥ नाभिगं सर्वनाशाय गुह्ये प्राणविनाशनम् ॥ २५ ॥

अथ केतुडिम्भचक्रम्।

यस्मिन्नृक्षे भवेत्केतुस्तदादौ तु फलं वदेत् ॥ नेत्रे द्वे रोगशोकाय मुखे लाभाय पञ्च च ॥ २६ ॥ राज्यप्रदं त्रयं मौलौ नक्षत्रं परिकीर्तितम् ॥ चतुष्कं दक्षिणे हस्ते नक्षत्रं च यशःप्रदम् ॥ २७ ॥ वामहस्ते चतुष्कं च भयरोगकरं सदा ॥ एकं नाभौ च नाशाय गुह्ये द्वे मृत्युकारके ॥ २८ ॥ ऋक्षाणि पादयोः षट्कं धननाशकराणि वै ॥ केतुचक्रस्य माहात्म्यं देहस्थं ज्ञायते बुधैः ॥ २९ ॥

हृदयपर हो तो दुर्जनमें मित्रता होवे ॥ २४ ॥ मुखपर आवे तो दुष्ट जनोंका नाश हो, बायें हाथपर हो तो मृत्यु हो, नाभिपर हो तो सर्व वस्तुका नाश, गुदापर जन्मनक्षत्र आवे तो प्राणोंका नाश हो ॥२५॥ इति राहुपुरुषाकृतिचक्रम्।

जिस नक्षत्रपर केतु हो उसका आदिसे फल कहै-जैसे पहले दो नक्षत्र नेत्रोंपर रोग और शोकको देनेवाले हैं, मुखपर पांच नक्षत्र लाभ देनेवाले हैं ॥ २६ ॥ फिर तीन नक्षत्र मस्तकपर राज्य देनेवाले कहे हैं, चार नक्षत्र दहिने हाथपर यश देनेवाले हैं ॥२७॥ बायें हाथपर चार नक्षत्र सदा भय और रोग करनेवाले हैं, एक नक्षत्र नाभिपर नाश करनेवाला है, गुदापर दो नक्षत्र मृत्यु करनेवाले हैं ॥ २८ ॥ पैरोंपर छः नक्षत्र धनका नाश करनेवाले हैं इस प्रकार पंडित जनोंने यह केतुनराकारचक्रका प्रभाव जानना ॥ २९ ॥ इति केतुडिंभचक्रम्।

अथ स्त्रीणां सूर्यपुरुषाकृतिचक्रम् ।

मौलौ त्रयं मुखे सप्त स्तनयोरष्टभानि च ॥ हृदि त्रयं त्रयं नाभौ त्रयं गुह्ये च विन्यसेत् ॥ ३० ॥ मौलौ संतापकृत्सूर्यो मुखे मिष्टान्नदो भवेत् ॥ स्तनयोः कामदः प्रोक्तो हृदये सुखदः स्त्रियः ॥ ३१ ॥ नाभौ पतिसुखं दत्ते गुह्ये कामकरः सदा ॥ सूर्यडिंभाख्यचक्रं तु स्त्रीणां प्रोक्तं विशेषतः ॥ ३२ ॥

अथ सूर्यकालानलचक्रम् ।

ऊर्ध्वास्तिस्रस्त्रिशूलाग्रा रेखास्तिस्रस्तिरःस्थिताः ॥ द्वे द्वे रेखे कोणयोश्च शृङ्गयुग्मं तथैकया ॥ ३३ ॥ मध्यत्रिशूलदंडाधो भानुनक्षत्रमालिखेत् ॥ अन्यान्यभिजिता सार्द्धं विलिखेद्दंडमस्तके ॥ ३४ ॥ अधःस्थितैस्त्रिनक्षत्रैरुद्वेगवधबंधनम् ॥ रेखाष्टके भवेल्लाभ ऋक्ष-

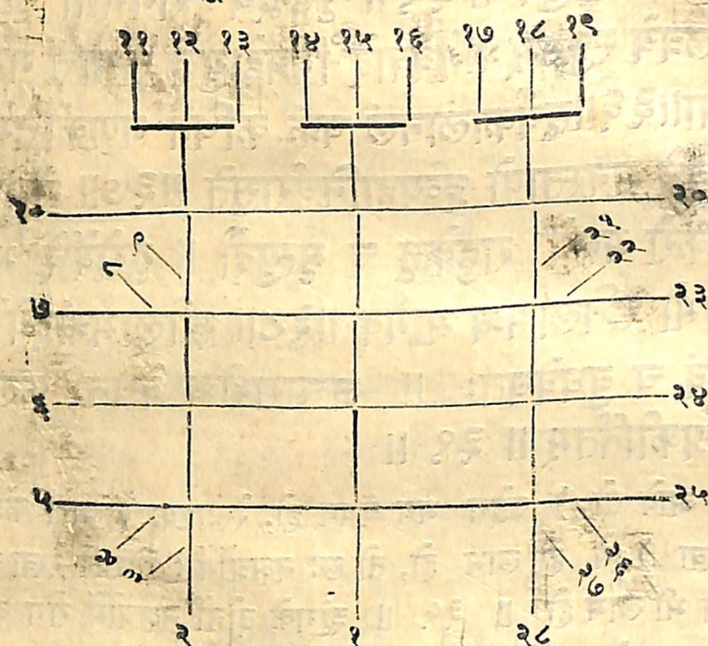
और सूर्यनक्षत्रसे आदि ले मस्तकपर तीन, मुखपर सात, स्तनोंपर आठ, हृदयपर तीन, नाभिपर तीन, गुदापर तीन नक्षत्र धरै ॥ ३० ॥ मस्तकपर (जन्मनक्षत्र आवे तो) सूर्य संताप करनेवाला है, मुखपर मिष्टान्न भोजन दे, स्तनोंपर कामना दे, हृदयपर हो तो स्त्रीको सुख देनेवाला है ॥ ३१ ॥ नाभिपर हो तो पतिको सुख दे, गुदापर हो तो कामना करै इस प्रकार यह सूर्यडिंभाख्य चक्र स्त्रियोंका विशेष (इसे अन्य प्रकारसे देखना) कहा है ॥ ३२ ॥ इति सूर्यपुरुषाकृतिचक्रम् ॥

ऊपरको तीन रेखा त्रिशूलके अग्रभाग आकारवाली खींचै, तीन रेखा तिरछी खींचै, दो२ रेखा कोणोंमें खींचै, एक २ रेखासे दो शृंग बनावे ॥ ३३ ॥ मध्यमें त्रिशूलके दंडके नीचे सूर्यके नक्षत्रको लिखै फिर अन्य अभिजित् सहित सब नक्षत्रोंको क्रमसे इन रेखाओंके मस्तकपर लिखै ॥ ३४ ॥ नीचे स्थित हुए तीन नक्षत्रोंमें (जन्मका

षट्के तथा पुनः॥ ३५॥ शृङ्गद्वये रोगभंगो मृत्युः शूलत्रये स्फुटम्॥ विवादे विग्रहे युद्धे रोगार्त्ते गमने तथा॥३६॥सूर्यकालानलं चक्रं कथितं गणकोत्तमैः॥ रवेर्वेधे मनस्तापो द्रव्यहानिर्धरासुते॥३७॥ रोगपीडाकरो मन्दो राहुकेतू च मृत्युदौ॥ गुरोर्वेधे भवेल्लाभो रतिलाभश्च भार्गवे॥३८॥ स्त्रीलाभश्चंद्रवेधेन सुखं च बुधवेधतः॥ जन्मराशेश्च वेधेन फलमेतत्प्रकीर्तितम्॥ ३९॥

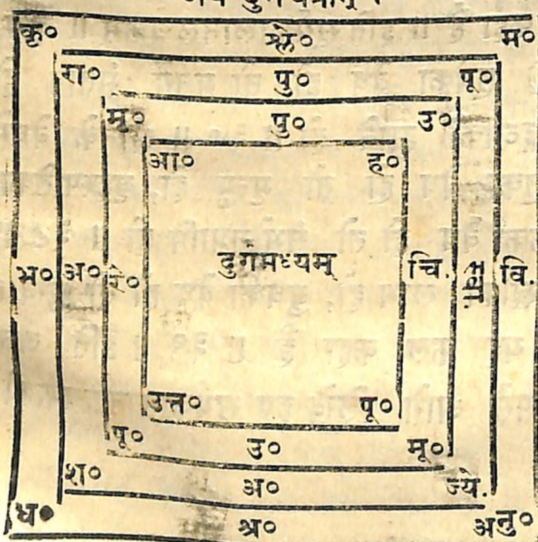
नक्षत्र आवे तो) उद्वेग भय बंधन हो, रेखाष्टक (चारों कोणोंकी ८ रेखा) में हो लाभ हो, तो छः नक्षत्रोंमें (तिरछी रेखाओंमें) हो तो भी लाभ हो ॥ ३५ ॥ शृंगके दोनों नक्षत्रोंमें रोग दूर हो. त्रिशूलाग्र रेखाओंमें अवश्य मृत्यु हो। विवाद, विग्रह, युद्ध, रोगपीडा,गमन इनमें ॥ ३६ ॥ यह सूर्य कालानलचक्र विचारना पंडित जनोंने कहा है ॥ इति सूर्यकालानलचक्रम्॥ अथ वेधफलम्। (वेधचक्रमें) सूर्यका वेध हो तो मनमें संताप हो, मंगलका वेध हो तो द्रव्यकी हानि हो॥ ३७॥ शनिके वेधमें रोग पीडा हो, राहु केतुका वेध हो तो मृत्यु हो, बृहस्पतिका वेध हो तो लाभ हो, शुक्रका वेध हो तो संभोगप्राप्ति हो॥ ३८॥ चन्द्रमाका वेध हो तो स्त्रीका लाभ हो, बुधका वेध हो तो सुख हो, जन्मराशिके वेधसे यह फल कहा है ॥ ३९॥ इति जन्मराशिवेधफलम्(अब इससे आगे लिखे हुए सूर्यकालानलचक्रको समझो)।

॥ सूर्यकालानलचक्रम् ॥



आगे कहेहुए श्लोकोंका अर्थ इस दुर्गचक्रमें समझो

अथ दुर्गचक्रम् ।



अथ दुर्गचक्रम् ।

दुर्गाकारं लिखेच्चक्रं रेखात्रयसमन्वितम् ॥ ईशाने ग्रामनक्षत्रं दत्त्वा चाभिजिता सह ॥ ४० ॥ चतुष्कं च चतुष्कं च कोणेषु सकलेषु च॥मध्ये मध्ये सग्रहं च दद्याद्भिज्ञस्त्रयंत्रयम् ॥४१॥ दुर्गमध्ये स्थिते सूर्ये जलशोषः प्रजायते ॥ चन्द्रे भंगः कुजे दाहो बुधे बुद्धियुतो नृपः ॥ ४२ ॥ बृहस्पतौ दुर्गमध्ये सुभिक्षं प्रचुरं भवेत् ॥ चलचित्तो नृपः शुक्रे भेदभंगौ शनैश्चरे ॥४३॥राहुकेतौ दुर्गमध्ये विषदग्धो भवेन्नृपः॥ सूर्यः शनैश्चरो भौमो राहुः केतुर्यदा स्थितः ॥४४॥ एते ग्रहा दुर्गमध्ये दुर्गभंगः प्रजायते ॥ गुरुः शुक्रो बुधश्चंद्रो दुर्गमध्ये यदा स्थिताः ॥४५ ॥ तदा दुर्गो न भज्येत महेंद्रेणापि भेदितः ॥ ४६ ॥

दुर्गाकार (किलाके सदृश) चक्र निकाले तीन रेखा (चक्र) ऊपर बनावे फिर गांवके नक्षत्रको ईशान कोणमें धरके अभिजित् सहित सब नक्षत्रोंको धरे ॥ ४० ॥ सब कोणोंमें चार २ और मध्यमें तीन २ नक्षत्र ग्रहोंसहित धरै ॥ ४१ ॥ दुर्गके मध्यमें सूर्य आजावे तो (किलामें) जलका शोष होजायगा, चन्द्रमा हो तो दुर्गभंग हो, मंगल तो दुर्ग जलजावे, बुध दुर्ग मध्यमें हो तो राजा बुद्धियुक्त रहे ॥ ४२ ॥ बृहस्पति दुर्गमें हो तो सुभिक्ष (अन्न पानादि भरपूर रहै), शुक्र हो तो राजाका चित्त चलायमान हो, शनि हो तो (किला) टूट फूट जावे ॥ ४३ ॥ राहु केतु दुर्गके मध्यमें आजावें तो वह राजा विषसे दग्ध हो, सूर्य, शनि, मंगल, राहु, केतु ॥ ४४ ॥ ये पाप ग्रह दुर्गमें स्थित हों तो दुर्गभंग हो (किला टूटे), बृहस्पति, शुक्र, बुध चन्द्रमा ये ग्रह दुर्गके बीचमें आवें तो ॥ ४५ ॥ वह दुर्ग इंद्रका तोडा हुआ भी नहीं टूटे ॥ ४६ ॥ इति दुर्गचक्रम् ॥

अथ रव्यादीनां मध्यमचारः ।

मासं शुक्रबुधादित्याःसपादद्विदिनं शशी ॥ भौमस्त्रिपक्षं जीवोऽब्दं सार्धवर्षद्वयं शनिः॥ राहुः केतुः सदा भुंक्ते सार्धमेकं तु वत्सरम् ॥ ४७ ॥

अथ जन्मलग्नज्ञानम् ।

न पश्यति शशी लग्नं लग्नस्वामी न पश्यति ॥ न पश्यति यदा सूर्यः सोऽन्यजातस्तदोच्यते ॥४८॥ सुतपतिरस्तगतो वा पापयुतः पापमध्यगो वा स्यात् ॥ संततिबाधां कुरुते केन्द्रे वा पापसंयुते चंद्रे ॥ ४९ ॥ उदयाद्या गता नाडचस्तासामर्धेन संख्यया ॥ सूर्यर्क्षाद्यद्भवेदृक्षं तेन लग्नस्य निर्णयः ॥ ५० ॥ तिस्रो मीने च मेषे च चतस्रो

शुक्र बुध सूर्य ये एक महिनेतक राशिपर ठहरते हैं, चन्द्रमा सवादो २। दिनतक, मंगल, डेढ महीनेतक, बृहस्पति एक वर्ष, शनि अढाई वर्षतक, राहु केतु डेढ वर्षतक ठहरते हैं ॥ ४७ ॥ इति रव्यादीनां मध्यमचारः ॥

चंद्रमा लग्नको नहीं देखता हो और लग्नका स्वामी भी लग्नको नहीं देखता हो, सूर्य भी लग्नको नहीं देखता हो तो वह बालक अन्यसे उत्पन्न हुआ जानना ॥ ४८ ॥ पांचवें घरका पति अस्त हो अथवा पापग्रहसे युक्त या पापग्रहके मध्यमें आ रहाहो और चन्द्रमा पापग्रहसे युक्त होके केंद्रमें बैठा हो तो उस नरको सन्तानकी बाधा रहै ॥ ४९ ॥ लग्नविचारः ॥ उदयसे आदि ले गत घटियोंको (इष्टको) आधी कर तिस संख्यातक सूर्यके नक्षत्रसे गिनै जितनीं संख्या नक्षत्रकी हो उसही नक्षत्रका लग्न जानो (यह स्थूलमत है) ॥ ५० ॥ मीन और मेष लग्नमें तीन स्त्री कहो, वृष कुंभमें

वृषकुंभयोः मिथुने मकरे पंच पंच चापे च कर्कटे ॥ ५१ ॥ सूतिकायां स्त्रियो ज्ञेयाः पंच कन्या तुलेऽपि च ॥ योषितोऽन्येषु लग्नेषु तिस्रः प्रोक्ता मनीषिभिः ॥ ५२ ॥ लग्ने तदीशपार्श्वे वा यावंतश्च खयायिनः ॥ धनगा व्ययगाश्चैव तावत्यः सूतिकाः स्मृताः ॥५३॥ चन्द्रलग्नांतरस्थैर्वा ग्रहैस्तुल्याश्च सूतिकाः॥यथा राहुस्तथा शय्या मंगलः क्षेत्रभंगदः ॥ ५४ ॥ रविस्थाने भवेद्दीपः शनौ लोहं निगद्यते ॥ मेषादिद्वादशर्क्षेषु त्रिरावृत्तिक्रमेण तु ॥५५॥ पूर्वादिकं गृहद्वारं जन्मकालान्निगद्यते ॥ ५६ ॥

अथाष्टोत्तरीदशा।

चत्वारि भानि पापेषु शुभेषु त्रीणि योजयेत् ॥ आर्द्रा-

चार स्त्री कहो, मिथुन मकरमें पांच स्त्री कहो, धन कर्कमें पांच स्त्री कहो ॥ ५१ ॥ और कन्या तुलामें पांच स्त्री सूतिकाके पास कहो (यहभी स्थूल मत है) और इनसे अन्य लग्न हो तो पंडित तीनही स्त्री कहे ॥ ५२ ॥ दूसरा प्रकार ॥ लग्नमें अथवा लग्नके स्वामीके पास जितने ग्रह हों, अथवा धन स्थानमें वा बारहवें स्थानमें जितने ग्रह हों उतनीही स्त्री सूतिकाके समीप कहो ॥ ५३ ॥ अथवा चन्द्रमाके और लग्नके मध्यमें जितने ग्रह हों उतनीही कहना, जिस (दिशा) में राहु हो वहां शय्या बतावे, जिस घरमें मंगल हो तो उससे नालच्छेदनका स्थान कहे ॥ ५४ ॥ सूर्यके स्थानमें दीपक हो, शनिके स्थानमें लोहा कहना, मेष आदि राशियोंकी (लग्नकी) तीन आवृत्ति क्रम करनेसे जन्मकालसे पूर्व आदि घरका द्वार कहे॥५५।५६।

इति जन्मलग्नज्ञानम् ॥

अथ अष्टोत्तरीदशा ॥ पापग्रहोंमें चार नक्षत्र, शुभ ग्रहोंमें तीन

दिमृगपर्यंतं लिखेदभिजिता सह ॥५७॥ षडादित्ये च वर्षाणि चन्द्रे पञ्चदशैव तु॥मंगले चाष्टवर्षाणि बुधे सप्तदशैव तु ॥ ५८ ॥ शनौ च दशवर्षाणि जीवे चैकोनविंशतिः ॥ राहौ द्वादशवर्षाणि शुक्रे सैका च विंशतिः ॥ ५९ ॥ जन्मर्क्षगतनाडिघ्नं परायुः खगजै-र्भजेत् ॥ लब्धं परायुषं १०८ शोध्यं शेषमायुः स्फुटं भवेत् ॥६०॥ परमायुः प्रमाणेन १०८ गुणयेद्गतना-डिकाः ॥ नक्षत्रस्य हरेद्भागं नवत्या ९० तं विशो-धयेत् ॥ ६१ ॥ अर्द्राचतुष्कमादित्ये चन्द्रे ज्ञेयं मघा त्रयम् ॥ भौमे हस्तचतुष्कं स्यादनुराधात्रिकं बुधे ॥ ६२ ॥ पूषाचतुष्कं मन्दे च धनिष्ठात्रितयं गुरौ ॥

नक्षत्रतक (दशा) जानै, आर्द्रासे लेकर मृगाशिर पर्यंत अभिजित् नक्षत्र सहित गिनै ॥ ५७ ॥ सूर्यकी दशा ६ छःवर्षतक, चन्द्रमाकी दशा १५ पंद्रह वर्षतक, मंगलकी आठ ८ वर्षतक, बुधकी सतरह १७ वर्षतक ॥ ५८ ॥ शनिकी दशा दश १० वर्षतक, बृहस्पतिकी उन्नीस १९ वर्षतक, राहुकी बारह १२ वर्षतक, शुक्रकी इक्कीस २१ वर्षतक रहती है ॥ ५९ ॥ जन्मनक्षत्रकी गतघडीसे परम आयुको गुणै फिर अस्सी ८० का भाग देवे लब्ध हुएको परमायु १७८ में घटा देवे बाकी रही स्फुट आयु जाननी ॥६०॥ परम आयुके प्रमाण १०८ से गत घडियोंको गुणै फिर नक्षत्रका (२७) भाग दे बाकी रहेको नब्बेसे गुणके (फिर भाग दे) यह भुक्त भोग्यदशा देखनेका क्रम है॥६१॥ आर्द्रासे आदि ले चार नक्षत्रतक सूर्यदशा, मघासे तीन नक्षत्रतक चन्द्रमाकी दशा है,हस्तसे चार नक्षत्रतक मंगलकी दशा है,अनुराधासे चार नक्षत्रतक बुधकी दशा है॥६२॥ रेवतीसे चार नक्षत्रतक शनिकी दशा, धनिष्ठासे तीन नक्षत्रतक बृहस्पतिकी दशा, उत्तराभाद्रपदा

राहौ बुध्न्यभचत्वारि कृत्तिकात्रितयं भृगौ ॥ ६३ ॥
दशा दशाहतः कार्या भागो नन्दैर्विधीयते ॥ अन्तर्दशेयं तस्यैव प्रथमं ज्ञायते दशा ॥ ६४ ॥

अथ रविमहादशावर्ष ६ फलम्।

उद्विग्नचित्तः परिनष्टवित्तः शरीररोगः स्वजनैर्वियोगः॥ निपीडितो राजजनैः प्रवासी नरोऽश्वघाती च रवेर्दशायाम् ॥ ६५ ॥

अथ रविदशायामन्तर्दशाः।

सूर्यमहादशायां सूर्यांतर्दशामासाः ४।०।०।०। सूर्यस्यांतर्गते सूर्ये लाभो राजकुलाद्भवेत्॥ चित्तपीडा व्ययोऽर्थानां विप्रयागश्च बन्धुभिः ॥६६॥ रविदशामध्ये चन्द्रातर्दशामासादिः १०।०।०।०। शत्रु

आदि चार नक्षत्रोंमें राहुकी दशा, कृत्तिका आदि तीन नक्षत्रोंमें जन्म हो तो शुक्रकी दशा जानो ॥ ६३ ॥ अन्तर्दशाविचार ॥ दशोंके वर्षोंमें अन्तर्दशा देखना हो तो उस दशा और अन्तर्दशा आनेवाली दशाके वर्षोंसे गुणके नौका भाग दे लब्ध हुए मासादि जानै, पहले जिसकी दशा हो उसीकी अन्तर्दशा होती है ॥ ६४ ॥ इति अष्टोत्तरीदशा ॥

अथ रविमहादशावर्ष ६ फलम् ॥ सूर्यकी दशामें चित्त उद्विग्न रहै, द्रव्य नष्ट हो, शरीरमें रोग रहै, स्वजनोंके संग वियोग रहे, राजाके जनोंसे पीडित हो, परदेशमें जावे, घोडासे पीडा हो ॥ ६५ ॥

अथ रविदशायामन्तर्दशा। सूर्यकी महादशामें सूर्यकी अन्तर्दशाके मास आदि ४।०।०।०। (ये अंक मास तिथि घटी पलके हैं ऐसे सब जगह जानो) सूर्यके अन्तरमें सूर्य आवे तो राजकुलसे लाभ हो, चित्तमें पीडा रहै, द्रव्य खर्च हो, बन्धुजनोंके साथ वियोग हो ॥६६॥ सूर्यकी दशामें चन्द्रमाकी अन्तर्दशा मासादि १०।०।०।०।

नाशोऽर्थलाभश्च चिंतानाशः सुखागमः ॥ सूर्यस्यांतर्गते चन्द्रे व्याधिनाशश्च जायते ॥६७॥ भौमांतर्दशामासादिः ५ ।१०।० । ० । मणिमुक्ताकांचनानि जायंतेऽत्र सुखं तथा ॥ प्राप्यते भूपतेर्मानः सूर्यस्यांतर्गते कुजे ॥६८॥ बुधांतर्दशामासादिः ११ । १० ० । ० । विलासः सुखदारिद्र्ये जायते रोगसंभवः॥ पामाविचर्चिकादीनि सूर्यस्यांतर्गते बुधे ॥ ६९ ॥ शनेरंतर्दशामासादिः ६ । २० । ० । ० । राजभीतिः शत्रुभीतिः कलहो दुःखमेव च ॥ जायते धननाशश्च सूर्यस्यांतर्गते शनौ ॥७०॥ गुरुदशामासादिः १२ । २० । ० । ० ।निष्पापो व्यसनैर्हीनो नीरोगी धनवानपि ॥ प्राप्नोति पदवीं गुर्वीं सूर्यस्यांतर्गते गुरौ॥७१॥ राहुदशामासादिः ८ । ०।०।०। व्यसनं वित्तनाशश्च

सूर्यके अन्तर चन्द्रमाकी दशा आवे तो शत्रुनाश, द्रव्यकी प्राप्ति, चिंतानाश, सुखप्राप्ति, व्याधिनाश होता है ॥ ६७ ॥ मंगलके अन्तर्मासादि ५।१०।०।०। सूर्यके अन्तरमें मंगलकी अन्तर्दशा हो तो माणि मोती सुवर्ण आदिसे सुखकी प्राप्ति हो, राजासे मान लब्ध हो॥६८॥ बुधकी अन्तर्दशा ११ ।१०।०।०। है ॥ सूर्यके अंतर बुधकी दशा आवे तो विलास, सुख, दारिद्र्य, रोगकी उत्पत्ति, पामा, विचर्चिका (खाजरोग) हो ॥ ६९ ॥ शनिकी अन्तर्दशामा० ६ दि० २० । ० । ० है सूर्यके अन्तर शनिकी दशा आवे तो राजासे डर हो, शत्रुसे डर हो, कलह हो, दुःख हो, धनका नाश हो ॥ ७० ॥ बृहस्पतिकी दशा मा० १२ दिन २०।०।०। है सूर्यके अन्तर गुरुकी दशा आवे तो पापरहित, व्यसनरहित, रोगरहित हो; धनवान् होवे, बडी पदवी मिले ॥ ७१ ॥ राहुकी दशा मा० ८ । ० । ०।० सूर्यके अन्तर

शंका चाथ पराजयः ॥ सूर्यस्यान्तर्गते राहौ द्यूतं बन्धुजनैः कलिः ॥७२॥ शुक्रांतर्दशामासादिः १४ । ०।०।०। ज्वररोगः शिरोरोगो नानापीडा कलेवरे ॥ क्वापि बन्धुजनैः क्लेशः सूर्यस्यांतर्गते सिते ॥ ७३ ॥

अथ चंद्रमहादशावर्ष १९ फलम् ।

गजाश्वरत्नानि महाप्रतापो मिष्टान्नपानं विविधं सुखं च ॥ अरोगिता सर्वजनानुरागो भवेद्दशायां शशिनो जनस्य ॥ ७४ ॥

अथ चंद्रांतर्दशा ।

चंद्रदशामध्ये चंद्रांतर्दशामासादिः २९ । ०।०।०। शोभनस्त्रीसमायोगो वस्त्राभरणसंपदः ॥ शुभकन्यासमुत्पत्तिश्चंद्रस्यांतर्गते विधौ ॥ ७५ ॥ भौमांतर्दशा-

राहुकी अन्तर्दशा हो तो व्यसन, द्रव्यनाश, शंका, पराजय, जुवा खेलना, बंधुजनोंके साथ क्लेश हो ॥ ७२ ॥ शुक्रकी अन्तर्दशा १४। ०।०।०। सूर्यके अंतर शुक्रकी दशा आवे तो ज्वर हो, शिरमें रोग हो, शरीरमें अनेक प्रकारकी पीडा हो, कभी बन्धुजनोंके साथ क्लेश हो ॥ ७३ ॥ इति० ॥

अथ चंद्रदशा वर्ष १९ फलम् । चंद्रमाकी दशा आवे तो मनुष्यको हस्ती, घोड़े और रत्न प्राप्त हों, महाप्रताप हो, मिष्टान्न पान मिले, अनेक प्रकारका सुख मिले, रोग नहीं हो, सब जनोंसे स्नेह हो ॥७४॥

अथ चंद्रांतर्दशा । चंद्रमाकी महादशामें चंद्रमाकी अंतर्दशा मास २९।०।०।० । होती है । चंद्रमामें चंद्रमाकी दशा आवे तो सुंदर स्त्रीके संग समागम होगा, वस्त्र आभूषण संपत्ति मिले, सुंदर कन्याकी उत्पत्ति हो ॥ ७५ ॥ चंद्रमाकी दशामें मंगलकी अंतर्दशा मास १३।दि०१० ।

मासादिः १३ । १० । ० । ० असृक्पित्तरुजा पीडा वह्निचोराद्युपद्रवः ॥ कलहः स्त्रीजनैः सार्द्धं चन्द्रस्यांतर्गते कुजे ॥ ७६ ॥ बुधांतर्दशामासादिः २८ । १० । ० । ० । सर्वत्र लभते लाभो गजवाजिधनादिकम् ॥ गोमहिष्यादिकं चापि चंद्रस्यांतर्गते बुधे ॥७७॥ शन्यंतर्दशामासादिः १६ । २० । ० । ० । उद्वेगो वित्तनाशश्च शोकः शत्रूदयाद्भयम् ॥ कलहो बन्धुवर्गेण चन्द्रस्यांतर्गते शनौ ॥७८॥ गुरोरंतर्दशामासादिः ३१।२०।०।०। धनधर्मादिसंपत्तिर्वस्त्रालंकारभूषणम् ॥ सर्वत्र लभते लाभं चन्द्रस्यांतर्गते गुरौ ॥ ७९ ॥ राह्वंतर्दशामासादिः २०।०।०।०। रिपुरोगाग्निभीतिश्च बन्धुनाशो धनक्षयः॥भवेदुद्वेगचित्तश्च चन्द्रस्यांतर्गते त्वगौ॥८०॥शुक्रांतर्दशामासादिः३५।

०।० होती है। इसका फल यह है कि, रक्तपित्तकी पीडा हो, अग्नि चोर आदिकोंका उपद्रव हो, स्त्रियोंके साथ कलह होवे ॥७६॥ बुधकी अंतर्दशा २८।१०।०।०। है। चंद्रमाके अंतरमें बुधकी दशा आवे तो सब जगह लाभ हो, हस्ती, घोडे, धन आदि मिलें, गौ, भैंस आदि मिलें ॥७७॥ शनिकी अंतर्दशा १६।२०।० ।० है। चंद्रमाके अंतरमें शनि हो तो उद्वेग, द्रव्यनाश, शोक, शत्रु उठनेका भय, बन्धुओंके साथ लडाई हो ॥ ७८ ॥ गुरुकी अन्तर्दशा ३१ । २० । ० ।० । है चंद्रमाविषे गुरुकी अंतर्दशा आवे तो धन आदि संपत्ति बढै, वस्त्र आभूषण मिलें, सब जगह लाभ होवे॥७९॥ राह्वन्तर मासादि २०।०। ०।० । चंद्रमाके अंतरमें राहुकी दशा हो तो शत्रु, रोग, अग्नि इनसे भय हो, बंधुनाश, धनक्षय, चित्तमें उद्वेग हो ॥ ८० ॥ शुक्रान्तर्दशा

०।०।०। उत्तमस्त्रीजनैर्योगो दिव्यकन्यासमुद्भवः॥ धनधान्यादिलाभश्च चंद्रस्यांतर्गते सिते ॥ ८१ ॥ रव्यंतर्दशामासादिः १०।०।०।०॥ लाभो राजकुलेभ्यश्च रोगनाशो रिपुक्षयः ॥ जायते सुखमैश्वर्यं चंद्रस्यांतर्गते रवौ ॥ ८२ ॥

अथ भौममहादशावर्ष ८ फलम् ।

शस्त्राभिघातो नृपतेश्च पीडा चोराग्निभीतिश्च धनस्य हानिः ॥ कार्याभिघातश्च जनेषु दैन्यं भवेद्दशायां धरणीसुतस्य ॥ ८३ ॥

अथ भौममहादशायामंतर्दशाः ।

भौममहादशामध्ये भौमांतर्दशामासादिः ७।३।२०।० शत्रुभिः सह सम्मर्दो बन्धुभिः सह विग्रहः ॥ स्त्रीसंगो रक्तपित्ताद्वीभौमस्यांतर्गते कुजे ॥८४॥ बुधांतमासादि ३९।०।०।०। चंद्रमाके अंतर शुक्रकी दशा आवे तब उत्तम स्त्रियोंके साथ समागम हो, दिव्य कन्या उत्पन्न हो, धन धान्यादि लाभ हो ॥ ८१ ॥ रव्यन्तर्दशामासादि १०।०।०।० चंद्रमाके अंतर सूर्यकी दशा हो तो राजकुलसे लाभ हो, रोग नाश हो, शत्रुनाश हो, सुख ऐश्वर्य बढै ॥ ८२ ॥

अथ भौम महादशावर्ष ८ फलम् । मंगलकी दशा हो तो शस्त्रकी चोट लगे, राजासे पीडा हो, चोर अग्निसे भय हो, धनकी हानि हो, कार्य नष्ट हो, गरीबी रहे ॥ ८३ ॥

मंगलमें मंगलकी अन्तर्दशा मास ७। दिन ३। घ. २०।०। है। मंगलके अन्तर मंगलकी ही दशा आवे तो शत्रुओंके संग युद्ध हो, बन्धुजनोंसे लडाई हो, स्त्रीसंग हो, रक्तपित्तसे डर हो ॥८४॥ बुधकी

र्दशामासादिः १९। ३।२०।०। शत्रुचोरनृपादिभ्यो महाभीतिः प्रजायते॥महाज्वरः कृमेः पीडा भौमस्यान्तर्गते बुधे ॥ ८५ ॥ शन्यंतर्दशामासाद्याः ८।२६। ४०।०।धनक्षयो महादुःखं जायतेऽत्र निरंतरम्॥ सदा नरस्य विपदो भौमस्यांतर्गते शनौ ॥८६॥ गुर्वंतर्दशामासाद्याः १६।२६।४०।०। धनलाभस्तीर्थलाभो देवब्राह्मणपूजनम् ॥ नृपात् किंचिद्भवेद्भीतिर्भौमस्यांतर्गते गुरौ॥८७॥राह्वंतर्दशामासाद्याः १०।२०।०।०। शस्त्रचौराग्निभीतिः स्यात्कृषिस्त्रीधनपीडनम्॥ यत्रतत्र भयं भंगो भौमस्यांतर्गते त्वगौ॥८८॥शुक्रांतर्दशामासाद्याः १८।२०।०।०। व्याधयः शत्रुभीतिश्च धननाशोऽप्युपद्रवः॥विदेशगमनं नृणां भौमस्यांतर्गते सिते ॥ ८९ ॥ रव्यन्तर्दशामासाद्याः ५।१०।०।०।

अंतर्दशामास १९।३।२०।०। मंगलके अन्तर बुधकी दशा आवे तो शत्रु चोर नृप आदिकोंसे अत्यंत भय हो, महाज्वर, कृमिपीडा हो ॥ ८५ ॥ शनिकी अन्तर्दशा ८।२६।४०।०। मंगलके अन्तर शनिकी दशा हो तो धनक्षय, निरन्तर महादुःख हो, सदा विपत्ति रहे ॥ ८६ ॥ गुरुकी अंतर्दशा १६।२६।४०।०। मंगलके अन्तर बृहस्पतिकी दशा हो तो धनलाभ, तीर्थयात्रालाभ, देव ब्राह्मणका पूजन, राजासे कुछ भय हो ॥ ८७ ॥ राह्वन्तर्मासादि १०।२०।०।० भौमके अन्तर राहुकी दशा हो तो शस्त्र, चोर, अग्निसे भय हो, खेती, स्त्री, धन इनकी बाधा हो, जहां तहां भय भंग हो ॥८८॥ शुक्रान्तर्मासादि १८।२०।०।०। मंगलके अन्तर शुक्रकी दशा हो तो व्याधि हो, शत्रुसे भय, धनका नाश, उपद्रव हो, विदेशमें गमन हो ॥ ८९ ॥ रव्यन्तर्दशामासादि

आरोग्यं सर्वतो भद्रं राजपूजा जयोत्सवः॥जायतेऽ-
त्र धनप्राप्तिर्भौमस्यांतर्गते रवौ ॥ ९० ॥ चन्द्रांतर्द-
शामासाद्याः १३।१०।०।०। नानावृत्तिसमुत्पन्नमणि-
मुक्तासमृद्धिमान् ॥ जायते मनुजो नित्यं भौमस्यां-
तर्गते विधौ ॥ ९१ ॥

अथ बुधमहादशावर्ष १७ फलम्।

नानाविधैरर्थसुखैः समेतो दिव्यांगनाकेलियुतो
विलासी ॥ सर्वार्थसिद्धिर्बहुमानितोऽत्र महादशायां
मनुजो बुधस्य ॥ ९२ ॥

अथ बुधमहादशायामंतर्दशाः।

बुधमहादशायां बुधांतर्दशामासाद्याः ३२।३।२०।०
बुद्धिः कर्मानुरागश्च मित्रबंधुसमागमः ॥ शत्रूद्गमो
देहपीडा बुधस्यांतर्गते बुधे ॥ ९३ ॥ शन्यंतर्दशामा-

९।१०।०।०। मंगलके अन्तरमें सूर्यकी दशा हो तो आरोग्य
सब बातका आनंद, राजासे पूजा, जय, उत्सव, धनकी प्राप्ति होती
है ॥ ९० ॥ चंद्रान्तर्दशामासादि १३।१०।०।०। मंगलके
अन्तर चंद्र हो तो अनेक आजीविका हो, मणि मोती आदिकोंकी
समृद्धि हो ऐसा मनुष्य होवे ॥ ९१ ॥

अथ बुध महादशावर्ष १७ फल। बुधकी महादशामें मनुष्य अनेक
धन और सुखयुक्त हो, दिव्य स्त्रीसे रमण करे, सब प्रयोजन सिद्ध
करे, बहुत मान पावे ॥ ९२ ॥

बुधकी महादशामें पहले बुधकी अन्तर्दशाके मास३२।३।२०।०।
बुधके अन्तर बुधकी दशा आवे तो बुद्धि हो,काम करनेमें प्रीति,मित्र,
बंधुओंका समागम, शत्रु उठे, देहमें पीडा हो॥९३॥शनिकी अन्त-

साद्याः १८।२६।४०।०। अकस्माच्छत्रुसंसर्गो ह्यकस्मादर्थसंग्रहः॥संपर्कोऽग्निगरादीनां बुधस्यांतर्गते शनौ ॥ ९४ ॥ गुर्वंतर्दशामासाद्याः ३५ । २६ । ४०।०।स्वर्णादिधातुलाभश्च शरीरारोग्यमेव च ॥ संपत्तिर्धर्मलाभश्च बुधस्यांतर्गते गुरौ ॥९५॥ राह्वंतर्दशामासाद्याः २३।२०।०।०। प्रचंडसाहसत्वं च नानाकार्यरणोद्यमः॥धनधर्मादिलाभश्च बुधस्यांतर्गते त्वगौ ॥ ९६ ॥ भृग्वंतर्दशामासाद्याः ३९।२०।०।०। गुरुदेवार्चने प्रीतिर्ज्ञानधर्मरतिस्तथा ॥ वस्त्रालंकरणैर्युक्तो बुधस्यांतर्गते सिते ॥ ९७ ॥ रव्यंतर्दशामासाद्याः ११ । १० । ० । ० ।व्याधिशत्रुभयैर्मुक्तः पुत्रधर्मधनागमः॥जायते राजमान्योऽत्र बुधस्यांतर्गते

र्दशा १८।२६।४०।०। है। बुधके अंतर शनिकी दशा हो तो अचानकसे शत्रुओंके संग मिलना हो, द्रव्य संग्रह हो, अग्नि, विष आदिकोंका संग्रह होना ॥ ९४ ॥ बृहस्पतिके अंतर्दशामासादि ३५।२६।४०।०।है। बुधके अंतर बृहस्पतिकी दशा हो तो सुवर्णादि लाभ हो, शरीरमें आरोग्य रहे, सम्पत्ति हो, धर्मका लाभ हो ॥ ९५ ॥ राहुके अंतर्दशामासादि २३।२०।०।०। बुधके अन्तर राहु हो तो प्रचंड बल बढै, अनेक कार्य और युद्धमें उद्यम हो, धन धर्मादिकोंका लाभ हो ॥ ९६ ॥ भृगु० । ३९ । २०।०।०। बुधके अन्तर शुक्रकी दशा हो तो गुरु देवार्चनमें प्रीति, ज्ञान, धर्ममें रमण हो, वस्त्र आभूषणोंकी प्राप्ति हो ॥ ९७ ॥ सूर्य०। ११ । १०।०।०। बुधके अन्तर सूर्य आवे तो व्याधि और शत्रुके भयसे छूटे, पुत्र, धर्म, धनकी प्राप्ति हो, राजासे मान्य हो

रवौ ॥ ९८ ॥ चंद्रस्यांतर्दशामासाद्याः २८ । १० । ० । ० । क्षयरोगोऽत्र कुष्ठं च नानापीडा कलेवरे ॥ गलरोगयुतो लोको बुधस्यांतर्गते विधौ ॥ ९९ ॥ भौमांतर्दशामासाद्याः १५ । ३ । २० । ० । शिरोरोगी गंडरोगी नानाक्लेशैर्निपीडितः ॥ यमभीतिश्चौरभीतिर्बुधस्यांतर्गते कुजे ॥ १०० ॥ ६०० ॥

अथ शनिमहादशा वर्ष १० फलम् ।

मिथ्यापवादो विमुखोऽत्र बन्धुर्वधोऽर्थहानिश्च निराशता च ॥ कार्याणि शून्यानि सुतादिहानिः क्लेशा भवन्त्येव शनेर्दशायाम् ॥ १ ॥

अथ शनिमहादशायामंतर्दशाः ।

शनिमहादशामध्ये शन्यन्तर्दशामासाद्याः ११ । ३ । २० । ० । शरीरे जायते पीडा पुत्रदारैश्च विग्रहः ॥ विदेशगमनं हानिः शनेरंतर्गते शनौ ॥ २ ॥ गुर्वंतर्द-

॥ ९८ ॥ अथ चन्द्र० २८ । १० । ० । ० । बुधके अन्तर चंद्रमाकी दशा हो तो क्षयरोग, कुष्ठ, शरीरमें अनेक प्रकारकी पीडा हो, गलेके रोगसे युक्त रहै ॥ ९९ ॥ अथ भौम० १५ । ३ । २० । ० । बुधके अंतर मंगलकी दशा हो तो शिरोरोग, गलगंड, अनेक पीडा इनसे पीडित हो, यमसे भय अथवा चोरोंसे भय हो ॥ १०० ॥ ६०० ॥

अथ शनिमहादशा वर्ष १० फल । शनिकी दशामें मिथ्या विवाद, बन्धुसे विमुख, वध, द्रव्यकी हानि, आशा निष्फल हो, कार्य न हो, पुत्रादिकोंकी हानि, क्लेश होते हैं ॥ १ ॥

शनिमहादशामें शनिका अन्तर ११ । ३ । २० । ० शनिमें शनिका अन्तर हो तो शरीमें पीडा हो, पुत्र स्त्रियोंसे वैर हो, विदेशमें गमन हो, हानि हो ॥ २ ॥ अथ गुरु० २१ । ३ । २० । ०

शामासाद्याः २१।३।२०।०। देवगोब्राह्मणार्चात्र पुत्रमित्रधनागमः॥ प्राप्नोति च गुरुस्थानं शनेरंतर्गते गुरौ ॥ ३ ॥ राह्वन्तर्दशामासाद्याः १३।१०।०।०। ज्वरातिसारपीडा च शत्रुभीतिर्धनक्षयः ॥ शस्त्रघातः शरीरे स्याच्छनेरन्तर्गते त्वगौ ॥४॥ शुक्रांतर्दशामासाद्याः ।२३।१०।०।०। जायाधनसुतैर्युक्तो जायतेऽत्र जयान्वितः॥आयुरारोग्यमैश्वर्यं शनेरंतर्गते सिते ॥ ५ ॥ रव्यन्तर्दशामासाद्याः ६। २०।०।०। पुत्रमित्रकलत्राणां हानिश्चार्थस्य जायते ॥ संशयो जीवितस्यापि शनेरन्तर्गते रवौ ॥ ६॥ चंद्रांतर्दशामासाद्याः १६।२०।०।०। गोमहिष्यादिलाभाः स्युः स्त्रीलाभो विजयः सुखम्॥जायते कन्यकापत्यं शनेरंतर्गते विधौ ॥ ७ ॥ भौमांतर्दशामासाद्याः ८।२६।

शनिके अन्तरमें गुरुकी दशा आवे तो देवता, ब्राह्मणोंकी पूजा, पुत्र, धनकी प्राप्ति; बडे स्थानकी प्राप्ति हो ॥ ३ ॥ राहुके अन्तर्दशामासादि १३। १०।०।०। शनिके अन्तर राहु हो तो ज्वर अतिसारकी पीडा, शत्रुभय, धनक्षय हो, शरीरमें शस्त्राघात हो ॥ ४ ॥ शुक्रदशांतर्मासादि २३ । १० ।०।०। शनिके अन्तर शुक्रकी दशा आवे तो स्त्री, धन, पुत्रादिकोंसे युक्त हो, विजय पावे, आयु, आरोग्य और ऐश्वर्यवान् हो ॥ ५ ॥ सूर्यान्तर्दशा ६ । २० । ०।०। शनिके अन्तर सूर्यकी दशा हो तो पुत्र,मित्र,स्त्री इनकी हानि हो, जीनेका भी सन्देह हो॥ ६ ॥ अथ चन्द्रान्तर्दशा ०१६।२०।०।०। शनिके अन्तरमें चन्द्रमाकी दशा हो तो गौ, भैंसा आदि लाभ हो, स्त्रीलाभ, विजय, सुख हो, कन्या सन्तान हो ॥ ७ ॥ भौमान्तर्दशा,०

४०।०। देशत्यागो धनत्यागो रोगः शत्रुसमागमः।
जायतेऽत्र महाभीतिः शनेरन्तर्गते कुजे ॥८॥ बुधांत-
र्दशामासाद्याः १८। २६। ४०। ०। धनप्राप्तिश्च
बन्धुभ्यः सौभाग्यं विजयः सुखम्॥सभायां मान्यतां
विंद्याच्छनेरन्तर्गते बुधे ॥ ९ ॥

अथ गुरुमहादशावर्ष १९ फलम्।

धर्मार्थकामैः परिपूरितोऽत्र राजप्रतापैर्विनयैःसमेतः॥
धनी जयी दारसुतादियुक्तो गुरोर्दशायां च नरो
निरोगी ॥ १० ॥

अथ गुरुमहादशायामंतर्दशाः।

गुरुमहादशायां गुर्वंतर्दशामासाद्याः ४०।३।२०।०।
पुत्रोत्पत्तिर्धनाप्तिश्च सर्वरत्नपरिग्रहः ॥ जायते
धर्मलाभश्च गुरोरंतर्गते गुरौ ॥ ११ ॥ राह्वंतर्द-

८।२६।४०।०।शनिके अन्तरमें मंगलकी दशा आवै तो देशत्याग, धनत्याग, रोग, शत्रु समागम हो महाभय हो ॥ ८॥ बुधकी अन्त-र्दशा० १८।२६।४०।०।शनिके अन्तर बुध हो तो बन्धुओंसे धनकी प्राप्ति हो, सौभाग्य, विजय, सुख हो, सभामें मान्यता हो ॥ ९ ॥

अथ गुरुमहादशावर्ष १९ फलम्। बृहस्पतिकी दशामें धर्म, अर्थ, कामसे परिपूर्ण रहै, राजप्रताप, विनयसे युक्त हो, धनी, विजयी, स्त्री, पुत्रादि युक्त हो, निरोगी हो ॥ १० ॥

गुरुकी महादशामें गुरुकी अन्तर्दशा०।मास४० दिन ३।२०।०। बृहस्पतिकी दशामें बृहस्पतिकी ही अन्तर्दशा आवै तो पुत्रकी उत्पत्ति, धनकी प्राप्ति, सर्व रत्नोंका संग्रह हो, धर्मका लाभ हो॥११॥ राहुकी

शामासाद्याः२९। १०। ०। ०। विस्फोटकादिमोहश्च शोको रोगो धनक्षयः॥ शत्रूणां च भयं विद्याद्गुरोरंतर्गते त्वगौ ॥१२॥ शुक्रांतर्दशामासाद्याः४४। १०।०।० कलहो मानसी पीडा वित्तनाशो महाभयम्॥जायते स्त्रीवियोगश्च गुरोरंतर्गते भृगौ॥१३॥ रव्यंतर्दशामासाद्याः १२। २०। ०। ० निर्भयः शत्रुनाशोऽत्र नृपपूजा महत्सुखम्॥प्रचंडैःसह संगश्च गुरोरंतर्गते रवौ ॥१४॥ चन्द्रांतर्दशामासाद्याः ३१। २०।०।०। बहुस्त्रीसंगमक्षीणः शत्रुपीडाविवर्जितः ॥ कन्यकापत्यलाभश्च गुरोरंतर्गते विधौ ॥ १५ ॥ भौमांतर्दशामासाद्याः १६। २६। ४०।०। रिपुनाशो धनप्राप्तिः सर्वकार्यसमागमः ॥ सुखं सौभाग्य-

अन्तर्दशा २९। १०। ०। ०। बृहस्पतिके अन्तर राहुकी दशा हो तो विस्फोटकादि बीमारी, मोह, शोक, रोग, धनक्षय हो, शत्रुओंका भय हो ॥ १२ ॥ शुक्रान्तर्दशा० । ४४। १०। ०।०। बृहस्पतिके अन्तर शुक्रकी दशा हो तो क्लेश हो, मानसी पीडा हो, द्रव्यनाश हो, महाभय हो, स्त्रीका वियोग हो ॥ १३ ॥ सूर्यकी अन्तर्दशा० १२। २०। ०। ०। गुरुकी दशामें सूर्य आवे तब निर्भय, शत्रुका नाश, राजासे पूजा, महासुख हो, क्रोधी (क्रूर) जनोंके साथ संयोग रहे ॥ १४ ॥ चन्द्रान्तर्दशा० ३१। २०। ०। ०। बृहस्पतिके अन्तर चन्द्रमाकी दशा हो तो बहुत स्त्रियोंसे संग हो, क्षीणता हो, शत्रुकी पीडा नहीं हो, कन्याकी संतान हो ॥ १५ ॥ मंगलकी अन्तर्दशा० १६। २६। ४०। ०। बृहस्पतिके अन्तर मंगलकी दशा हो तो शत्रुनाश, धनकी प्राप्ति, सब कार्यमें

मारोग्यं गुरोरंतर्गते कुजे ॥ १६ ॥ बुधांतर्दशामासाद्याः ३९। २६ ।४०।०। बुद्धिविज्ञानकौशल्यं धनबंधुसमागमः ॥ गुरुदेवाग्निभक्तिश्च गुरोरंतर्गते बुधे ॥१७॥शन्यंतर्दशामासाद्याः२१।३।२०।०।०। वेश्यास्त्रीद्यूतमद्यैश्च धनधान्यादिसंक्षयः॥जायते लुप्तधर्मोऽत्र गुरोरंतर्गते शनौ ॥ १८ ॥

अथ राहुमहादशावर्ष१२ फलम्।

ज्ञानस्य हानिर्गमनं विदेशे धर्मस्य हानिर्विविधाश्च रोगाः॥ सर्वत्र शून्यं तनुसंशयश्च राहोर्दशायां नियतं नरस्य ॥ १९ ॥

अथ राहुमहादशायामन्तर्दशाः।

राहुमहादशायां राह्वंतर्दशामासाद्याः१६।०।०।०। द्विजेन्द्रैः सह संसर्गः स्त्रीलाभो धनसंचयः॥ कलहो

समागम, सुख, सौभाग्य, आरोग्य हो ॥ १६ ॥ बुधकी अन्तर्दशा० ३९।३६।४०।०। बुद्धिकी निपुणता, चतुराई, धन, बन्धुओंका समागम, गुरु, देवताकी भक्ति हो ॥ १७॥ शनिकी अन्तर्दशा० २१।३।२०।०। बृहस्पतिमें शनिका अन्तर हो तो वेश्या, स्त्री, जूवा, मदिरा इन करके धन धान्यादि नष्ट हों, धर्मका लोप हो॥१८॥

अथ राहुकी महादशावर्ष १२ फलम्। मनुष्योंको राहुकी महादशा जब आवे तब ज्ञानकी हानि हो, विदेशमें गमन हो, धर्मकी हानि हो, अनेक प्रकारके रोग हों, सब जगह हानि हो, शरीरमें संदेह हो ॥ १९ ॥

राहुकी महादशामें राहुकी अंतर्दशा मा० १६ दिन ०।०।०। राहुमें

बंधुभिःसार्द्धं राहोरन्तर्गते त्वगौ ॥ २० ॥ शुक्रांतर्दशामासाद्याः २८ । ०।०।०। धर्मिष्ठः सत्यवादी च धनी रोगविवर्जितः॥जायते राजमान्यश्च राहोरन्तर्गते सिते ॥ २१ ॥ रव्यन्तर्दशामासाद्याः८ । ०। ०।०। पुत्रदुःखं महाभीतिर्धननाशो महाव्यथा॥अग्निचौरभयं क्वापि राहोरंतर्गते रवौ॥२२॥ चन्द्रान्तर्दशामासाद्याः २० । ० । ० । ० । स्त्रीनाशो धननाशश्च कलहो बांधवैःसह॥महद्भयमवाप्नोति राहोरन्तर्गते विधौ२३॥ भौमांतर्दशामासाद्याः १० । २० । ० । ० । विषशस्त्राग्निचोरेभ्यो भयं प्राप्नोति दारुणम् ॥ संशयो जीवनस्यापि राहोरंतर्गते कुजे॥२४॥ बुधांतर्दशामासाद्याः २२ । २० । ० । ० । सुहृद्बंधुजनैर्योगो धनधान्य-

राहुका अंतर आवे तो ब्राह्मणोंके साथ समागम हो, स्त्रीका लाभ हो, धनसंचय हो, बंधुओंके साथ क्लेश हो ॥ २० ॥ शुक्रकी अन्तर्दशा० २८। ० । ० । ० । राहुमें शुक्रकी अन्तर्दशा आवे तो धर्म करनेवाला, सत्यवादी, धनी, रोगरहित, राजमान्य होवे ॥ २१ ॥ अथ सूर्यकी अंतर्दशा०८।०।० । ० । राहुके अंतरमें सूर्यकी दशा आवे तो पुत्रका दुःख, महाभय हो, धननाश, महाव्यथा हो, कभी अग्नि वा चोरसे भय हो ॥ २२ ॥ अथ चंद्रान्तर्दशा २०।०।०।०। राहुके अंतरमें चंद्रमाकी दशा आवे तो स्त्रीनाश, धननाश, बंधुओंके साथ क्लेश, महान् भय हो ॥ २३ ॥ अथ भौमांतर्दशा १०। २० । ०।० । राहुके अंतरमें मंगलकी दशा आवे तो विष, शस्त्र, अग्नि, चोरसे दारुण भय हो, जीवनेका भी संदेह हो जावे ॥ २४ ॥ अथ बुधान्तर्दशा० २२ । २० । ० । ० । राहुके अंतरमें बुधकी दशा आवे तो मित्र बंधुजनोंसे मेल

सुखागमः॥न कश्चिज्जायते क्लेशो राहोरंतर्गते बुधे२५॥ शन्यंतर्दशामासाद्याः १३।१०।०।०। स्वदेशस्य परित्यागः कुटुम्बैःसह संगमः॥भृत्यार्थयोस्तथा नाशो राहोरंतर्गते शनौ ॥ २६ ॥ गुर्वंतर्दशामासाद्याः २५। १०।०।०। रोगहानिर्दुःखनाशो देवब्राह्मणपूजनम् ॥ धनधान्यसमृद्धिश्च राहोरंतर्गते गुरौ ॥ २७ ॥

अथ शुक्रमहादशावर्ष २१ फलम् ।

भूपालमान्यो धनधान्यपूर्णो हस्त्यश्वयुक्तः प्रमदानुरक्तः॥ मंत्रप्रयोगे निपुणश्च शास्त्रे कवेर्दशायां कुशली मनुष्यः ॥ २८ ॥

अथ शुक्रमहादशायामंतर्दशाः ।

शुक्रमहादशायां भृग्वन्तर्दशामासाद्याः ४९।०।०।०। मानवृद्धिः सुतोत्पत्तिर्धनधान्यागमः सुखम् ॥ स्वर्णा-

हो, धन धान्य सुखकी प्राप्ति हो, कोई दुःख न हो ॥२५॥ अथ शन्यन्तर्दशा० १३। १०।०।०। राहुमें शनिकी अंतर्दशा आवे तो अपने देशका त्याग, कुटुंबके जनोंका समागम हो, द्रव्य और भृत्योंका नाश हो ॥ २६ ॥ अथ गुरुकी अन्तर्दशा २५। १०।०।०। राहुमें बृहस्पतिकी अंतर दशा आवे तो रोगकी हानि, दुःखनाश, देवता, ब्राह्मणोंका पूजन, धन धान्यकी समृद्धि हो ॥ २७ ॥

अथ शुक्रमहादशावर्ष २१ फलम् । शुक्रकी दशा आवे तो राजासे मान्य, धन धान्यसे परिपूर्ण, हस्ती घोड़ोंसे युक्त, स्त्रीमें स्नेह (प्रीति) युक्त, मंत्र प्रयोग, शास्त्रमें निपुण हो ॥ २८ ॥

शुक्रकी अंतर्दशामें पहिले शुक्रकी अन्तर्दशा मास ४९। दिन०।०।०

म्बरादिलाभोऽत्र शुक्रस्यांतर्गते कवौ ॥ २९ ॥ रव्य-न्तर्दशामासाद्याः १४। ०। ०। ०। शत्रुनाशो जयो नित्यं नृपलाभो महासुखम् ॥ प्रचण्डैः सह संसर्गः शुक्रस्यांतर्गते रवौ ॥ ३० ॥ चन्द्रान्तर्दशा मासाद्याः ३५। ०।०।०। गुरुदेवाग्निभक्तोऽत्र दुःखमल्पं सुखं तथा ॥ शत्रुमित्रजनैर्योगः शुक्रस्यां-तर्गते विधौ ॥ ३१ ॥ भौमांतर्दशामासाद्याः। १८। २०। ०। ०। संग्रामेऽत्र रिपूञ्जित्वा धनं कीर्तिश्च लभ्यते ॥ आरोग्यं सुखमैश्वर्यं शुक्रस्यान्तर्गते कुजे ॥ ३२ ॥ बुधांतर्दशामासाद्याः ३९। २०।०।०। नखरोगः शिरोरोगो दुःखमामाशयोद्भवम् ॥ शरीरे जायतेऽत्यंतं शुक्रस्यान्तर्गते बुधे॥३३॥ शन्यंतर्दशा-

हो।शुक्रमें शुक्रकी दशा हो तो मान बढ़ै, पुत्र उत्पन्न हो, धन धान्यका आगमन, सुख हो, सुवर्ण वस्त्रादिकोंका लाभ हो ॥ २९ ॥ सूर्यकी अन्तर्दशा १४। ०। ०। शुक्रके अन्तर सूर्य आवे तो शत्रुनाश, नित्य जय हो, राजासे लाभ, महासुख हो, बलवान् जनोंके साथ समागम हो ॥ ३० ॥ चन्द्रान्तर्दशा ३५। ०। ०। ०। शुक्रमें चन्द्रमाकी दशा आवे तो गुरु, देवता, अग्निका भक्त हो, दुःख हो, कछुक सुख भी हो, शत्रु और मित्रजनोंके साथ संयोग हो ॥ ३१॥ भौमान्तर्दशा० १८।२०।०। ०। शुक्रमें मंगलकी दशा आवे तो युद्धमें शत्रु-ओंको जीतके धन कीर्त्तिको प्राप्त हो, आरोग्य, सुख, ऐश्वर्य मिले ॥ ३२ ॥ बुधान्तर्दशा० ३९। २०। ०। ०। शुक्रके अंतरमें बुधकी दशा आवे तो नखरोग, शिरोरोग, आमाशयका दुःख हो, शरीरमें अत्यन्त पीडा हो ॥ ३३ ॥ शन्यन्तर्दशा० २३। १०।०।०।

मासाद्याः २३ । १० । ० । ० । वृद्धस्त्रीभिश्च संसर्गः सुखं चार्थागमस्तथा ॥ शत्रुनाशः सुहृल्लाभः शुक्रस्यांतर्गते शनौ ॥ ३४ ॥ गुर्वंतर्दशामासाद्याः ४४ । १० । ० । ० । धनधान्यसमृद्धिश्च नानाधर्मसुतान्वितः ॥ सेनाप्रभुत्वमाप्नोति भृगोरन्तर्गते गुरौ ॥ ३५ ॥ राह्वन्तर्दशामासाद्याः २८ । ० । ० । ० । वैरं विषादं दुःखं च सदोद्वेगो महाभयम् ॥ कदाचित्सुखमाप्नोति कवेरन्तर्गते त्वगौ ॥ ३६ ॥ इत्यष्टोत्तरीदशांतर्दशाफलम् ॥

अथ विंशोत्तरीदशाः ।

स्फुटमायुर्हतं खेटमानेन विभजेत्ततः ॥ परमायुः १२० प्रमाणेन दशाश्चांतर्दशाः स्मृताः॥३७॥षडा-

शुक्रके अन्तर शनिकी दशा आवे तो वृद्ध स्त्रियोंके साथ मिलाप, सुख, द्रव्यकी प्राप्ति हो, शत्रुनाश, मित्रजनोंका लाभ हो ॥ ३४ ॥ गुरुकी अन्तर्दशा० ४४।१०।०।०। शुक्रके अन्तर बृहस्पतिकी दशा आवे तो धन धान्यकी समृद्धि हो, अनेक धर्म और पुत्रसे युक्त हो, सेनाका पति हो ॥ ३५ ॥ राहुकी अन्तर्दशा ० २८ । ० । ० । ० । शुक्रमें राहुकी अन्तर्दशा आवे तो वैर, विषाद, दुःख, सदा उद्वेग, महाभय हो, कभी सुख भी प्राप्त होजावे ॥ ३६ ॥ इत्यष्टोत्तरीदशान्तर्दशाफलम् ॥

अथ विंशोत्तरी दशा । तहां जिस ग्रहकी अन्तर्दशा देखनी हो उसके वर्ष और महादशाके वर्षका गुणन कर १२० का भाग देके वर्षादिक कहै । भाग न लगे तो बारहसे गुणा करके फिर १२० का भाग देय, लब्ध मास जानै शेषको तीससे गुणनकर फिर भाग देके दिन कहै । इसी क्रमसे अन्तर्दशा निकालै ॥३७॥ सूर्यकी महादशा ६

६ दित्ये दशे १० न्दौ च सप्तवर्षाणि ७ मंगले॥अष्टा-
दशसमा १८ राहौ षोडशाब्दा १६ बृहस्पतौ॥३८॥
एकोनविंशति १९ मंदे बुधे सप्तदशैव १७ तु॥सप्त-
वर्षाणि ७ केतौ च विंशतिर२० भार्गवे स्मृता ॥३९॥
कृत्तिकामवधिं कृत्वा भरणीं चादि गण्यते॥कृत्तिका-
दित्रिरावृत्त्या सूर्यादिर्गणयेत्क्रमात्॥४०॥ रविःशशी
कुजो राहुर्जीवो मन्दो बुधःशिखी॥शुक्रोऽग्निभाद्युफा-
भादिविश्वर्क्षादि नवेश्वराः ॥ ४१ ॥

अत्र विंशोत्तर्यामप्यष्टोत्तर्युक्तमहादशाफलानि रव्या-
दीनां ज्ञयानि ॥ तत्र केतुदशाया अभावात्केतुदशां-
तर्दशाफलानि लिख्यंते ॥

अथ केतुमहादशावर्ष ७ फलम् ।

लक्ष्मीविनाशो वनितार्थहानिः शरीरपीडा नृपमान-

वर्ष, चन्द्रमाकी दश वर्ष, मंगलकी सात ७ वर्ष, राहुकी अठारह १८ वर्ष, बृहस्पतिकी सोलह १६ वर्ष है ॥ ३८ ॥ शनिकी उन्नीस १९ वर्ष, बुधकी सतरह १७ वर्ष है, केतुकी सात वर्ष, शुक्रकी बीस २० वर्ष है ॥ ३९ ॥ कृत्तिकासे भरणीतक गिने कृत्तिका आदि तीन आवृत्ति करके सूर्य आदि ग्रहोंको क्रमसे गिने ॥ ४० ॥ जैसे सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, राहु, बृहस्पति, शनि, बुध, केतु, शुक्र ये ग्रह हैं तहां कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा इनपर हो तो सूर्य, इसी तरह नवग्रहोंके जानने ॥ ४१ ॥

यह विंशोत्तरी दशामें भी अष्टोत्तरी महादशा अन्तर्दशाका फल जानना, तहां केतुकी दशाका अभाव है इसलिये केतुकी दशांतर्दशाके फल लिखते हैं—अथ केतुमहादशावर्ष ७ फलम् । केतुकी दशा हो तो

भंगः ॥ प्रियैः कुटुम्बैश्च भवेद्वियोगः केतोर्दशायां सततं च तापः ॥ ४२ ॥

अथ केतुमहादशायामन्तर्दशाः।

तत्रादौ केतुमहादशायां केत्वंतर्दशामासाद्याः ४ । २७।०।०। पुत्रनाशोऽर्थनाशश्च दुष्टनारीजनैः कलिः॥ राजभीः शत्रुकलहः केतोरन्तर्गते ध्वजे ॥ ४३ ॥ शुक्रांतर्दशामासाद्याः १४ । ० ।०। ० । स्त्रीवियोगो वह्निदाहःकन्याजन्म तथा ज्वरः॥ मित्रैःसहैव कलहः केतोरंतर्गते भृगौ ॥४४॥ रव्यंतर्दशामासाद्याः४।६।० ०। अग्निदाहो ज्वरो घोरो विदेशगमनं तथा ॥ जायते क्षयरोगश्च केतोरंतर्गते रवौ ॥ ४५ ॥ चन्द्रांतर्दशामासाद्याः ७।०।०।०। अर्थलाभोऽर्थहानिश्च सुखं दुःखं क्वचित् क्वचित् ॥ स्त्रीलाभश्चापि भवति केतोरंतर्गते

लक्ष्मीनाश, स्त्रीहानि, शरीरपीडा, राजासे मानभंग हो, प्रिय और कुटुम्ब जनोंके साथ वियोग हो ॥ ४२ ॥

अथ केतुकी अन्तर्दशा। केतुमें केतुकी दशा मास ४ दिन २७।०। ०। है। केतुमें केतुकी अन्तर्दशा हो तो पुत्रनाश, द्रव्यनाश, दुष्ट स्त्रियोंके साथ क्लेश, राजभय, शत्रुसे कलह हो ॥ ४३ ॥ शुक्रकी अंतर्दशा० १४ ।०।०।०। केतुमें शुक्रकी दशा आवे तो स्त्रीसे वियोग, अग्निदाह, कन्याका जन्म हो, ज्वर हो,मित्रोंके साथ क्लेश हो ॥४४॥ सूर्यकी, अन्तर्दशा ४ । ६ । ० । ० । केतुमें सूर्यकी अन्तर्दशा आवे तो अग्निदाह, घोरज्वर, विदेशमें गमन हो, क्षयरोग हो ॥ ४५ ॥ चन्द्रान्तर्दशा ०। ७ । ० । ० । ० । केतुमें चन्द्रमाकी दशा आवे तो द्रव्यलाभ, कभी कभी द्रव्यहानि, सुख दुःख, स्त्रीलाभ हो ॥ ४६ ॥

विधौ॥४६॥भौमांतर्दशामासाद्याः४।२७।०।०।गोत्रजैः सह संवादो वह्निचोरभयं तथा॥शरीरे जायते पीडा केतोरंतर्गते कुजे॥४७॥ राह्वंतर्दशामासाद्याः १२। १८।०।०। चौरभीतिर्देहभंगः कुमित्रैः सह संगतिः॥ कलहः शत्रुभिः साकं केतोरंतर्गते त्वगौ॥४८॥ गुर्वंतर्दशामासाद्याः । ११।६।०।०। राजमान्यैर्जनैर्योगो द्विजेन्द्रैश्च सुखागमः ॥ भूमि लाभः पुत्रलाभः केतोरंतर्गते गुरौ ॥४९॥ शन्यंतर्दशामासाद्याः१३।९।०।० वातपित्तकृता पीडा स्वजनैःसह विग्रहः॥ देहपीडा भवेन्नित्यं केतोरंतर्गते शनौ॥५०॥बुधांतर्दशामासाद्याः ११।२७।०।०सुहृद्बंधुसमायोगो भूनिमित्तं च विग्रहः। सदा शरीरपीडा स्यात्केतोरन्तर्गते बुधे ॥ ५१ ॥

भौमान्तर्दशा ० मास ४ । २७ । ० । ० केतुमें मंगलकी दशा हो तो गोत्री बन्धुओंसे संवाद, अग्नि और चोरका भय, शरीरमें पीडा हो ॥ ४७ ॥ राहुकी अन्तर्दशा० १२ । १८ । ० । ० केतुमें राहुकी अन्तर्दशा आवे तो चोरसे भय, देहभंग, कुमित्र जनोंसे समागम, शत्रुओंके संग कलह हो ॥ ४८ ॥ गुरुकी अन्तर्दशा० ११ । ६ ० । ० । केतुके अन्तर बृहस्पति हो तो राजासे मान्य जनोंके साथ संयोग हो, ब्राह्मणोंसे समागम हो. भूमिलाभ तथा पुत्रलाभ हो ॥ ४९ ॥ शनिकी अन्तर्दशा० १३।९ ।०।० । केतुमें शनिकी अन्तर्दशा आवे तो वात, पित्तकी पीडा, स्वजनोंके साथ लडाई, नित्य देहमें पीडा हो ॥ ५० ॥ बुधकी अन्तर्दशा० ११ । २७ । ० । ० । केतुमें बुधकी अन्तर्दशा आवे तो मित्र और बन्धुजनोंसे समागम हो, पृथ्वीके वास्ते लडाई हो, शरीरमें सदा पीडा रहे ॥ ५१ ॥

अथ रव्यादिग्रहमहादशासु केत्वंतर्दशाफलानि।

तत्रादौ रविमहादशायां केत्वंतर्दशामासाद्याः४।६।०।०। देशत्यागो बन्धुनाशो धननाशःसुतक्षयः॥ सर्वत्रैवाशुभं प्रोक्तं सूर्यस्यांतर्गते ध्वजे॥ ९२॥ चन्द्रमहादशायां केत्वंतर्दशामासाद्याः ७।०।०।०। चलचित्तोऽर्थनाशश्च रोगो बंधुजनक्षयः॥ जायते दुःखमेवात्र चंद्रस्यांतर्गते ध्वजे॥ ९३॥ भौममहादशायां केत्वंतर्दशामासाद्याः ४।२७।०।०। विषशस्त्राग्निचौरेभ्यो जायतेऽत्र महद्भयम्॥ सदा नरः क्लेशभागी भौमस्यांतर्गते ध्वजे॥ ९४॥ राहुमहादशायां केत्वंतर्दशामासाद्याः॥ १२।१८।०।०। ज्वराग्निरिपुशस्त्रेभ्यो मृत्युरायाति सर्वदा॥जायते घोरदुःखं च राहोरंतर्गते ध्वजे॥ ९५॥ गुरुमहादशायां केत्वंत-

अथ रव्यादिग्रहमहादशासु केतुदशाफलम्॥ सूर्यकी महादशामें केतुकी अन्तर्दशा ४।६।०।०। सूर्यके अन्तर केतु हो तो देशत्याग, बन्धुनाश, पुत्रक्षय हो, सब जगह अशुभ फल हो॥ ९२॥ चन्द्रमध्ये केतु० ७।०।०।०। चद्रमामें केतुकी अन्तर्दशा हो तो चलचित्त, द्रव्यनाश, रोग हो, बन्धुजनोंका क्षय तथा दुःख हो॥ ९३॥ अथ भौममध्ये केतु० ४।२७।०।०। भौममें केतुकी अन्तर्दशा हो तो विष, शस्त्र, अग्नि, चोरोंसे भय हो, सदा क्लेश रहै॥ ९४॥ राहुमध्ये केतु दशा० १२।१८।०।०। राहुमें केतुकी अन्तर्दशा हो तो ज्वर अग्नि शस्त्रोंसे भय सदा हो, मृत्यु हो, घोर दुःख हो॥ ९५॥ गुरुमध्ये केतुदशा० ११।६।०।०।

र्दशामासाद्याः ११।६।०।०। पुत्रबंधुकृतोद्वेगो निजस्थानविवर्जितः ॥ गुरोरंतर्गते केतौ परिभ्रमणशीलवान् ॥ ५६ ॥ शनिमहादशायां केत्वंतर्दशामासाद्याः। १३।९।०।०। रक्तपित्तकृता पीडा कलहः स्वजनैः सह ॥ शनेरंतर्गते केतौ घोरदुःस्वप्नदर्शनम् ॥ ५७ ॥ अथ बुधमहादशायां केत्वंतर्दशामासाद्याः ११।२७।०।०। फलम्॥शोकदुःखाकुलो नित्यं शरीरे क्लेशसंयुतः ॥ भवत्येव न संदेहो बुधस्यांतर्गते ध्वजे ॥ ५८ ॥ केतुमहादशाफलं पूर्वमेव लिखितम् ॥ अथ केतुमहादशायां ७ वर्षे केत्वंतर्दशामासाद्याः ४।२७।०।०।फलं पूर्वमेव लिखितम्॥अथ शुक्रमहादशायां केत्वंतर्दशामासाद्याः १४। ०।०।० विदेशभ्रमणं नृणां रोगो मृत्युश्च संभवेत् ॥ सस्यकोशादिलाभोऽन्ते शुक्रस्यांतर्गते ध्वजे ॥५९॥

बृहस्पतिमें केतुकी दशा हो तो पुत्र बन्धुजनोंसे उद्वेग हो, अपने स्थानसे रहित हो, भ्रमता फिरे ॥ ५६ ॥ शनिमध्ये केतु० दशा १३ ९।०।० । शनिमें केतुकी दशा हो तो रक्तपित्तसे पीडा हो, स्वजनोंसे कलह हो, घोर बुरे सुपने आवें ॥ ५७ ॥ अथ बुधमध्ये केतु० ११।२७।०।०। फलम्। बुधमें केतुकी दशा आवे तो नित्यप्रती शोक दुःखसे पीडा हो, शरीरमें निश्चय दुःख हो ॥ ५८ ॥ केतुकी महादशाका फल पहले लिखदिया है, केतुमें केतुकी अन्तर्दशाका फल भी लिखचुके हैं। अथ शुक्रदशामध्ये केतु० मास १४।०।०। ०। शुक्रमें केतुकी दशामें विदेशमें भ्रमण हो, रोग तथा मृत्यु हो, अंतमें खेती, खजाना आदिका लाभ हो ॥ ५९ ॥

अथ वर्षदशाः ।

जन्मलग्नं समायुक्तं गतवर्षगणैश्च तत् ॥
हृतं द्वादशभिः शेषे ग्रहैर्वाच्यं शुभाशुभम् ॥ ६० ॥

अथ मासदशाः ।

विंशतिर्वासराः२०सूर्ये पंचाश ५० च्च निशाकरे ।
सप्तविंशति२७रंगारे सप्तपंचाश५७ दिन्दुजे ॥६१॥
त्रयस्त्रिंश ३३ च्च मन्दे स्युस्त्रिषष्टि६३श्च बृहस्पतौ ॥
विंशतिः २० सैंहिकेये च केतोरपि च विंशतिः २० ॥६२॥ सप्तति७०र्भृगुपुत्रे स्युर्ज्ञेया मासदशा बुधैः ॥
नामराशिं समारभ्य संक्रमावधि गण्यते ॥ ६३ ॥

अथ दिनदशाः ।

तिथिं वारं च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम् ॥
नवभि ९ स्तु हरेच्छेषं दिनग्रहदशोच्यते ॥ ६४ ॥

इति विंशोत्तरीग्रहक्रमेण दिनदशाः ॥

अथ वर्षदशा । जन्मलग्नमें गतवर्षोंको जोड बारहका भाग दे जो बाकी रहे उसही (लग्नसे) ग्रहों करके शुभाशुभ फल कहै ॥ ६० ॥

अथ मासदशा । बीस २० दिनतक सूर्यकी दशा, पचास ५० दिनतक चन्द्रमाकी दशा, सताईस २७ दिनतक मंगलकी दशा ॥६१॥ फिर तेतीस ३३ दिनतक शनिकी, तिरसठ ६३ दिनतक बृहस्पतिकी, बीस २० दिनतक राहुकी, बीस २० दिनतक केतुकी ॥ ६२॥ सत्तर ७० दिनतक शुक्रकी मासदशा पंडित जनोंने जाननी (इसका ऐसा क्रम है कि) नामराशिसे जन्मके सूर्यसे दशा प्रारम्भ होती है॥६३॥

अथ दिनदशा । तिथि वार नक्षत्र नामके अक्षर इनको इकठे कर नवका भाग दे बाकी रही दिनदशा जाननी ॥ ६४ ॥ यह विंशोत्तरी ग्रहक्रमसे दिनदशा होती है ॥

चैत्रादेर्द्विगुणामासा गताभिस्तिथिभिर्युताः॥सप्तभिश्च हरेद्भागं शेषाद्दिनदशाफलम् ॥६५॥ संपत्तिः कलहो लोकैरानंदः कालकंटकः ॥ धर्मस्तपश्च विजयो रविवारात्क्रमात्फलम् ॥ ६६ ॥

अथ क्रूरग्रहशुभग्रहदशाफलविचारः ।

क्रूरग्रहदशायां चेत्क्रूरस्यांतर्दशा यदा॥शत्रुयोगेभवेन्मृत्युर्मित्रयोगे च संशयः ॥६७॥ मंगलस्य दशायां चेच्छनेरंतर्दशा यदि॥म्रियतेऽत्र चिरंजीवी का कथा स्वल्पजीविनाम्॥६८॥क्रूरराशौ स्थितः पापः षष्ठे वा निधनेऽपि वा॥सितेन रविणा दृष्टः स्वपाके मृत्युदायकः॥६९॥लग्नस्याधिपतेः शत्रुर्लग्नस्यांतर्दशा यदा॥

अन्य प्रकार । चैत्र आदि महीनोंको दूना कर गत तिथि मिलाके सातका भाग दे बाकी दिनदशा जाननी ॥ ६५ ॥ संपत्ति १, लोगोंसे कलह २, आनन्द ३, कालकण्टक ४, धर्म ५, तप ६, विजय ७ यह फल रविवार क्रमसे जानना ॥ ६६ ॥

अथ क्रूरग्रह शुभग्रह दशाफलविचार । जो क्रूर ग्रहकी दशामें क्रूर ग्रहकी अन्तर्दशा हो तो शत्रु ग्रहके योग होनेसे मृत्यु हो, जो मित्र ग्रह योग हो तो सन्देह (दुःख हो) ॥ ६७ ॥ जो मंगलकी दशामें शनिकी अन्तर्दशा हो तो चिरंजीवी नर भी मरै, स्वल्प आयुवालोंकी तो क्या कथा है ॥ ६८ ॥ क्रूर ग्रहकी राशिपर स्थित हुआ पापग्रह छठे वा आठवें घरमें स्थित हो, शुक्र अथवा सूर्यसे देखा जाता हो तो अपनी दशामें मृत्यु करै ॥ ६९ ॥ लग्नके पति ग्रहकी शत्रु लग्नमें

करोत्यकस्मान्मरणं सत्याचार्येण भाषितम् ॥ ७० ॥
इति दशारिष्टम्॥दशायां बलवान्खेटः शुभैर्वा सन्निरीक्षितः॥सौम्याधिमित्रवर्गस्थोऽरिष्टभंगकरस्तदा॥७१॥
मूलपाकाधिनाथस्य वाचस्पतिदशा यदि ॥ बली शुभोऽथ विज्ञेयो रिष्टभङ्गस्तदा बुधः॥७२॥ शुभग्रहो ग्रहैर्युक्तो विजयी यदि जायते॥दशायां न भवेत्कष्टं स्वोच्चादिषु च संस्थितः॥७३॥ इति लग्नचन्द्रिकायां तृतीयः परिच्छेदः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थपरिच्छेदः ।

अथ रविद्विग्रहयोगाः ।

सू०चं०॥स्त्रीजितः कूटधर्मा च दुर्विनीतो दयादृढः ॥

स्थित हो और उसकी अन्तर्दशा हो तो शीघ्रही मृत्यु करै यह सत्याचार्यने कहा है ॥ ७० ॥ इति दशारिष्टफलम् ॥

दशामें बलवान् ग्रह हो अथवा शुभ ग्रहों करके शुभग्रह देखा जाता हो, शुभ ग्रह वा मित्रके वर्गमें स्थित हो तो उस ग्रहकी दशामें अरिष्टभंग हो ॥ ७१ ॥ मूलदशानाथकी दशामें जो बृहस्पतिकी दशा आजावे तो शुभ ग्रह ही बली जानना, उससे रिष्टभंग होता है ॥ ७२ ॥ शुभग्रह शुभग्रहोंसे युक्त हो तो विजय करै वह ग्रह उच्च आदि शुभ हो तो अरिष्ट न होवे ॥ ७३ ॥

इति श्रीवेरीपुरनिवासि-गौडवंशोद्भवद्विजशालग्रामात्मजपण्डितवसतिराम-विरचितलग्नचंद्रिकाभाषाटीकायां तृतीयः परिच्छेदः ॥ ३ ॥

अथ रविद्विग्रहयोगाः । जन्मकुण्डलीमें सूर्य चंद्रमाका योग हो तो स्त्रीजित, झूठा, नीतिरहित, दयामें दृढ, पराक्रमी, हलके चित्त-

विक्रमी लघुचेताश्च सूर्यचन्द्रसमागमे ॥ ७४ ॥ सू० मं०॥मिथ्यावादी च मूर्खश्च वधनिष्ठो बली नरः ॥ तेजस्वी पापचित्तश्च सूर्यभौमसमागमे ॥ ७५॥सू० बु०॥ विद्वानर्थी राजमान्यः सेवाशीलः प्रियंवदः ॥ यशस्वी चास्थिरद्रव्यः सूर्यसौम्यसमागमे ॥ ७६॥ सू० गु० ॥ नृपमान्यो धर्मनिष्ठो मित्रवानर्थवानपि॥ उपाध्यायोऽतिविख्यातो सूर्यजीवसमागमे ॥ ७७ ॥ सू० श० ॥ शस्त्रप्रहारी बन्धश्च रंगज्ञो नेत्रदुर्बलः ॥ स्त्रीसंगलब्धद्रव्यश्च शक्तोऽर्कभृगुसंगमे ॥ ७८ ॥ सू० शु० ॥ विद्वानात्मक्रियानिष्ठो गुणज्ञो वृद्धचेष्टितः ॥ प्रनष्टसुतदारश्च सूर्यमन्दसमागमे॥ ७९ ॥

अथ चन्द्रद्विग्रहयोगाः।

चं०मं०॥मृच्चर्मधातुशिल्पी च धनी शूरो रणे भवेत्॥

वाला हो ॥ ७४ ॥ सूर्य मंगलका योग हो तो मिथ्यावादी, मूर्ख, हिंसा करनेवाला, बली, पापाचित्तवाला हो ॥ ७५ ॥ सूर्य, बुधका योग हो तो विद्वान्, मतलबी, राजमान्य, सेवा करनेवाला, प्रिय बोलनेवाला, यशस्वी, अस्थिर द्रव्यवाला होता है ॥ ७६ ॥ सूर्य बृहस्पतिका योग हो तो राजासे मान्य, धर्मनिष्ठ, मित्रवान्, धनवान् हो, उपाध्याय (पढानेवाला) और अतिविख्यात हो ॥ ७७ ॥ सूर्य, शुक्रका समागम हो तो शस्त्रप्रहार करनेवाला, बांधनेवाला, रंग जाननेवाला, दुर्बल नेत्रवाला, स्त्रीसे द्रव्य प्राप्ति करनेवाला, समर्थ हो ॥ ७८ ॥ सूर्य शनिका समागम हो तो विद्वान्, आत्मक्रियामें निष्ठावाला, गुणज्ञ, वृद्धजनोंकी चेष्टा करनेवाला, पुत्रस्त्रीरहित हो॥७९ ॥ अथ चन्द्राद्विग्रहयोगाः । चंद्र, मंगलका योग हो तो मृत्तिका,

रक्तपीडातुरो नित्यं चन्द्रभौमसमागमे॥८०॥चं०बु०
स्त्रीसंमतःसुरूपश्च काव्येऽतिनिपुणो भवेत्।धनी गुणी
हास्यवक्रश्चंद्रसौम्यसमागमे ॥ ८१॥ चं०गु०॥देवद्वि-
जार्चासक्तश्च बंधुमानकरो धनी ॥ दृढप्रीतिःसुशीलश्च
चन्द्रजीवसमागमे।८२।चं०शु०॥कुशली विक्रयादौ च
वृद्धिज्ञःकलहप्रियः।माल्यवस्त्रादिसंयुक्तःशशिभार्गव-
संगमे।८३।चं०श०॥गजाश्वपालो दुःशीलो वृद्धस्त्री-
रमणो नरः॥वेश्याधनोऽनपत्यश्च चंद्रमंदसमागमे ८४

अथ भौमद्विग्रहयोगाः।

मं०बु०॥स्त्रीदुर्भगः क्रयप्रीतिः स्वर्णलोहप्रकारकः ॥
निर्धनो विधवाभर्ता भूपुत्रबुधसंयुतौ॥८५॥मं०गु०॥

चर्म, धातु इनकी कारीगरी करनेवाला, धनी, रणमें शूरवीर हो, नित्यप्रति रक्तकी पीडासे व्याकुल रहै ॥ ८० ॥ चंद्रमा बुधका समागम हो तो स्त्रीसे माना हुआ, सुन्दर रूपवाला, कवितामें अत्यन्त निपुण हो, धनी, गुणी, हास्य मुखवाला हो ॥ ८१ ॥ चन्द्र, गुरुका समागम हो तो देवता ब्राह्मणोंकी पूजामें तत्पर, बंधुओंका मान करनेवाला, धनी, दृढ प्रीतिवाला हो, सुन्दर स्वभाववाला हो ॥ ८२ ॥ चंद्रशुक्रका योग हो तो बेचने आदि व्यवहारमें चतुर, वृद्धिको जाननेवाला, कलह करनेवाला होता है, माला और वस्त्रादिकोंसे युक्त हो ॥ ८३ ॥ चन्द्र शनिका योग हो तो हस्ती, अश्व आदि पालनेवाला, दुष्ट स्वभाववाला, वृद्ध स्त्रीसे रमण करनेवाला हो, वेश्याकोही धन समझनेवाला, सन्तानरहित होता है ॥ ८४ ॥

अथ भौमद्विग्रहयोगाः। मंगल बुधका योग हो तो दुर्भगा स्त्रीवाला, खरीदनेका व्यवहार करनेवाला, सुवर्ण लोहकी कारीगरी करनेवाला, निर्धन, विधवापति (संभोग करनेवाला) हो ॥ ८५ ॥ मंगल गुरुका

मेधावी शिल्पशास्त्रज्ञःश्रुतिज्ञो वाग्विशारदः॥ अश्व-
प्रियप्रधानश्च भौमजीवसमागमे ॥ ८६ ॥ मं०
शु० ॥ गुणप्रधानो निपुणो द्यूतेऽनृतरतः शठः ॥
परदाररतो मान्यो भौमशुक्रसमागमे ॥ ८७ ॥ मं०
श० ॥ वाग्मीन्द्रजालदक्षश्च विधर्मा कलहप्रियः ॥
विषमद्यप्रपंचाढ्यो भौममंदसमागमे ॥ ८८ ॥

अथ बुधद्विग्रहयोगाः ।

बु०गु०॥धैर्ययुक्तः पंडितश्च सुखी भवति मानवः॥
नृत्ये वाद्ये च कुशलो बुधजीवसमागमे ॥ ८९ ॥
बु० शु० ॥ धनी सुवाक्यो वेदज्ञो गीते हास्ये च
लालसः॥नयज्ञो बहुशिल्पज्ञो बुधशुक्रसमागमे॥९०॥
बु०श०॥ऋणी गमनशीलश्च निरुपायोऽतिनिष्ठुरः॥
शुभवाक्यः काव्यदक्षो बुधमंदसमागमे ॥ ९१ ॥

संयोग हो तो बुद्धिमान्, शिल्प शास्त्रको जाननेवाला, वेदको जाननेवाला, वाणी बोलनेमें चतुर, घोडोंको प्रिय (रखनेवाला) प्रधान (मुख्य) हो ॥ ८६ ॥ मंगल, शुक्रका संयोग हो तो गुण प्रधान, निपुण, जूवा झूठमें रत, मूर्ख, परस्त्रीमें रत, मान्य हो ॥ ८७ ॥ मंगल, शनिका योग हो तो वाणीकी चतुराईवाला, इन्द्रजाल विद्यामें निपुण, धर्मरहित,कलहप्रिय, विष मदिराका प्रपंच रचनेवाला हो॥८८॥

अथ बुधद्विग्रहयोगाः । बुध बृहस्पतिका योग हो तो धैर्ययुक्त, पंडित, सुखी,नृत्य,बाजामें चतुर मनुष्य हो॥ ८९ ॥बुध शुक्रका योग हो तो धनी, सुन्दर बोलनेवाला, वेदवेत्ता, गीत हास्यमें रुचिवाला, नीति जाननेवाला, बहुत शिल्प शास्त्रको जाननेवाला हो ॥ ९० ॥ बुध शनिका योग हो तो कर्जावाला, गमन करनेवाला, उपायरहित, अत्यन्त कठोर, शुभ बोलनेवाला, काव्यमें निपुण हो ॥ ९१ ॥

अथ गुरुद्विग्रहयोगाः ।

गु०शु० ॥ धर्मस्थितः प्रमाणज्ञो विद्याजीवी च जायते ॥ दिव्यदारो बहुधनो गुरुभार्गवसंगमे॥९२॥
गु०श०॥वृत्तिसिद्धिश्च शूरश्च यशस्वी नगराधिपः॥ श्रेणीसेनाग्राममुख्यो गुरुमंदान्वये नरः ॥ ९३ ॥

अथ भृगुद्विग्रहयोगाः ।

शु०श०॥ दारुदारणदक्षश्च क्षाराम्लादिकशिल्पवित्। मल्लः पशुपतिर्मंदचक्षुः शनिसितान्वये ॥ ९४ ॥

अथ त्रिग्रहयोगाः तत्रादौ रवित्रिग्रहयोगाः ।

सू०मं०बु ० ॥ भानुभौमबुधैर्योगे ख्यातःसाहसिको नरः॥ निष्ठुरो गतलज्जश्च धनस्त्रीपुत्रपीडितः ॥९५॥
सू० मं० गु० ॥ सूर्यभौमेज्यसंयोगे प्रचंडः सत्य-

अथ गुरुद्विग्रहयोगाः। गुरु शुक्रका योग हो तो धर्ममें स्थिति-वाला, प्रमाणको जाननेवाला, विद्यासे आजीविका करनेवाला, दिव्य स्त्रीवाला, बहुत धनवाला हो ॥ ९२ ॥ गुरु और शनि इनके योगमें जन्मा हुआ पुरुष उपजीविकामें सिद्ध रहता है, शूर और कीर्तिमान् होता है, नगरका स्वामी, समूह, सेना तथा ग्राम इन्होंमें मुख्य होता है ॥ ९३ ॥

शुक्र और शनि इनके योगमें काष्ठोंकी चीरफाड करनेमें कुशल, तथा खट्टा पदार्थ निर्माणकी कला जाननेवाला, मल्ल, गाय, भैंसी इन्होंका मालिक होता है ॥ ९४ ॥

सूर्य, मंगल और बुध इन्होंके योगमें जो पुरुष जन्मता है वह विख्यात, साहस कर्म करनेवाला होता है और निर्दय, निर्लज्ज होता है तथा धन, स्त्री और पुत्रसे पीडित रहता है॥९५॥सूर्य, मंगल, बृहस्पति, इनका योग हो तो प्रचंड, सत्य बोलनेवाला,राजाका मंत्री मुख्य जन,

भाषणः ॥ राजमंत्री च मुख्यश्च वाक्ये च निपुणो भवेत् ॥९६॥ सू०मं०शु०॥सूर्यारशुक्रसंयोगे सुभगो भजने रतः॥कुलीनो वत्सलो लोके विषयासक्तमानसः ॥९७॥सू०मं०श०॥ सूर्यारशनिसंयोगे मूर्खो गोधनवर्जितः॥रोगार्तः स्वजनैर्हीनो विकलः कलहाकुलः ॥ ॥९८॥ सू०बु०गु० ॥ सूर्यसौम्येज्यसंयोगे नेत्ररोगी महाधनः॥शस्त्रशिल्पकलाभिज्ञो लिपिकर्त्ता भवेन्नरः॥ ॥९९॥सू०बु०शु०॥सूर्यज्ञशुक्रसंयोगे गुरुवर्गे समावृतः॥अभिशस्तो दिशो याति स्त्रीहेतोस्तप्तमानसः॥ ॥१००॥७००॥सू०बु०श०॥सूर्यज्ञशनिभिर्योगे दुराचारःपराजितः॥बन्धुभिश्च परित्यक्तो विद्वेषी जायते नरः॥१॥सू०गु०शु०॥सूर्येज्यशुक्रसंयोगे राजमंत्री च निर्धनः॥दुष्टचक्षुर्भवेत् क्रूरःप्राज्ञश्च परकर्मकृत्॥२॥

अपने वचनमें निपुण हो॥९६॥सूर्य, मंगल, शुक्रका योग हो तो सुंदर ऐश्वर्यवान्, भजन करनेमें नियुक्त, कुलीन, दयावान् हो, विषयासक्त मनवाला हो ॥९७॥सूर्य, मंगल, शनिका योग हो तो मूर्ख, धनहीन, रोगसे पीडित, स्वजनोंसे हीन, विकल, कलह करनेवाला हो ॥ ९८ ॥ सूर्य, बुध, बृहस्पतिका योग हो तो नेत्ररोगी, महाधनी, शस्त्रविद्या कारीगरीको जाननेवाला, लिखनेका काम करनेवाला हो ॥ ९९ ॥ सूर्य, बुध, शुक्रका योग हो तो गुरुजनोंके (काममें) लगा हुआ हो उत्तम, श्रेष्ठ मार्गमें चलनेवाला, स्त्रीके वास्ते संतप्त मनवाला हो ॥१००॥७००॥ सूर्य, बुध, शनिका योग हो तो दुराचारी, हारनेवाला, बंधुओंसे त्यागा हुआ, विद्वेष करनेवाला हो ॥ १ ॥ सूर्य, गुरु, शुक्रका योग हो तो राजाका मंत्री, निर्धन हो, बुरे नेत्रोंवाला, क्रूर, पंडित, पराया काम करनेवाला होता है ॥ २ ॥ सूर्य, गुरु,

सू०गु०श०॥सूर्येज्यशनिभिर्योगे पुत्रमित्रकलत्रवान्॥ निर्भयो नृपनिष्ठश्च द्वेष्यो बन्धुजनस्य च ॥३॥सू० शु०श०॥सूर्यशुक्रार्किसंयोगे कलामानविवर्जितः।कुष्ठी शत्रुजयोद्विग्नो दुराचारी भवेन्नरः॥४॥ चं०मं०बु०॥ चन्द्रारबुधसंयोगे त्वनाचारी च पापकृत्॥ आजीविकाहतो लोके बन्धुहीनश्च जायते॥५॥चं०मं०गु०॥ चन्द्रभौमेज्यसंयोगे स्त्रीलोलो व्रणसंयुतः ॥ कांतश्च संमतःस्त्रीणां चन्द्रतुल्यमुखो भवेत् ॥ ६ ॥ चं०मं० शु०॥चन्द्रारभृगुसंयोगे दुःशीलायाःपतिःसुतः॥सदा भ्रमणशीलश्च शीतभीतोऽपि जायते॥ ७ ॥ चं०मं० श०॥ चन्द्रारशनिभिर्योगे बाल्ये च मृतमातृकः ॥ क्षुद्रश्च लोकविद्विष्टो विषमो जायते नरः ॥ ८ ॥

शनिका योग हो तो पुत्र मित्र स्त्रीवाला हो, निर्भय रहे, राजामें निष्ठा करै, बंधुजनसे वैर करै ॥ ३ ॥ सूर्य शुक्र शनिका योग हो तो कला और मानसे रहित हो, कुष्ठी हो, शत्रुको जीतनेवाला, उद्विग्न, दुराचारी मनुष्य होवे ॥ ४ ॥ चन्द्र, मंगल, बुधका योग हो तो आचाररहित, पाप करनेवाला, संसारमें आजीविकाहीन, बन्धुहीन होता है ॥ ५ ॥ चन्द्र, मंगल, बृहस्पतिका योग हो तो स्त्रीविषे चञ्चल रहनेवाला, व्रणसे संयुक्त, मनोहर, स्त्रियोंका माना हुआ, चन्द्रमाके समान मुखवाला होवे ॥६॥ चन्द्रमा, मंगल, शुक्रका योग हो तो दुष्ट स्वभाववाली स्त्रीका पति और (ऐसेही स्त्रीका) पुत्र हो, सदा भ्रमता रहे, शीतसे डरता रहै ॥ ७ ॥ चन्द्रमा, मंगल, शनिका योग हो तो बालक अवस्थामें माता मरै, तुच्छ जन हो, लोगोंसे वैर करै, विषम कुटिल नर हो ॥ ८ ॥ चन्द्र, बुध, गुरुका

चं०बु०गु०॥चन्द्रज्ञजीवैःसंयोगे यशस्वी धनवानपि॥ पुत्रमित्रादिसंयुक्तो वाग्मी ख्यातश्च कीर्तिमान्॥९॥ चं०बु०शु०॥चन्द्रज्ञभार्गवैर्योगे विद्यया संयुतो नरः॥ सेर्ष्यो धनातिलोभी च नीचाचारश्च जायते॥१० ॥ चं०बु०श०॥चन्द्रज्ञशनिभिर्योगे प्राज्ञो भूपतिपूजितः॥ अत्युच्चो विपुलांगश्च वाग्मी भवति मानवः ॥११॥ चं० गु० शु० ॥ चन्द्रेज्यशुक्रसंयोगे साध्वीपुत्रश्च पंडितः ॥ साधुः सर्वकलाभिज्ञः सुभगो जायते नरः ॥ १२ ॥ चं०गु०श०॥चन्द्रेज्यशनिभिर्योगे नीरोगः स्त्रीरतो नरः।शास्त्रार्थविज्ञो नीतिज्ञो ग्रामपत्तनपालकः १३ ॥ चं०शु०श० ॥ चन्द्रशुक्रार्किभिर्योगे लिपि-कर्त्ता च वेदवित ॥ पुरोहितकुलोत्पत्तिर्भवेत्पुस्तक-

योग हो तो यशस्वी, धनवान् हो, पुत्रमित्रादिकोंसे युक्त, अच्छी तरह बोलनेवाला, विख्यात कीर्तिमान् ॥ ९ ॥ चन्द्र, बुध, शुक्रका योग हो तो विद्यावान्, ईर्षावाला, धनका अत्यन्त लोभी, नीच आचरण करनेवाला हो ॥ १० ॥ चन्द्र, बुध, शनिका योग हो तो पंडित, राजासे पूजित हो, अत्यन्त ऊंचा, भारी शरीरवाला, चतु-राईसे बोलनेवाला नर हो ॥ ११ ॥ चन्द्र, बृहस्पति,शुक्रका योग हो तो उत्तम स्त्रीका पुत्र हो, पंडित हो, साधुजन, सब कलाओंको जाननेवाला, सुन्दर, ऐश्वर्यवान् हो ॥ १२ ॥ चन्द्र, बृहस्पति, शनिका योग हो तो रोगरहित हो, स्त्रीविषे रत, शास्त्रार्थको जाननेवाला, ग्राम, शहरका पालक (नम्बरदार) हो ॥१३॥ चन्द्र,शुक्र, शनिका योग हो तो लिखनेका काम करनेवाला, वेदको जाननेवाला, पुरो-

वाचकः ॥१४॥ मं० बु० गु० ॥ भौमज्ञजीवैः संयोगे सुकविर्युवतीपतिः ॥ परोपकारकृत्तीक्ष्णो गांधर्वकुशलो नरः ॥१५॥ मं०बु० शु० ॥ भौमज्ञभृगुभिर्योगे विकलांगश्च चञ्चलः ॥ अकुलीनः सदोत्साही दृप्तश्च मुखरो नरः॥१६॥ मं०बु०श०॥ कुजज्ञशनिभिर्योगे प्रवासी नेत्ररोगवान्॥प्रेष्यो वदनरोगी च हास्यलुब्धो भवेन्नरः ॥ १७ ॥ मं०गु०शु० ॥ कुजेज्यभृगुभिर्योगे दिव्यनारीयुतःसुखी॥सर्वानन्दकरा लोके जायते नृपतिप्रियः ॥१८॥ मं० गु०श०॥ भौमजीवार्किभिर्योगे क्षतांगो राजसंमतः॥नीचाचारो निर्घृणश्च भवेन्मित्रैर्विगर्हितः॥१९॥मं० शु० श०॥ भौमजीवार्किसंयोगे

हितकुलमें जन्मा हुआ, पुस्तक बांचनेवाला हो ॥ १४ ॥ मंगल, बुध, बृहस्पतिका योग हो तो सुन्दर कवि, सुन्दरी स्त्रीका पति, पराया उपकार करनेवाला, तीक्ष्ण गन्धर्वविद्यामें निपुण (गायक) हो॥१५॥ मंगल, बुध, शुक्रका योग हो तो विकल अंगवाला । चञ्चल स्वभाववाला, तुच्छ कुलमें जन्मा, सदा उत्साहवाला, अभिमानी, वाचाल मनुष्य हो ॥ १६ ॥ मंगल, बुध, शनिका योग हो तो प्रवासी (परदेशमें रहनेवाला), नेत्ररोगी, प्रेरणाका काम करनेवाला, मुखका रोगी, हास्यका लोभी हो ॥ १७ ॥ मंगल, बृहस्पति, शुक्रका योग हो तो दिव्य स्त्रीसे युक्त हो, सुखी, लोकमें सब आनंदको भोगनेवाला राजाका प्रिय हो ॥ १८ ॥ मंगल, बृहस्पति, शनिका योग हो तो क्षत (चोट युक्त) अंगवाला, राजाका प्रिय हो, नीच आचारवाला, दयारहित, मित्रजनोंसे निंदित हो ॥ १९ ॥ मंगल, शुक्र, शनिका योग हो तो दुष्ट स्वभाववाली स्त्रीका पति

दुःशीलायाःपतिः सुतः।प्रवासशीलो दुःखी च जायते जातकः सदा ॥ २० ॥ बु० गु० शु० ॥ बुधेज्यभृगुसंयोगे सुतनुर्नृपपूजितः॥ क्षतारिर्दीर्घकीर्तिश्च सत्यवादी भवेन्नरः॥२१॥बु०गु०श० ॥बुधजीवार्किसंयोगे सुदारो बहुभोगवान् ॥ धनैश्वर्ययुतः प्रायः सुखधैर्ययुतो भवेत् ॥२२॥बु० शु० श० ॥ गुरुशुक्रार्किभिर्योगे मुखरः परदारगः ॥असंगत्यकलाभिज्ञः स्वदेशनिरतो जनः ॥२३॥ गु० शु० श० ॥ बुधशुक्रार्किभिर्योगे राजा भवति कीर्तिमान् ॥ नीचवंशेऽपि सभूतःशीलयुक्तो नृपोत्तमः॥२४ ॥प्रायःपापैर्युते चंद्रे मातुर्नाशो रवौ पितुः॥शुभग्रहैः शुभं वाच्यं,मिश्रैर्मिश्रं फलं वदेत् ॥२५॥ शुभास्त्रयो ग्रहा युक्ताः कुर्वंति

और (ऐसेहीका) पुत्र भी हो, परदेशमें रहनेवाला, सदा दुःखी हो ॥ २० ॥ बुध, बृहस्पति, शुक्रका योग हो तो सुन्दर शरीरवाला, राजासे पूजित, शत्रुओंको नष्ट करनेवाला, बडी कीर्तिवाला, सत्यवादी नर हो ॥ २१ ॥ बुध, गुरु, शनिका योग हो तो सुन्दर स्त्रीवाला, बहुत भोगी, धन और ऐश्वर्यसे युक्त विशेष करके सुख धैर्यसे आसक्त हो ॥ २२ ॥ बुध, शुक्र, शनिका योग हो तो वाचाल, पराई स्त्रीसे रमण करनेवाला, सत्संगतिरहित, कलाओंको नहीं जाननेवाला, सदा अपने देशमें रहै ॥ २३ ॥ बृहस्पति, शुक्र, शनिका योग हो तो कीर्तिमान् राजा हो, नीच वंशमें जन्मा हुआ भी शीलयुक्त उत्तम राजा हो ॥ २४ ॥ विशेष पापग्रहोंसे युक्त हुआ चन्द्रमा माताको नष्ट करै, सूर्य पिताको नष्ट करै, शुभ ग्रह हो तो शुभफल कहै, मिश्रग्रह हो तो मिश्र (मध्यम) फल कहे ॥ २५ ॥ तीन

सुखिनं नरम्॥पापास्त्रयो दुःखितं च दुर्विनीतं विगर्हितम् ॥ २६ ॥

अथ चतुर्ग्रहयोगाः ।

सू० चं० मं० बु० ॥ अर्केन्दुकुजसौम्यानां योगे लिपिकरो भवेत्॥तस्करो मुखरो वाग्मी मायायां कुशलो भिषक् ॥२७॥ सू० चं० मं० गु० ॥ सूर्येन्दुकुजजीवानां संयोगे निपुणो धनी॥तेजस्वी गतशोकश्च नीतिज्ञश्च भवेन्नरः॥२८॥सू०चं०मं०शु०॥रवीन्दुभौमशुक्राणां योगे विद्यार्थसंग्रही ॥ सुखी पुत्री कलत्री च वाग्वृत्तिर्मनुजो भवेत्॥२९॥ सू०चं०मं० श०॥अर्केन्दुकुजमंदानां योगे मूर्खश्च निर्धनः॥ह्रस्वो विषमदेहश्च भिक्षावृत्तिर्भवेन्नरः ॥३०॥ सू०चं०बु० गु० ॥ अर्केन्दुबुधजीवानां योगे शिल्पकरो धनी ॥

शुभग्रह इकट्ठे हों सो मनुष्यको सुखी करैं, तीन पापग्रह मनुष्यको दुःखी दुर्विनीत निंदित करैं ॥ २६ ॥ इति त्रिग्रहयोगाः ।

सूर्य, चंद्रमा,मंगलबुध इनका योग हो तो लेखक हो, चोर, मुखर (मुंहठढ), युक्तिसे बोलनेवाला, मायावी और वैद्यक जाननेवाला नर हो॥२७॥ सूर्य, चंद्र, मंगल, बृहस्पतिका योग हो तो निपुण, धनी, तेजस्वी, शोकरहित, नीतिको जाननेवाला नर हो ॥ २८ ॥ सूर्य,चंद्र, मंगल, शुक्र इनका योग हो तो विद्या, अर्थको ग्रहण करनेवाला सुखी, पुत्रवान्, स्त्रीवाला, वाणीमात्रसे आजीविका करनेवाला हो ॥२९॥ सूर्य, चंद्रमा, मंगल, शनि इनका योग हो तो मूर्ख, निर्धन हो छोटा तथा विषम शरीरवाला भिक्षाकी वृत्तिवाला नर हो ॥ ३०॥ सूर्य, चंद्रमा,बुध, बृहस्पतिका योग हो तो शिल्प (कारीगरी) करने-

सौवर्णिकः प्लुताक्षश्च रोगहीनश्च जायते॥३१॥ सू० चं० बु० शु० ॥ रविचन्द्रज्ञशुक्राणां संयोगे सुभगो नरः॥ह्रस्वश्च राजमान्यश्च वाग्मी च विकलो नरः ॥३२॥ सू० चं० बु० श० ॥ रविचंद्रज्ञमंदानां योगे भिक्षाशनो नरः ॥ वियुक्तः पितृमातृभ्यां विकलाक्षश्च निर्धनः ॥३३॥सू०चं०गु०शु० ॥ सूर्यचंद्रेज्यशुक्राणां संबंधे राजपूजितः॥जलारण्यमृगस्वामी नरः स्यान्निपुणः सुखी॥३४॥ सू० चं० गु० श०॥सूर्यचंद्रेज्यमंदानां मान्यश्च वनिताप्रियः॥बहुवित्तसुतस्तीक्ष्णःसमाक्षश्च प्रजायते॥३५॥सू०चं०शु०श०॥ रवींदुभृगुमंदानां योगे चात्यंतदुर्बलः॥वनितासदृशाचारो भीरुरग्रेसरो नरः॥३६॥ सू०मं०बु०गु०॥अर्कभौमबुधेज्यानां योगे सूत्रकरो नरः ॥ परदाररतःशूरो

वाला, धनवान्, सुवर्णके व्यवहारवाला,गडी हुई आंखोंवाला, रोगहीन होवे ॥ ३१ ॥ सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्रका योग हो तो सुंदर ऐश्वर्यवान्, छोटा, राजमान्य, युक्तिसे बोलनेवाला, विकल नर हो ॥ ३२ ॥ सूर्य, चंद्र, बुध, शनि इनका योग हो तो भिक्षाका अन्न भोजन करनेवाला, माता पितासे अलग रहनेवाला, विकल नेत्रोंवाला हो ॥ ३३ ॥ सूर्य, चंद्र, बृहस्पति, शुक्र इनका संबंध (संयोग) हो तो राजासे पूजित, जल, वन, मृग इन्होंका स्वामी, निपुण, सुखी हो ॥ ३४ ॥ सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति, शनि इन्होंका योग हो तो मान्य, स्त्रीको प्रिय, बहुत धन पुत्रोंवाला, तीक्ष्ण, समान नेत्रोंवाला हो ॥ ३५ ॥ सूर्य, चन्द्र, शुक्र, शनि इनका संयोग हो तो अत्यन्त दुबला, स्त्रीके समान आचरण करनेवाला, डरपोक, आगे चलनेवाला नर होता है ॥ ३६॥ सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति इनका योग हो तो सूतका काम

दुःखी चक्रधरो भवेत्॥३७॥ सू०चं०मं०शु०॥रवींदु-
कुजशुक्राणां संयोगे पारदारिकः ॥ निर्लज्जो दुर्जन-
श्चौरो विषमांगो जनो भवेत्॥३८॥सू०मं०बु० श०
रविभौमबुधार्कीणां योगे योद्धा कविर्जनः॥ मंत्री च
भूपतिस्तीक्ष्णो नीचाचारश्च जायते ॥ ३९ ॥ सू०
मं०गु०शु०॥रविभौमेज्यशुक्राणां योगे पूज्यो धनी
जनः। सुभगो नृपमान्यश्च ख्यातो भवति नीतिभाक्
॥ ४० ॥ सू० मं० गु० श० ॥ रविभौमेज्यमंदानां
संयोगे गणनायकः॥ सोन्मादो नृपमान्यश्च सिद्धार्थो
जायते नरः ॥४१॥ सू० मं० शु० श० ॥ रविभौम-
सितार्कीणां संयोगे जायते नरः॥लोकद्वेष्टा समाक्षश्च
नीचाचारो जडाकृतिः॥४२॥ सू० बु० गु० शु० ॥

करनेवाला, परस्त्रीसे रमण करनेवाला, शूर, वीर, दुःखी, चक्रधारी हो ॥ ३७ ॥ सूर्य, चंद्र, मंगल, शुक्र इनका योग हो तो पराई स्त्री रखनेवाला, निर्लज्ज, दुर्जन, चोर, विषम शरीरवाला नर होवे ॥ ३८ ॥ सूर्य, मंगल, बुध, शनि इनका योग होवे तो योद्धा, कवि होवे, मंत्री वा सेनापति तीक्ष्ण तथा नीच आचरणवाला हो ॥ ३९ ॥ सूर्य, मंगल, बृहस्पति, शुक्र इनका योग हो तो पूज्य, धनी, सुंदर, ऐश्वर्यवाला, राजासे मान्य, विख्यात, नीति जाननेवाला नर हो ॥ ४० ॥ सूर्य, मंगल, बृहस्पति, शनि इनका संयोग हो तो गणोंमें नायक, बहुत आदमियोंमें प्रधान हो, उन्मादवाला, राजासे मान्य, प्रयोजनको सिद्ध करनेवाला हो ॥ ४१ ॥ सूर्य, मंगल, शुक्र, शनि इनका संयोग हो तो लोगोंसे वैर करनेवाला, समान नेत्रोंवाला, नीच आचरण, तथा जड आकारवाला हो ॥ ४२ ॥ सूर्य, बुध, बृहस्पति, शुक्रका योग

रविज्ञजीवशुक्राणां योगे बहुमतिर्नरः ॥ धनी सुखी च सिद्धार्थः प्रगल्भश्च प्रजायते ॥ ४३ ॥ सू० बु० गु० श० ॥ सूर्यज्ञगुरुमंदानां संयोगे जायते नरः ॥ भ्रातृमान् कलही मानी क्लीबाचारी निरुद्यमः ॥४४॥ सू० बु० शु० श० ॥ रविज्ञभृगुमंदानां योगे मित्रयुतः शुचिः ॥ मुखरः सुभगः प्राज्ञो जायते च सुखी नरः ॥ ४५ ॥ सू० गु० शु० श० ॥ रवीज्यभृगुमंदानां संयोगे लोभमानवान् ॥ कविः कारुकनाथश्च राजप्रीतो भवेन्नरः ॥ ४६ ॥ चं० मं०बु० गु० ॥ चंद्रारबुधजीवानां योगे शास्त्रविचक्षणः ॥ नरेन्द्रस्य कृपापात्रं महाबुद्धिर्नरो भवेत् ॥ ४७ ॥ चं०मं०बु०शु०॥ चंद्रभौमज्ञशुक्राणामन्वये बन्धकीपतिः॥ निद्रालुः कलही नीचो बन्धुद्वेषी नरो भवेत् ॥ ४८ ॥ चं० मं०बु०श० ॥ चंद्रभौमज्ञमंदानां योगे

हो तो बहुत बुद्धिमान् नर हो, धनी,सुखी हो, प्रयोजनको सिद्ध करै भरखम जन हो॥४३॥सूर्य, बुध, बृहस्पति, शनि ये एक राशिपर हों तो बन्धुवाला, कलह करनेवाला, मानी, नपुंसकके समान आचरण करता और निरुद्योगी नर हो॥४४॥ सूर्य,बुध,शुक्र, शनिका योग हो तो मित्रसे मिलाप हो, पवित्र रहै वाचाल, सुन्दर ऐश्वर्यवाला पंडित सुखी हो ॥ ४५ ॥ सूर्य बृहस्पति, शुक्र, शनि इनका योग हो तो लोभी, मानी, कवि,कारीगरजनोंका पति, राजासे प्रीति रखनेवाला हो ॥ ४६ ॥ चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति इनका योग हो तो शास्त्रमें निपुण, राजाकी दयाका पात्र, महाबुद्धिमान् हो ॥ ४७ ॥ चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र इनका योग हो तो वंध्या स्त्रीका पति हो, बहुत निद्रावाला, कलह करनेवाला, नीच बन्धुओंसे द्वेष करनेवाला हो ॥ ४८ ॥ चन्द्र, मंगल, शुक्र, शनि इनका योग हो तो शूर वीर

शूरकुलोद्भवः॥पुत्रमित्रकलत्री च द्विमातृपितृको जनः ॥४९॥ चं० मं०गु० शु० ॥ चंद्रारगुरुशुक्राणां योगे साहसिको नरः॥विकलांगो धनी पुत्री मानी प्राज्ञोऽपि जायते ॥५०॥ चं० मं० गु० श० ॥ चन्द्रारजीवमंदानां संयोगे बधिरोऽधनः॥ सोन्मादः स्थिरवाक्यश्च शूरो विज्ञो भवेन्नरः ॥५१॥ चं० मं० शु० श० ॥ चंद्रारभृगुमंदानां मिलने कुलटापतिः ॥ सोद्वेगः सर्पतुल्याक्षः प्रगल्भो जायते नरः ॥ ५२ ॥ चं० बु० गु० शु० ॥ चंद्रज्ञजीवशुक्राणां मिलने सुभगो धनी॥द्विमातृपितृकः प्राज्ञो गतारिर्जायते नरः॥५३॥ चं० बु० गु० श०॥चंद्रज्ञगुरुमंदानां योगे बंधुप्रियः कविः ॥ तेजस्वी राजमंत्री च यशोधर्मयुतो नरः ॥५४॥ चं० बु० शु०श० ॥ इन्दुज्ञभृगुमंदानां योगे

कुलमें उत्पन्न हो, पुत्र मित्र स्त्रियोंवाला, दो माता पितावाला पुरुष होवे ॥ ४९ ॥ चन्द्र, मंगल, बृहस्पति, शुक्र इनका योग हो तो हठ करनेवाला जन हो, विकल अंगवाला, धनी, पुत्रवाला, अभिमानी, पंडित हो ॥ ५० ॥ चन्द्र, मंगल, बृहस्पति, शनि इनका मेल हो तो बहिरा,कंगाल,उन्मादरोगी, स्थिर बोलनेवाला, शूर वीर तथा विद्वान् हो ॥ ५१ ॥ चन्द्र, मंगल,शुक्र,शनि इनका योग हो तो जार स्त्रीका पति हो,उद्वेगवाला, सर्पके नेत्र समान नेत्रोंवाला,भरखम जन हो॥५२॥ चंद्र, शुक्र, बुध, बृहस्पति इनका योग हो तो सुन्दर ऐश्वर्यवान् धनी हो, तथा दो माता और दो पितावाला हो, पंडित, शत्रुरहित हो ॥ ५३ ॥ चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शनि इनका योग हो तो बंधुजनोंका प्रिय, कवि हो, तेजस्वी, राजाका मंत्री, यश और धर्मयुक्त हो ॥ ५४ ॥ चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि इनका योग हो तो

मात्रा विवर्जितः ॥ त्वग्दोषी सुभगो दुःखी बहुभार्यो भवेन्नरः ॥५५॥ चं० गु० शु० श० ॥ चंद्रेज्यसितसौरीणामन्वये पारदारिकः ॥ प्राज्ञो निर्द्रव्यबंधुश्च स्थूलभार्यो भवेन्नरः ॥५६॥ मं०गु०बु०शु०॥भौमज्ञगुरुशुक्राणां योगे स्त्रीकलहप्रियः॥धनी सुशीलो नीरोगी लोकपूज्यो भवेन्नरः॥५७॥मं० बु० गु० श०॥ भौमज्ञगुरुसौरीणां योगे शूरश्च निर्धनः।सत्यशौचयुतो विद्वान्वादी वाग्मी नरो भवेत् ॥५८॥ मं०बु०शु० श० ॥ भौमज्ञभृगुमंदानां सारमेयरुचिर्भवेत्॥मल्लोऽन्यपुष्टो योद्धा च दृढांगो जायते नरः॥५९॥ मं०गु० शु० श० ॥ भौमेज्यभृगुमंदानां मिलने साहसप्रियः॥ धनी सतेजाः स्त्रीलोलः कितवो जायते नरः ॥६०॥

माता नष्ट हो, त्वचाका रोग हो, ऐश्वर्यवान्, दुःखी, बहुत स्त्रियोंवाला हो ॥ ५५ ॥ चन्द्र, बृहस्पति, शुक्र, शनि इनका योग हो तो पराई स्त्रीसे रमण करै, पंडित, द्रव्यहीन, भाइयोंवाला तथा मोटी स्त्रीवाला होता है ॥ ५६ ॥ मंगल, बृहस्पति, बुध, शुक्र इनका योग हो तो स्त्रीसे कलह करनेवाला, धनी, सुंदर स्वभाववाला, रोगरहित, लोकमें पूज्य नर हो ॥ ५७ ॥ मंगल, बुध, बृहस्पति, शनि इनका योग हो तो शूर वीर, निर्धन हो, सत्य शौचमें युक्त, विद्वान्, वाद करनेवाला, युक्तिसे बोलनेवाला मनुष्य हो ॥ ५८ ॥ मंगल, बुध, शुक्र, शनि इनका योग हो तो कुत्तासरीखी रुचि रहै, मल्ल हो, अन्यसे पुष्ट हो, योद्धा, दृढ अंगवाला हो ॥ ५९ ॥ मंगल, बृहस्पति, शुक्र, शनि इनका योग हो तो हठ करनेवाला, धनी, तेजस्वी, स्त्रीविषे चंचल, धूर्त जन हो ॥ ६० ॥

बु० गु० शु० श०॥बुधेज्यभृगुमंदानां योगे कामातुरो जनः॥विधेयभृत्यो मेधावी तीव्रशास्त्ररतो भवेत् ६१

अथ पञ्चग्रहयोगाः।

सू० चं० मं० बु० गु० ॥ बहुप्रपंचो दुःखी च जायाविरहतोऽपि सः॥ सूर्याद्यैर्जीवपर्यंतैर्नरः स्यात्पंचभिर्ग्रहैः ॥ ६२ ॥ सू० चं० मं०बु० शु० ॥ गतसत्यो बन्धुहीनः परकर्मकरो नरः। क्लीबस्य च सखा सूर्यश्चन्द्रारबुधभार्गवैः ॥ ६३ ॥ सू० चं० मं० बु० श० ॥ अल्पायुर्विकलत्रश्च दुःखी सुतविवर्जितः॥ रवीन्दुभौमज्ञार्कीणां योगे बन्धनभागपि ॥ ६४ ॥ सू० चं० मं० गु० शु० ॥ जात्यन्धो बहुदुःखी च पितृमातृविवर्जितः ॥ गानप्रीतो नरो भानुचन्द्रारगुरुभार्गवैः ॥ ६५ ॥ सू० चं० मं० गु० श०॥ पर-

बुध, बृहस्पति,शुक्र,शनि इनका योग हो तो कामी जन हो, भृत्योंसे सेवा करानेवाला, बुद्धिमान्, तीक्ष्ण, शास्त्रकर्ममें रत हो ॥ ६१ ॥ इति श्रीभाषाटीका० चतुर्ग्रहयोगाः ॥

सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति इनका योग हो तो बहुत मायावी, दुःखी, स्त्रीके वियोगवाला हो ॥ ६२ ॥ सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, शुक्र ये ग्रह हों तो सत्यहीन, बन्धुहीन, पराये कर्मको करनेवाला, हिजडाका सखा हो ॥ ६३ ॥ सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शनि ये ग्रह एक जगह होवें तो अल्प आयुवाला, स्त्रीरहित, दुःखी, पुत्ररहित, बन्धनमें आनेवाला हो ॥ ६४ ॥ सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र ये ग्रह एकत्र होवें तो जाति करके अन्धा हो, बहुत दुःखी, पिता मातासे वर्जित, गानेमें प्रीतिवाला हो ॥ ६५ ॥ सूर्य, चन्द्र, मंगल, बृहस्पति, शनि इनका योग हो तो पराये द्रव्यको हरे, योद्धा,

द्रव्यहरो योद्धा परतापकरः खलः । समर्थो जायते सूर्यचन्द्रारगुरुसौरिभिः ॥ ६६ ॥ सू० चं० मं०शु० श०॥ मानाचारधनैर्हीनः परदाररतो नरः ॥ एकस्थैर्जायते भानुचन्द्रारभृगुसौरिभिः ॥ ६७ ॥ सू०चं० बु०गु०शु०॥राजमन्त्री भूरिवित्तो यन्त्रज्ञो दंडनायकः॥ ख्यातो जनो यशस्वी च रवींदुज्ञेज्यभार्गवैः ॥ ६८ ॥ सू०चं० बु० गु० श० ॥ परान्नभोजी सोन्मादः प्रियतप्तश्च वंचकः ॥ उग्रो भीरुर्नरः सूर्यचन्द्रज्ञगुरुसौरिभिः ॥ ६९ ॥ सू०चं०बु०शु०श० ॥ धनपुत्रसुखैर्हीनो मृत्यूत्साही च लोमशः ॥ दीर्घो भवति सूर्येन्दुबुधशुक्रशनैश्चरः ॥ ७० ॥ सू० चं० गु० शु० श०॥इन्द्रजालरतो वाग्मी चलचित्तोऽङ्गनाप्रियः॥ प्रायशः शत्रुभिर्भीतो रवींद्वीज्यसितासितैः ॥ ७१ ॥ सू०मं०बु०गु० शु० ॥ स्फीतो बहुहयः कामी नरो-

अन्यको संताप करनेवाला, दुष्ट तथा समर्थ हो ॥ ६६ ॥ सूर्य, चन्द्र, मंगल, शुक्र, शनि इनका योग हो तो मान आचार धनसे हीन हो, पराई स्त्रीसे भोग करै ॥ ६७ ॥ सूर्य, चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र ये एक जगह स्थित हों तो राजाका मन्त्री, बहुत धनवाला, यन्त्र जाननेवाला, दण्ड करनेके अधिकारवाला, विख्यात, यशस्वी हो ॥ ६८ ॥ सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शनि ये एक जगह स्थित हों तो पराये अन्नको भोजन करनेवाला, उन्मादी, प्रिय जनको दुःख देनेवाला ठग हो, घोर तथा डरपोक हो ॥ ६९ ॥ सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि ये एक जगह स्थित होवें तो धन, पुत्र और सुखसे हीन, मृत्युके उत्साहवाला, रोमोंवाला हो ॥ ७० ॥ सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति, शुक्र, शनि ये एक जगह स्थित होवें तो इन्द्रजाल, (बाजीगरी विद्यामें) निपुण, युक्तिसे बोलनेवाला, स्त्रियोंका प्रिय, विशेष करके शत्रुओंसे डरनेवाला हो ॥ ७१ ॥ सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र

ऽशोकश्चमूपतिः॥ सूर्यारज्ञेज्यशुक्राणां योगे भूपति-
वल्लभः ॥७२॥ सू० मं० बु० गु० श० ॥ भिक्षाभोगी
च रोगी च नित्योद्वेगी मलीमसः॥जीर्णो नरो भानु-
भौमज्ञजीवशनिभिर्भवेत् ॥ ७३ ॥ सू० मं० बु० शु०
श०॥व्याधिभिः शत्रुभिर्ग्रस्तः स्थानभ्रष्टो बुभुक्षितः॥
नरः स्याद्विकलः सूर्यकुजज्ञभृगुसौरिभिः ॥७४॥सू०
मं०गु०शु०श० ॥ विज्ञो विचारवांश्चैव धातुयंत्ररसा-
यने॥नरः प्रसिद्धो रव्यारगुरुशुक्रार्किभिर्युतैः ॥७५॥
सू०बु०गु०शु०श०॥ मित्रप्रियः शास्त्रवेत्ता धार्मिको
गुरुसंमतः ॥ दयालुः सूर्यसौम्येज्यभृगुपुत्रशनैश्चरैः
॥७६॥ चं० मं० बु० गु० शु० ॥ साधुः कल्मषही-
नश्च धनविद्यासुखान्वितः॥ बहुमित्रो नरश्चंद्रभौमज्ञ-

ये एक जगह हों तो समृद्धिमान् बहुत अश्वोंवाला, कामी, शोक-
रहित, सेनापति हो, राजाका प्रिय हो ॥ ७२ ॥ सूर्य, मंगल, बुध,
बृहस्पति, शनि ये एक जगह होवें तो भिक्षाका भोजनवाला, रोगी,
नित्य उद्वेगवाला, मलिन हो, तथा जीर्ण जन हो ॥ ७३ ॥ सूर्य,
मंगल, बुध, शुक्र, शनि ये एक जगह होवें तो व्याधि और शत्रु-
ओंसे पीडित हो, स्थानसे भ्रष्ट हो, भूँखा मरै, विकल नर
हो ॥ ७४ ॥ सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र, शनि ये एक जगह होवें
तो पंडित, धातु यन्त्र रसायनमें विचारवान् हो, प्रसिद्ध जन
हो ॥ ७५ ॥ सूर्य, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि इनका योग हो
तो मित्रोंका प्रिय, शास्त्रवेत्ता, धार्मिक, गुरुका सलाही, दयालु
हो ॥ ७६ ॥ चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र ये एक जगह
होवें तो साधु, पापहीन, धन, विद्या और सुखसे युक्त बहुत

गुरुभार्गवैः ॥७७॥ चं०मं०गु०शु०श० ॥ परान्नपाचको निःस्वोमलिनस्तिमिरामयी॥नरो भवति चंद्रारजीवशुक्रशनैश्चरैः ॥७८॥ चं०मं०बु०शु०श०॥ बहुमित्रारिपक्षश्च दुःशीलः परपीडकः॥ मानी नरश्चन्द्रभौमबुधशुक्रशनैश्चरैः॥७९॥चं०बु०गु०शु०श०॥ राजमंत्री राजतुल्यो लोकपूज्यो गणाधिपः॥चंद्रज्ञगुरुशुक्रार्कियोगे जातो भवेन्नरः ॥८०॥ मं०बु०गु० शु०श०॥ अशोकस्तामसो निःस्वः सोन्मादो राजवल्लभः॥निद्रातुरो भौमबुधजीवशुक्रशनैश्चरैः ॥८१॥

अथ षड्ग्रहयोगाः ।

सू०चं०मं० बु० गु० शु०॥ विद्याधर्मधनैर्युक्तो बहुभाषी च भाग्यवान्॥ सूर्याद्यैः शुक्रपर्यंतैर्लाभो भवति

मित्रोंवाला नर हो ॥ ७७ ॥ चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र, शनि इन ग्रहोंका योग हो तो परान्न पाचक (रसोइया), दरिद्री, मलिन, तिमिर रोगीजन हो ॥ ७८ ॥ चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र, शनि ये ग्रह एक जगह हों तो बहुत मित्र और शत्रुओंके पक्षवाला, दुष्ट स्वभाववाला, परपीडक, अभिमानी हो ॥ ७९ ॥ चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि एक जगह होवें तो राजाका मंत्री, राजाके समान हो, लोकपूज्य, गणोंका (अनेक मनुष्योंका) पति हो ॥ ८० ॥ मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि इनका योग हो तो शोकरहित, तामसी (क्रोधी), दरिद्री, उन्मादी, राजाका प्रिय, निद्राके वशमें होनेवाला जन हो ॥ ८१ ॥ इति श्री० भाषाटीकायां पंचग्रहयोगाः ।

सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, ये एक जगह होवें तो विद्या, धर्म और धनसे संयुक्त हो, बहुत बोलनेवाला तथा भाग्य-

षड्ग्रहैः ॥८२॥ सू०चं०मं०बु०गु०श० ॥ परकार्यरतो दाता शुद्धात्मा चंचलाकृतिः ॥ षड्भिर्ग्रहैर्विना शुक्रं रमते विजने जनः॥८३॥सू०चं०मं०बु०शु०श० संशयी सुभगो मानी ख्यातो युद्धेऽरिमर्दकः ॥ विना जीवं ग्रहैः षड्भिर्वनादौ रमते जनः ॥ ८४ ॥ सू० चं० मं०गु०शु०श० ॥ अर्थप्रियो रणोत्साही पिशुनः क्रोधलोभवान् ॥ अर्केन्दुभौमशुक्रेज्यमन्दैश्च सुभगो नरः ॥८५ ॥ सू०चं०बु०गु०शु०श० ॥ कलत्रहीनो निर्द्रव्यो राजमंत्री क्षमायुतः॥रवीन्दुबुधजीवास्फुजिन्मन्दैःसुभगो नरः ॥८६॥ सू० मं०बु०गु०शु०श०॥ धनदारसुतैर्हीनस्तीर्थगामी वनाश्रितः।सूर्यारज्ञेज्यशुक्रार्कपुत्रैर्योगे भवेन्नरः ॥ ८७ ॥ चं०मं०बु०गु०शु०

वान् हो॥ ८२ ॥ सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शनि ये छः ग्रह एक जगह हों तो पराये काममें रत, दानी, शुद्ध आत्मावाला, चंचल आकारवाला होवे ॥ ८३ ॥ सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, शुक्र, शनि ये छः ग्रह एक जगह स्थित होवें तो संशयवाला, सुंदर, ऐश्वर्यवान्, मानी, विख्यात, युद्धमें शत्रुओंको नष्ट करनेवाला हो, वन आदिकोंमें विचरनेवाला जन हो ॥ ८४ ॥ सूर्य, चंद्र, मंगल, गुरु, शुक्र, शनि ये ग्रह एकत्र होवें तो धनमें प्रिय, युद्धमें उत्साहवाला, चुगलखोर, क्रोधी, लोभी हो, सुंदर ऐश्वर्यवान् हो ॥ ८५ ॥ सूर्य, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि ये एक जगह होवें तो स्त्रीहीन, निर्द्रव्य,राजाका मंत्री, क्षमायुक्त होवे ॥ ८६ ॥ सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि ये एक जगह स्थित होवें तो धन, स्त्री और पुत्र इनसे हीन हो, तीर्थोंमें विचरनेवाला, वनमें रहनेवाला हो ॥ ८७ ॥ चंद्र, मंगल, बुध, गुरु,

श० ॥ धनी पुत्री शुचिर्मंत्री बहुभार्यो नृपप्रियः ॥ विना सूर्यग्रहैः षड्भिः प्रतापी जायते नरः ॥८८॥ प्रायो दरिद्रो मूर्खश्च षड्भिर्वा पंचभिर्ग्रहैः ॥ अन्योन्यदर्शनात्तेषां फलमेतत्प्रकीर्तितम् ॥ ८९ ॥

अथ नाभसयोगाः ।

लग्नात्सप्तमपर्यंतैर्ग्रहैः सर्वैः शुभाशुभैः॥क्रमेण संस्थितैः प्रोक्तो योगो नौकाभिधो बुधैः ॥९०॥ अन्योपजीवविभवो बह्वायुः ख्यातकीर्तिमान् ॥ कृपणो मलिनो लुब्धो नौयोगे चंचलो नरः ॥ ९१ ॥ चतुर्थात्कर्मपर्यंतैः क्रमेण पतितैर्ग्रहैः ॥ विख्यातः कूटनामाऽसौ योगः प्रोक्तो मनीषिभिः॥९२॥मिथ्यावादी शठः क्रूरः कितवो बंधुपालकः॥ निष्किंचनः शैलवासी कूटयोग-

शुक्र, शनि ये छः ग्रह एक जगह होवें तो धनी, पुत्रवान्, पवित्र, मंत्री, बहुत स्त्रियोंवाला, राजाका प्रिय, प्रतापी जन हो ॥ ८८ ॥ छः अथवा पांच ग्रह एक जगह बैठे हों तो विशेष करके दरिद्री और मूर्ख होता है, परस्पर दृष्टिसंबंध होनेसे यह फल कहा है ॥ ८९ ॥ इति श्रीलग्नचंद्रिकाभाषाटीकायां षड्ग्रहयोगाः ॥

लग्नसे सातवें घरतक क्रमसे शुभाशुभग्रह निरंतर स्थित होवें तो यह नौका नामका योग कहा है ॥ ९० ॥ इस नौका योगमें जन्म लेनेवाला नर अन्योंकी आजीविका करनेवाला, धनी हो, विख्यात, बहुत आयुवाला, कीर्तिमान् हो, कृपण, मलिन, लोभी और चञ्चल हो ॥ ९१ ॥ चौथे घरसे दशवें घरतक क्रमसे निरंतर ग्रह पडे हों तो पंडित जनोंने यह कूट नामक योग कहा है ॥ ९२ ॥ इस कूट योगमें जन्मे तो मिथ्या विवादी, शठ, क्रूर, धूर्त, बंधुजनका पालक, द्रव्य

भवो नरः ॥ ९३ ॥ सप्तमाल्लग्नपर्यंतैः खेटैः सर्वैः शुभाशुभैः ॥ छत्रयोगः समाख्यातो ब्रह्मरुद्रादिभिः सुरैः ॥ ९४ ॥ प्रकृष्टधीर्दयालुश्च दीर्घायुः स्वजनाश्रयः ॥ वयसि प्रथमेऽन्त्ये च सुखी छत्रप्रियो नरः ॥९५॥दशमाच्च चतुर्थान्तैर्गगनेन्द्रैः शुभाशुभैः॥गतैर्योगः कार्मुकाख्यः ख्यातोऽसौ पंडितोत्तमैः ॥९६॥ वयोमध्ये भाग्यहीनो गुप्तिपालो वने रतः ॥ मिथ्यावादी च चौरश्च कार्मुके जायते नरः॥ ९७ ॥ लग्नास्तयोर्ग्रहैः सौम्यैः पापैश्च सुखकर्मगैः॥वज्रः स्याद्विपरीतस्थैर्यवः पद्मं च मिश्रितैः ॥ ९८ ॥ सुखी च सुभगः शूरो मध्ये भाग्येन वर्जितः ॥ निःस्नेहश्च

रहित, पर्वतवासी होवे ॥ ९३ ॥ सातवें घरसे लग्नपर्यंत शुभाशुभ सब ग्रह पडे हों तो ब्रह्मा शिव आदि देवताओंने यह छत्रयोग कहा है ॥ ९४ ॥ इसमें जन्मनेवाला नर उत्तम बुद्धिवाला, दयालु, दीर्घ आयुवाला, स्वजनोंका आश्रय हो, पहली अथवा पिछली अवस्थामें छत्रधारी नर हो ॥९५ ॥ दशवें घरसे चौथे घरतक क्रमसे शुभाशुभ सब ग्रह पडे हों तो यह कार्मुक योग उत्तम पंडित जनोंने कहा है ॥ ९६ ॥ इस कार्मुक योगमें जन्मनेवाला नर गुप्तिपाल (कैदघरका रक्षक) तथा वनमें रहनेवाला, अवस्थाके मध्यमें भाग्यहीन हो, झूँठ बोलनेवाला, चोर हो॥ ९७ ॥ लग्नमें और सातवें घरमें शुभग्रह स्थित हों, चौथे और दशवें घरमें पापग्रह बैठे हों तो वज्रयोग कहलाता है इससे विपरीत प्रकार स्थित हों तो यवयोग होता है (इन चारों घरोंमें) मिश्र (शुभाशुभ) मिले हुए हों तो पद्मयोग होता है ॥ ९८ ॥ वज्रयोगमें जन्मनेवाला नर सुखी, सुन्दर, ऐश्वर्यवान्, शूर, वीर, मध्य अवस्थामें भाग्यहीन

विरुद्धश्च वज्रयोगे खलो नरः ॥ ९९ ॥ दाता च स्थिरचित्तश्च व्रतादिनियमैर्युतैः ॥ मध्ये सुखार्थपुण्याढ्यो यवयोगे जनो भवेत्॥१००॥स्थिरायुर्दीर्घकीर्तिश्च कांताशुभशतैर्युतः ॥ भूयो गुणमदैर्युक्तः पद्मयोगे जनो भवेत् ॥ १ ॥ केन्द्राद्द्वितीयगैः सर्वैर्वापी वापि तृतीयगैः ॥ शकटं वास्तलग्नस्थैर्विहगैः सुखकर्मगैः ॥२॥ निपुणो निधिकार्येषु स्थिरद्रव्यः सुखैर्युतः ॥ प्रहृष्टमुखनेत्रश्च तृप्तो वाप्यां नरः सदा ॥ ३ ॥मूर्खः कुभार्यो रोगार्तः शकटप्राप्तजीविकः ॥ निःस्वो बन्धुविहीनश्च शकटे जायते नरः ॥ ४ ॥ भ्रमणेऽतिरुचिर्हृष्टः सुरतप्राप्तजीविकः ॥ निकृष्टः

स्नेहरहित, विरुद्ध, दुष्ट जन ॥ ९९ ॥ यवयोगमें जन्मनेवाला नर दानी, स्थिरचित्तवाला, व्रत नियमोंमें युक्त, मध्य अवस्थामें सुख धन और पुण्यवाला हो ॥ १०० ॥ पद्मयोगमें जन्मनेवाला नर स्थिर आयुवाला, दीर्घ कीर्तिवाला, सैकडों स्त्रियोंसे युक्त, बहुत गुणमदसे युक्त हो ॥ १ ॥ केन्द्रसे दूसरे घरमें अर्थात् चारों पणफरमें सब ग्रह स्थित हो जावें या तृतीयमें केंद्रसे अर्थात् चारों आपोक्लिममें सब ग्रह स्थित हों तो यह वापीयोग होजाता है । सातवें और लग्नमें सब ग्रह स्थित हो जावें तो शकट योग होता है । चौथे और दशवें घरमें सब ग्रह होवें तो विहंगयोग होता है ॥ २ ॥ वापी योगमें जन्मनेवाला नर सब कामोंमें निपुण हो स्थिर द्रव्यवाला, सुखयुक्त हो,अति प्रसन्न मुखनेत्रवाला हो सदा तृप्त रहै ॥ ३ ॥ शकट योगमें जन्मे तो मूर्ख, कुत्सित स्त्रीवाला, रोगसे पीडित, शकट (गाडीसे) आजीविका करनेवाला, दरिद्री, बन्धुहीन हो ॥ ४ ॥ विहंगयोगमें जन्मनेवाला नर भ्रमणमें अत्यन्त रुचि रक्खै, मैथुनमें प्राप्त

कलहप्रीतो विहंगे मानवो भवेत् ॥ ५ ॥ अर्थादेकान्तरस्थैश्च ग्रहैर्जलधिरुच्यते ॥ लग्नादेकांतरस्थैश्च चक्रं सर्वैर्ग्रहैः स्मृतम् ॥ ६ ॥ बह्वर्थरत्नसम्पन्नः पुत्री भोगी जनप्रियः ॥ सुशीलः स्थिरचित्तश्च जलधौ जायते नरः ॥ ७ ॥ प्रणताशेषभूपालः सत्सेवितपदांबुजः ॥ चक्रयोगे समुत्पन्नो महाराजो भवेन्नरः ॥८॥ धनस्थाने त्रिकोणे च ग्रहैः सर्वैर्हलं स्मृतम् ॥ लग्नत्रिकोणगैःखेटैःशृंगाटकमुदाहृतम्॥९॥बह्वाशी च दरिद्री च कर्षको बंधुवर्जितः ॥ सोद्वेगो दुःखितः प्रेष्यो हलयोगभवो नरः ॥१०॥ हास्यवक्रः शुभा-

आजीविकावाला, निकृष्ट, कलह करनेवाला हो ॥ ५ ॥ दूसरे घरसे एक अन्तर करके सब ग्रह अर्थात् २ । ४ । ६ । ८ । १० । १२ इन स्थानोंमें स्थित होवें तो जलधि (समुद्र) योग कहलाता है और लग्नसे एकान्तर स्थानोंमें अर्थात् १ । ३ । ५ । ७ । ९ । ११ । छओंमें सब ग्रह स्थित होवें तो चक्र योग कहलाता है ॥ ६ ॥ जलधि योगमें जन्मनेवाला नर बहुत द्रव्य रत्नसे संयुक्त, पुत्रवान्, भोगी, सब जनोंका प्रिय हो, सुशील, स्थिर चित्तवाला हो ॥ ७ ॥ चक्रयोगमें जन्मनेवाले नरको सब राजा प्रणाम करैं, इसके चरणकमलको श्रेष्ठ जन सेवन करैं ऐसा उत्तम महाराज हो ॥ ८ ॥ दूसरे घरमें और नववें पांचवें घरमें सब ग्रह स्थित हों तो हलयोग होता है। लग्न और नववें घरमें सब ग्रह स्थित होगये हों तो यह शृंगाटक योग कहा है ॥ ९ ॥ हलयोगमें जन्मनेवाला नर बहुत भोजन करै, दरिद्री हो, किसान (खेती करनेवाला) हो, बंधुजनोंसे रहित हो, उद्वेगवाला, दुःखित, प्रेरणाके काम करनेवाला दूत हो ॥ १० ॥ शृंगाटक योगमें जन्मनेवाला नर हास्यमुख, शुभ आचरण करनेवाला,

चारो नृपभीतः कलिप्रियः ॥ धनाढ्यो युवतिप्रेष्यो योगे शृंगाटके नरः ॥ ११ ॥ लग्नमारभ्य केन्द्रेभ्यो चतुर्ग्रहगतैर्ग्रहैः ॥ यूपबाणौ शक्तिदंडौ चत्वारोऽमी स्मृता बुधैः ॥ १२ ॥ आत्मरक्षारतस्त्यागी सुखसत्यव्रतैर्युतः ॥ विशिष्टो मंत्रवादी च यूपयोगे नरो भवेत् ॥ १३ ॥ शरकर्त्ता दस्युसेवी मांसादो मृगबंधकः ॥ हिंसकः शिल्पकारी च शरयोगोद्भवो भवेत् ॥ १४ ॥ चिरायुर्युद्धदक्षश्च सुभगः सुस्थिरोऽलसः ॥ नीचो दुःखी दरिद्रश्च शक्तियोगे भवेन्नरः ॥ १५ ॥ निःस्वो नष्टसुतस्त्रीको बंधुबाह्यः सुनिर्घृणः ॥ नीचप्रेष्यो दुःखितश्च दंडयोगे

राजासे भयवाला, कलह करनेवाला, धनाढ्य, युवती स्त्रीके कार्य करनेवाला हो ॥ ११ ॥ लग्नसे आदि ले (चारों) केंद्रोंसे चार घरमें अर्थात् १।२।३।४। में, ।४।५।६।७। में, ७।८।९। १० में, १०।११।१२।१ में सब ग्रह स्थित होवें तो पंडित जनोंने यथाक्रमसे यूप, बाण, शक्ति, दंड ये चार योग कहे हैं जैसे लग्न दूसरे तीसरे चौथे घरमें सब ग्रह हों तो यूप योग होता है। इसी क्रमसे अगाडी भी जानना ॥ १२ ॥ यूप योगमें जन्मनेवाला नर अपनी रक्षामें तत्पर, त्यागी, सुख तथा सत्य नियमसे युक्त हो, श्रेष्ठजन, मंत्रवादी हो ॥ १३ ॥ शर (बाण) योगमें जन्मनेवाला नर बाण बनावे, चोरोंकी सेवा करै, मांस भक्षण करै, मृगोंको बांधे, हिंसक, शिल्प (कारीगरी) करनेवाला हो ॥ १४ ॥ शक्तियोगमें जन्मनेवाला नर बहुत आयुवाला, युद्धमें चतुर, सुंदर ऐश्वर्यवान्, सुस्थिर, आलसी, नीच, दुःखी, दरिद्री होवे ॥ १५ ॥ दंड योगमें जन्में तो दरिद्री, पुत्ररहित, स्त्रीहीन, बंधुरहित, दयावान् हो, नीच

भवेन्नरः ॥१६॥ केन्द्रादिभिन्नस्थानेभ्यः सप्तऋक्षगतैर्ग्रहैः॥अर्धचंद्रो गदा प्रोक्ता केन्द्रात्पार्श्वद्वयस्थितैः ॥१७॥बली राजप्रियः कांतो हेमरत्नैरलंकृतः॥ अर्धचंद्रे चमूनाथः सुभगो जायते नरः ॥ १८ ॥ शास्त्र योगे प्रवीणश्च सद्यो युक्तार्थतत्परः ॥ यज्वा धनी सुप्रसन्नो गदायोगोद्भवो नरः॥१९॥एकादिभिः स्थितैः सर्वैर्ग्रहैर्गोलो युगः क्रमात् । शूलकेदारपाशाश्च दामिनी वीणया सह॥२०॥विद्याहीनो धनैर्हीनो मान-

जनोंकी प्रेरणा करनेवाला, दुःखित हो॥ १६ ॥ केंद्रसे भिन्न स्थानोंमें लेकर सात राशितक क्रमसे ग्रह पडे हों तो यह अर्द्धचन्द्र योग कहा है। यह आठ प्रकारका होता है, यथा द्वितीयसे अष्टमतक एक, तृतीयसे नवमतक द्वितीय, पंचमसे एकादशतक तृतीय, ऐसे छठा, आठवाँ, नवम, एकादश और द्वादश स्थानोंसे जानना। जो केंद्रस्थानोंकी दोनों तर्फ स्थित हुए सातों ग्रह पडे हों तो गदा योग होता है ॥ १७ ॥ अर्द्धचन्द्र योगमें जन्मनेवाला नर बली हो, राजाका प्रिय, सुवर्ण रत्नसे भूषित हो, सेनाका पति, सुन्दर ऐश्वर्यवान् हो ॥ १८ ॥ गदायोगमें जन्मनेवाला नर शास्त्रमें और योगमें प्रवीण हो, शीघ्रही योग्य प्रयोजनमें तत्पर हो, यज्ञ करनेवाला, धनी, सुन्दर, प्रसन्न होवे ॥ १९ ॥ एकसे सात राशियोंतक सब ग्रह पडे हों तो क्रमसे गोल, युग, शूल, केदार, पाश, दामिनी, वीणा योग क्रमसे जानो अर्थात् जिस किसी एक स्थानमें सातों ग्रह हों तो गोल, दो स्थानोंमें जहां तहां सब ग्रह हों तो युग, तीन स्थानोंमें शूल, चार स्थानोंमें केदार, पांच स्थानोंमें पाश, छःमें दामिनी, सात स्थानोंमें सातों ग्रह हों तो वीणायोग होता है ॥ २० ॥ गोल योगमें जन्मनेवाला नर विद्याहीन, धनहीन, मानहीन, दुःखित

हीनोऽतिदुःखितः ॥ गोलयोगे समुत्पन्नो मलिनो जायते नरः ॥ २१ ॥ पाखंडभाग्यो निर्द्रव्यः पुत्रमातृविवर्जितः ॥ युगयोगे धर्महीनो लोकनिंद्योऽपि जायते ॥ २२ ॥ तीक्ष्णोऽलसो निर्धनश्च हिंस्रः शूरो बहिष्कृतः ॥ संग्रामलब्धशब्दश्च शूलयोगे जनो भवेत् ॥ २३ ॥ कृषौ रतः सत्यवादी स्वबाहुविहितोदयः ॥ धनी सुखी चञ्चलात्मा केदारोत्थो नरो भवेत ॥ २४ ॥ कार्ये दक्षः प्रपंची च बहुभाषी च बन्धुभाक् ॥ विशीलो बहुलक्ष्मीकः पाशे भृत्ययुतो भवेत् ॥ २५ ॥ उपकारी धनी मूढः पशुपुत्रसमृद्धिमान् ॥ दामयोगभवो लोके रत्नैर्भवति पूरितः ॥ २६ ॥ नृत्यगीतप्रियो नेता बहुभृत्यो धनी सुखी ॥ कार्येषु निपुणो

होवे तथा मलिन हो ॥ २१ ॥ युगयोगमें जन्मे तो पाखण्डी, धनहीन, पुत्र और मातासे हीन, धर्महीन, लोकमें निन्दित जन हो ॥ २२ ॥ शूल योगमें जन्मनेवाला नर हिंसक, आलसी, तीक्ष्ण, निर्धन, शूर वीर, (जाति आदिसे) बाहर निकाला हुआ, युद्धमें प्राप्त शब्दवाला होवे ॥ २३ ॥ केदारयोगमें जन्मनेवाला नर खेती करनेवाला, सत्यवादी, अपनी भुजाबलसे कमानेवाला, धनी, सुखी, चंचल स्वभाववाला हो ॥ २४ ॥ पाशयोगमें जन्मनेनेवाला नर कार्यमें चतुर, माया रचनेवाला, बहुत बोलनेवाला, शीलरहित, बहुत लक्ष्मीवाला, भृत्ययुक्त होता है ॥ २५ ॥ दाम योगमें जन्मे तो उपकारी, धनी, मूढ, पशु पुत्रादिकोंकी समृद्धिवाला, तथा रत्नोंसे विभूषित होता है ॥ २६ ॥ वीणायोगमें जन्मनेवाला नर नृत्य गीतमें प्रिय, नायक, बहुत भृत्योंवाला, धनी

लोको वीणायोगे च जायते ॥ २७ ॥ द्विस्वभावे स्थिरे खेटैश्चरे च सकलैः स्थितैः ॥ नलोऽथ मुसलो रज्जुर्योगाः प्रोक्ताः पुरातनैः ॥ २८ ॥ न्यूनातिरिक्त-देहश्च निपुणो धनसंचयी ॥ बन्धुप्रियः सुरूपश्च नलयोगे भवेन्नरः ॥२९॥ राजमानधनैर्युक्तः ख्यातः पुत्री नृपप्रियः ॥ मुसले स्थिरचित्तश्च कर्मोद्यु-क्तश्च जायते ॥३०॥ परदेशद्रव्यभागी सुरूपो दान-तत्परः ॥ क्रूरः खलस्वभावश्च रज्जुयोगे जनो भवेत् ॥३१॥केन्द्रस्थानेषु सर्वेषु शुभैः सर्वैश्च संस्थितैः॥ मालायोगः सर्वपापैः सर्पयोगः प्रकीर्तितः ॥ ३२ ॥ वस्त्रवाहार्थभोगाद्यैर्युक्तः कांतासुहृत्प्रियः ॥मालायोगे

सुखी, कार्योंमें निपुण होवे ॥ २७ ॥ द्विस्वभाव वा स्थिर वा चर राशियोंपर सब ग्रहोंकी स्थिति होवे तो क्रमसे पुरातन पंडितोंने नल, मुसल, रज्जु (अर्थात् द्विस्वभाव राशिमें सब ग्रह हों तो नल, स्थिरमें मुसल, चरमें रज्जु) ये योग कहे हैं ॥ २८ ॥ नलयोगमें जन्मनेवाला नर हीन अंगवाला, निपुण, धनसंग्रही, बंधुओंका प्रिय, सुरूप होवे ॥ २९ ॥ मुसल योगमें जन्मे तो राजासे मान पावे, धनी, पुत्रवान्, राजाका प्रिय, स्थिर चित्तवाला, कार्यमें उद्योग करनेवाला हो ॥ ३० ॥ रज्जुयोगमें जन्मे तो परदेशमें द्रव्य प्राप्ति करनेवाला, सुरूप, दानमें तत्पर, क्रूर, दुष्ट स्वभाववाला हो ॥ ३१ ॥ जो सब शुभ ग्रह केन्द्र स्थानोंमें ही स्थित होवें तो मालायोग हो । इसी प्रकार सब पाप ग्रह पडे हों तो सर्पयोग जानना ॥ ३२ ॥ माला योगमें जन्मनेवाला नर वस्त्र, वाहन, धन भोगसे युक्त हो, स्त्री और मित्र जनोंको प्रिय हो सदा सुखी

समुत्पन्नः सुखी भवति सर्वदा ॥३३॥ क्रूरो निःस्वो दुःखितश्च परान्ने निरतःसदा॥दीनश्च विषमो लोके सर्पयोगे प्रजायते ॥ ३४ ॥

अथ वर्षधान्यादिविचारः ।

शाकं वह्नि३गुणं कृत्वा मुनिभि७र्भागमाहरेत ॥ शेषं नेत्र २ गुणं कृत्वा पंचपंच५नियोजयेत् ॥ ३५ ॥ लब्धं वह्नि ३ गुणं कृत्वा धान्यादिः सप्त भागतः ॥ शून्ये पञ्चैव विज्ञेयाः सर्वमेवं निरूपयेत् ॥ ३६ ॥ वर्षा धान्यं तृणं शीतमुष्णं वायुश्च वृद्धयः॥क्षयश्च विग्रहश्चैव ज्ञेयमेवं क्रमेण च ॥३७॥ शाकं शक्र१४

रहै॥३३॥सर्पयोगमें जन्मे तो क्रूर, दरिद्री, दुःखित, पराये अन्नको भोजन करनेवाला,दीन, लोकमें कुटिल हो॥३४॥ इति नाभसयोगः ॥

अथ वर्षाधान्यादिविचारः । शाकको तिगुणा करै फिर सातका भाग देवे बाकी रहेको दुगुना करके पांच पांच मिला देवे ॥ ३५ ॥ और लब्ध हुए अंकको तिगुना कर फिर सातका भाग लगा बाकी रहेमें पांच मिलावे इसी प्रकार करता रहै जो शून्यही बचे तो पांचही जानने ऐसे सब निरूपण करै ॥ ३६ ॥ फिर क्रमसे वर्षा धान्य, तृण, शीत, तेज (अग्नि), वायु, वृद्धि, क्षय इनको जाने, उदाहरण शाके १८१५ है इसको तिगुणा किया तो ५४४५ हुए इसमें सातका भाग देनेसे ७७७ लब्ध भये बाकी ६ रहे उनको दूना किया १२ भये पांच मिलाये १७ भये तो इस सालमें १७ वर्षा है, फिर लब्ध ७७७ हुए हैं इनको तिगुणा कर सातका भाग दे बाकी रहेमें पांच मिलाके धान्द समझो और लब्धको इसी तरह तिगुना करके सातका भाग देकर शेषमें पांच जोडकर तृणादि सब इसी प्रकारसे जानो ॥ ३७ ॥ शाकेको चौदह गुनाकर चारक

गुणं कृत्वा भागो वेदैर्विधीयते॥शेष मेघा भवन्तीह चावर्ताद्या यथाक्रमम् ॥३८॥ आवर्ते चिंतिता वृष्टिः समावर्ते सुशोभना ॥ पुष्करे दुष्करा वृष्टिर्द्रोणो वर्षति सर्वदा ॥३९॥ [दशभिर्दिवसैर्मासो मासचतुष्केण लभ्यते दिवसः॥दिवसद्वयेन घटिका घटिकायुग्मेन पलमेकं तु ॥ ४० ॥] ध्रुवांकः ॥ ध्रुवांको दशभिर्गुण्यो भानुना १२ त्रिंशताऽपि च॥षष्टिभि ६० श्च हरेद्भागं दशा सूर्यादितो भवेत् ॥ ४१ ॥ आदित्यत्रिगुणो राहुः सूर्यचंद्रयुतो गुरुः ॥ आदित्यद्विगुणं भौमे मेलयित्वा शनिर्भवेत् ॥ ४२ ॥ चंद्रभौमौ बुधो १७ ज्ञेयः केतुस्तु मंगलो ७ यथा॥

भाग देवे जो बाकी रहे उसे यथाक्रमसे आवर्त्त आदि मेघ जानै ॥ ३८ ॥ (एक बचे तो) आवर्त्त मेघमें चिंतवन की हुई वर्षा हो, समावर्त्त मेघमें शुभ वर्षा हो, पुष्कर मेघमें वर्षा दुर्लभ (नहीं) हो, द्रोण मेघमें सदा वर्षा होवे ॥ ३९ ॥

दश दिनों करके मास और चार महीनों करके एक दिन लब्ध हो, दो दिन करके एक घटी, दो घटी करके एक पल लब्ध हो (यह किसी अन्य ग्रन्थका श्लोक है इसका सम्बन्ध पूर्वापरसे मालुम होगा) ॥ ४० ॥

" ध्रुवांकसंज्ञा " ध्रुवांकको दशसे गुनै फिर बारहसे गुनके तीससे गुने फिर साठका भाग दे पीछे सूर्यादिकोंकी दशा हो, सूर्यसे तिगुनी (१८) राहुकी दशा जानै ॥ ४१ ॥ सूर्य और चन्द्रमासे युक्त (१६) वर्ष बृहस्पतिकी दशा, सूर्यसे दूनी और मंगलसे युक्त अर्थात् १९ वर्षतक शनिकी दशा रहती है ॥ ४२ ॥ चन्द्रमा और मंगल मिले अर्थात् १७ वर्षतक बुधकी दशा, केतुकी दशा मंगलके

चंद्रमाद्विगुणः २० शुक्रो दशाचक्रदमुदाहृतम्॥४३॥ भयातघट्यो गुणिताः स्ववर्षैराप्ता भभोगैः शरदोव-शिष्टम्॥हन्यात्तु सूर्येण१२तथैव मासं तथा खरामेण ३० दिनानि शेषात् ॥४४॥ तथैव षष्ट्या६० घटि-काः पलानि विशोधयेदायुषि तत्र शेषम्॥आयुर्दशा-भिश्च दशाहताचेदंतर्दशा स्याद्दशभिश्च१०भागैः४५

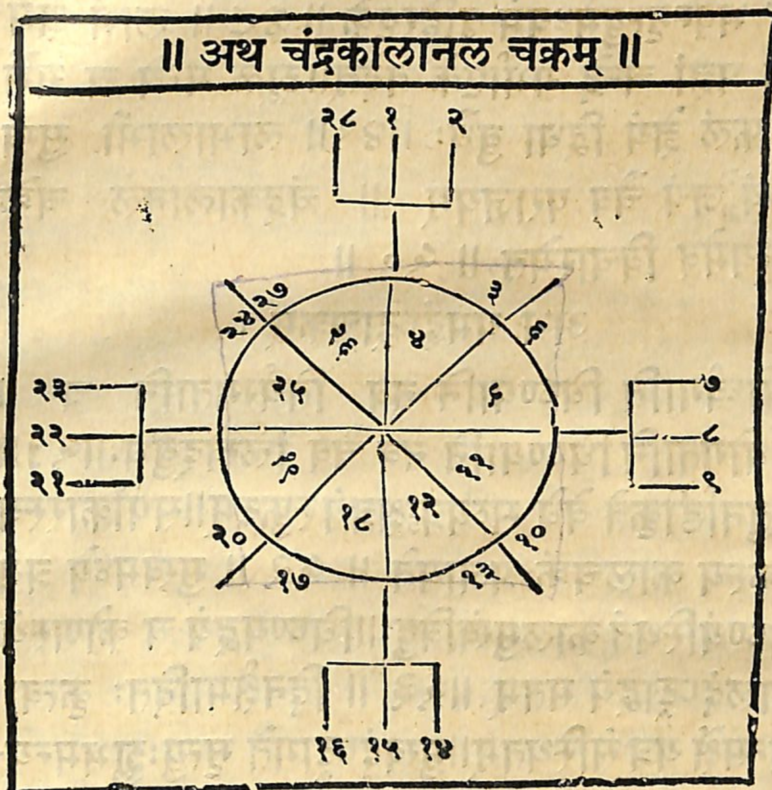
अथ चंद्रकालानलचक्रम्।

चंद्रकालानलं चक्रं व्योमाकारं लिखेद्बुधः॥ चतु-

समान ७ रहै, चन्द्रमासे दूनी २० तक शुक्रकी दशा, ऐसे दशाचक्र जानो ॥ ४३ ॥ अथ दशा भुक्त भोग्य विचार। जिस नक्षत्रमें जन्म हो उसके पूर्व नक्षत्रकी घडियोंको साठ ६० में न्यून कर उसमें इष्ट काल जोड दे यह भयात है फिर जन्म नक्षत्रकी घडियोंको पूर्व ६० में न्यून किये घडीमें जोड देना सो भभोग होगा, अब भयात जो हो उसे नक्षत्रपतिके वर्षसे गुण देवे फिर भभोग घडीसे उनमें भाग देवे जो अंक आवे उसे वर्ष जानना, शेष बचे उसको बारहसे गुण करके मास जाने तहांभी शेष बचे उसे तीससे गुण भभोगका भाग देके दिन जानै ॥ ४४ ॥ फिर बाकी रहै उसको साठसे गुनाकरके भभोगकी घडियोंका भाग देवे जो लब्ध हो उसे घडी जाने पीछे साठसे गुनाकर भाग देवे तो पल लब्ध हो उसे घडी जान भोग्य दशा जानै। और भोग्य दशासे जिसकी अंतर्दशा देखनी हो उस ग्रहकी दशाको गुणके दशका भाग देवे तिससे लब्ध हुएको मासा-दिक जाने ॥ ४५ ॥

अथ चंद्रकालानलचक्रम् ॥ पंडित जन आकाशके आकार चक्र

१ उक्तं च बृहत्पाराशर्यां-दशा दशाहताः कार्या दशभिर्भागमाहरेत् । मासा भवेयुर्लब्धांकास्त्रिंशघ्ने च दिनानि च। इति।



दिक्षु त्रिशूलानि मध्यभिन्नानि कारयेत् ॥ ४६ ॥
पूर्वं त्रिशूलमध्यस्थं चंद्रभं च लिखेद्बुधः ॥ अन्या-
न्यभिजिता सार्धं नक्षत्राणि लिखेत्क्रमात् ॥ ४७ ॥
नामभं च स्थितं यत्र तत्र ज्ञेयं शुभाशुभम् ॥ त्रिशू-

चारों दिशाओंमें मध्यसे भिन्न २ हुई त्रिशूल निकालै ॥ ४६ ॥ पूर्वमें त्रिशूलके मध्यमें चन्द्रमाका नक्षत्र लिखे, फिर क्रमसे अभि-जित् सहित अन्य नक्षत्रोंको लिखै ॥ ४७ ॥ जहां नामका नक्षत्र आवे तिसका शुभाशुभ फल जानै। त्रिशूलोंके मध्यमें नक्षत्र आवे

लेषु भवेन्मृत्युर्मध्यमं बहिरष्टके ॥ ४८ ॥ लाभं क्षेमं जयं प्रज्ञां चन्द्रे गर्भाष्टके वदेत्॥ शूले मध्ये च गर्भे च फलं ज्ञेयं द्विधा बुधैः ॥४९॥ लाभालाभौ सुखं दुःखं जयं चैव पराजयम् ॥ चंद्रकालानले चक्रे नित्यमेव विचारयेत् ॥ ५० ॥

अथ यमदंष्ट्राचक्रम् ।

नवोर्ध्वगानि धिष्ण्यानि नव तिर्यग्गतानि च ॥ अधोगतानि धिष्ण्यानि नव चैव लिखेद्बुधः॥५१॥ चतुर्नाडीकृते वेधे सव्यऋक्षत्रयं स्फुटम्॥सर्पाकारस्य चक्रस्य कालचक्रं प्रजायते ॥ ५२ ॥ मुखमध्ये त्रयं धिष्ण्यंस्थितं कालमुखंविदुः॥धिष्ण्यद्वयं च कोणस्थं कालदंष्ट्राद्वयं मतम् ॥५३ ॥ दिनर्क्षमादितः कृत्वा जन्मर्क्षं यत्र संस्थितम्॥मुखदंष्ट्रागते मृत्युःशुभमन्य-

तो मृत्यु हो, बाहरके आठ नक्षत्रोंमें हो तो मध्यम फल जानै॥४८॥ चन्द्रगर्भाष्टक (भीतरके ८ नक्षत्र) हों तो लाभ, क्षेम, जय, बुद्धि बढै और शूलके मध्यमें गर्भमें पंडितोंको दो प्रकारका फल जानना चाहिये ॥ ४९ ॥ लाभ अलाभ, सुख दुःख, जय पराजय ऐंसे चंद्रकालानलचक्रमें नित्य ही विचारे ॥५०॥ इति चन्द्रकालानलचक्रम् ॥

अथ यमदंष्ट्राचक्रम् ॥ नव नक्षत्र ऊपरको और नव तिरछे लिखै नव अधोगत (नीचेको) लिखै ॥ ५१ ॥ चार नाडीमें वेध किया जावे फिर बांयी तर्फसे तीन नक्षत्र लिखे ऐसे सर्पाकार चक्रका कालचक्र होता है ॥५२॥ मुखमें तीन नक्षत्र धरै सो कालमुख जानना, दो नक्षत्र कोणोंमें धरै, दो कालदंष्ट्रा नक्षत्र हैं ॥ ५३ ॥ दिनके नक्षत्रसे आदि लेके जन्मनक्षत्रतक गिनै जो मुखमें अथवा दंष्ट्रामें स्थित

संस्थिते॥५४॥ज्वरिते नष्टदष्टे च विवादे विग्रहे रणे॥
मुखदंष्ट्रागतं नाम यस्य तस्य महद्भयम्॥ ५५ ॥

अथोच्चस्थग्रहफलम् ।

पूर्णो धनैः परिजनैः सुतदारकोशैश्चण्डप्रतापनिकरैर्वि-जितारिपक्षः ॥ कोपाकुलो निजजनैः परिपूर्णमान-स्तुंगस्थिते दिनकरे भवतीह लोकः ॥ ५६ ॥ दाता भोक्ता प्रचुरयुवतीनायकोविश्वबंधुर्नानाक्रीडापरिणत-मतिश्चंचलात्मस्वभावः ।पुत्रैः पौत्रैर्हयगजरथैः पूर्ण-गेहो विलासी चन्द्रे तुंगे भवति मनुजो लोकमान्यः प्रसन्नः ॥ ५७ ॥ चंडप्रतापवशिताखिललोकपालः शस्त्रप्रहारनिपुणो धनधान्यपूर्णः॥रक्ताधिको रणध-रासु पुरः प्रयातस्तुंगस्थिते क्षितिसुते मनुजः प्रतापी ॥५८॥ अध्यापकःशुभमतिर्नृपतिप्रधानो लोकोत्तरा-

हो तो मृत्यु हो, अन्य जगह शुभ है ॥ ५४ ॥ ज्वर आना, गिरना, चोट लगनी, विवाद, युद्ध होना इनमें जिसका नक्षत्र मुखमें वा दंष्ट्रा पर आजावे उसको महान् भय हो ॥५५॥ इति यमदंष्ट्राचक्रम् ॥

सूर्य परम उच्चका हो तो धनसे परिपूर्ण और परिजन, पुत्र, स्त्री, कोश (खजाना) इनसे परिपूर्ण हो, प्रचण्ड प्रताप बढै, शत्रुओंको जीतै, क्रोधयुक्त तथा अपने जनोंसे परिपूर्ण रहै ॥ ५६ ॥ चन्द्रमा परम उच्चका हो तो दानी, भोगी, बहुत स्त्रियोंका पति, विश्वका बन्धु, अनेक क्रीडाओंमें फैलीहुई बुद्धिवाला, चंचल स्वभाववाला, पुत्र, पौत्र, घोडा, हाथी, रथ इनसे भरपूर घरवाला, विलासी, लोगोंमें मान्य, प्रसन्न जन हो ॥ ५७ ॥ मंगल परम उच्चका हो तो प्रचण्ड प्रतापसे सब राजाओंको वशमें करनेवाला, शस्त्रप्रहारमें निपुण, धन धान्यसे परिपूर्ण, अधिक रक्तवाला, रणभूमिमें आगे होनेवाला, प्रतापी मनुष्य हो ॥ ५८ ॥ बुध परम उच्चका हो तो अध्यापक,

तिविभवो गुणवानुदारः॥सत्कीर्तिमान्सुतनयो निरुजः सुमित्रस्तुंगे बुधे भवति सर्वजनोपकारी॥५९॥भूमण्डलीपतिरुदारमतिश्चदाता ब्रह्मात्मबोधविमलो बहुपुत्रपौत्रः ॥ तीर्थानुरागहृदयो दृढदेहबन्धुस्तुंगे गुरौ नरपतिर्धनवानुदारः ॥ ६० ॥ देशाधिपो दृढमतिः सुतनुः सुमन्त्री योद्धा समस्तजनपालनलब्धकीर्तिः ॥ चौरादिशासनपरः सुकविः सुबुद्धिस्तुंगे कवौ कुलपतिर्मनुजोऽतिहृष्टः॥ ६१ ॥ आसागरं क्षितिपतिर्दृढदेहबन्धो हिंसारतो रणभुवि प्रथितप्रभावः।हस्त्यश्वरत्नमणिभिः परिपूर्णगेहः सूर्यात्मजे भवति तुंगगते मनुष्यः ॥६२॥ भवति धरणिपालो नीचजातिः प्रतापी हयगजधनयुक्तो

शुभ बुद्धिवाला, राजाका मन्त्री, लोगोंमें बहुत धनवाला, गुणवान्, उदार, श्रेष्ठ, कीर्तिमान्, सुन्दर पुत्रोंवाला, रोगरहित; उत्तम मित्रोंवाला, सब जनोंका उपकारी हो ॥ ५९ ॥ बृहस्पति उच्चका हो तो राजाओंमें शिरोमणि, दानी, उदार बुद्धिवाला, ब्रह्मात्मबोधसे विमल बहुत पुत्र पौत्रोंवाला, तीर्थोंमें अनुरागयुक्त हृदयवाला, दृढ शरीर और बन्धुवाला, उदार धनपति राजा हो ॥ ६० ॥ शुक्र उच्चका हो तो देशोंका अधिपति, दृढ बुद्धिवाला, सुन्दर शरीरवाला, सुमन्त्री, योद्धा, समस्त जनोंकी पालनासे लब्ध कीर्तिवाला, चोर आदिकोंको दंड देनेवाला, सुन्दर कवि, सुबुद्धि, कुलपति, अति हृष्ट नर होवे ॥६१॥ शनि परम उच्चका हो तो समुद्रपर्यंत पृथ्वीका राजा, दृढ शरीर और बन्धुवाला, हिंसामें रत, रणभूमिमें विख्यात, हस्ती, अश्व, रत्न, मणि इनकरके भरपूर घरवाला हो ॥ ६२ ॥ मिथुनका राहु हो तो नीचजाति, प्रतापी राजा हो ।

जातिवर्गे विरक्तः ॥ कुटिलमतिरनीतिर्भूरिभांडारयु-
क्तस्तमसि मिथुनसंस्थे जायते मानवेन्द्रः ॥ ६३ ॥

अथ रव्यादीनां परमोच्चांशाः।

दशांशेऽर्कः शशी त्र्यंशे भौमोऽष्टाविंशके तथा ॥
बुधःपंचदशांशे च पंचमांशे बृहस्पतिः॥६४॥सप्तविं-
शांशके शुक्रो विंशत्यंशे शनैश्चरः।सैंहिकेयश्च विंशांशे
परमोच्चं प्रकीर्तितम् ॥ ६५ ॥ इति सर्वशास्त्रविशार-
दश्रीकाशीनाथकृतौ जातकलग्नचन्द्रिका सम्पूर्णा ॥

अथ संग्रहश्लोकाः।

तत्र जीवयोगः॥चन्द्रात्सप्तमगो जीवो ह्यथवा जीव-
संयुतः॥जीवयोगं विजानीयाच्चिरायुर्धनवान्सुखी १॥
सिंहलग्ने यदा जन्म शुक्रश्च यदि पश्यति॥चक्षुर्हीनः

घोड़े, हस्ती, धन इनसे युक्त, जातिके लोगोंमें विरक्त रहै। कुटिल बुद्धिवाला, नीतिहीन, बहुत भांडार (खजाना) वाला राजा हो ॥ ६३ ॥ इति रव्यादीनां परमोच्चफलम् ॥ सूर्यका दश अंशतक चन्द्रमाका ३ तीन अंशतक, मंगलका अट्ठाईस २८ अंशतक, बुधका पन्द्रह १५ अंशतक, बृहस्पतिका ५ अंशतक ॥ ६४ ॥ शुक्रका सत्ताईस २७ अंशतक शनिका बीस २० अंशतक, राहुका २० बीस अंशतक परमोच्च होता है ॥६५॥ इति रव्यादिग्रहाणां परमोच्चफलम्।

इति श्रीइन्द्रप्रस्थप्रांतवेरीपुरनिवासि-द्विजशालग्रामात्मजपंडितवसतिरामवि-
रचितलग्नचंद्रिकाभाषाटीका समाप्ता ॥

जीवयोग ॥ चन्द्रमासे सातवें घरमें बृहस्पति हो अथवा बृहस्पतिसे संयुक्त हो तो जीवयोग जानना. इस योगमें उत्पन्न हुआ नर चिरंजीवी धनवान् सुखी हो ॥ १ ॥ सिंह लग्नमें जन्म हो,

स वक्तव्यः शंकरो यदि रक्षति ॥ २ ॥सूर्यचन्द्रौ च युगपद्द्वादशे यदि संस्थितौ ॥ अंधप्रसूतं कुरुतः पापः षष्ठेऽथ वा मृतौ ॥ ३ ॥ त्रिषु त्रिषु च गेहेषु कन्याराशेः स्थिते रवौ ॥ पूर्वादिषु न कर्तव्यं द्वारं चैव यथाक्रमम् ॥ ४ ॥ अग्रतो हरते चायुः पृष्ठतो हरते धनम् ॥ वामदक्षिणतो वत्सः सर्वकार्येषु सिद्धिदः ॥ ५ ॥ उच्चस्थे वा च नीचस्थे सप्तमस्थे यदा रवौ ॥ पानहीनो भवेद्बालो ह्यजाक्षीरेण वर्धते ॥ ६ ॥ तिथिः शरीरं देवस्य तिथिं नक्षत्रमाश्रितम्॥ तस्मात्तिथिं प्रशंसंति नक्षत्रं न तिथिं विना॥ ७॥ मीनांते वृश्चिकांते वै वृषे जूके च मध्यगे ॥ यावत्तिष्ठेद्गुरुः सौरिस्तावद्दुर्भिक्षमादिशेत् ॥ ८ ॥

शुक्र लग्नको देखता हो तो शिवजी रक्षा करें तो भी वह बालक नेत्रहीन हो ॥ २ ॥ सूर्य चन्द्रमा दोनों बारहवें घरमें बैठे हों तो अन्धा बालक जन्मा जानो, छठे आठवें घरमें पाप ग्रह हों तो मृत्यु जानो ॥ ३ ॥ कन्याराशिसे तीन २ राशिपर सूर्य हो तो यथाक्रमसे पूर्व आदि दिशाओंमें घरका द्वार नहीं करना ॥ ४ ॥ वत्सयोग आगे हो तो आयुको नष्ट करै, पीठमें हो तो धनको हरै, बाँये या दहिने तर्फ वत्स हो तो सब कार्योंमें सिद्धि करै ॥ ५ ॥ उच्चराशिका अथवा नीचका सूर्य सातवें घरमें हो तो वह बालक अपनी माताका दूध नहीं पीवे, बकरीके दूधसे बढै ॥ ६ ॥ तिथि देवताका शरीर है, नक्षत्र भी तिथिके आश्रय है इसलिये तिथिको सराहते हैं तिथिके विना नक्षत्र भी नहीं है ॥ ७ ॥ मीन वृश्चिक इन राशियोंके अन्तमें वृष और तुलाके मध्यमें जबतक बृहस्पति और शनि ठहरें तबतक दुर्भिक्ष हो ॥ ८ ॥

अथ चन्द्रारिष्टशांतिः ।

घृतकलशं सितवस्त्रयुगं सितवृषभं रजतं च सुवर्णम्॥ संप्रदद्याच्चंद्रारिष्टे विप्रायारिष्टशमनाय॥९॥शुक्लाक्षतैः पूरयित्वा पात्रं वेणुमयं नवम् ॥ तस्योपरि पयःपूर्णं रूप्यं गर्भं च कांस्यजम् ॥१०॥ शुक्लपुष्पैश्च गन्धैश्च शुभ्रवस्त्रसमायुतम्॥दद्याज्ज्योतिर्विदे तच्च चंद्रारिष्टप्रशांतये॥११॥गदिता दक्षिणा चात्र मौक्तिकं शंखसंयुतम्॥घृतदीपं चतुर्वर्तिं चंद्रमुद्दिश्य दापयेत् ॥१२॥

अथ किंचिद्वर्षेशादिनिर्णयः ।

मधोः सितादौ प्रतिपद्दिने यो वारस्तु राजा करणाधिपोऽजे। सस्याधिपः कर्किणि रौद्रधिष्ण्ये मेघाधिनाथो रसपस्तु लाभे ॥१३॥ धान्याधिपो धन्विनि नक्रराशौ स्याद्धातुरत्नाधिपतिस्तथा स्यात् ॥१४॥

अथ चन्द्रारिष्टशान्तिः। चन्द्रमाके अरिष्टशांतिके वास्ते घृतसे भरा कलश, श्वेत वस्त्र, जोडा, सपेद बैल, चांदी, सुवर्ण इनका दान ब्राह्मणके अर्थ देना चाहिये ॥ ९ ॥ और सपेद अक्षतोंसे पूरित कर नवीन बांसका बना पात्र तिसके ऊपर दूधसे भरा चांदीयुक्त हुआ कांसेका पात्र धरै ॥ १० ॥ फिर सफेद पुष्प, गंध, अक्षत, सपेद वस्त्रसे युक्त कर वह पात्र चंद्रमाके अरिष्टशांतिके अर्थ ब्राह्मणको दे ॥ ११ ॥ यहां मोतियों सहित शंखकी दक्षिणा कही है और चार बत्तीका घृतका दीपक चन्द्रमाके उद्देशसे प्रकाशित करै ॥ १२ ॥ इति ॥

चैत्र शुदि प्रतिपदाको जो वार हो वह राजा जानना, मेषकी संक्रांतिका वार मन्त्री, कर्क संक्रांतिका वार सस्याधिपति और आर्द्रार्कका वार मेघाधिपति, तुलाकी संक्रांतिका वार रसपति जानना ॥ १३ ॥ धनकी संक्रांतिका वार धान्यपति जानना, मकरकी संक्रांतिका धातुरत्नाधिपति (धनेश) जानना ॥ १४ ॥

अथ स्त्रीजातकम् ।

वैधव्यं निधने चिंत्यं शरीरं जन्मलग्नभाक् ॥ सप्तमे पतिसौभाग्यं पंचमे प्रसवस्तथा॥१५॥लग्नेन्द्वोः समभे जाता स्वोचिताचारशीलभाक् ॥ ओजभे पुरुषाकारा दुःशीला दुःखिता वधूः ॥ १६ ॥ कन्यालग्ने युते दृष्टे शुभैः सच्छीलभूषणा ॥ दुःशीला निपुणा पापैर्लग्नेन्द्वोर्युतदृष्टयोः ॥ १७ ॥ कन्यालिवृषसिंहेषु शशांकेऽल्पसुता वधूः॥ मूर्तौ राह्वर्कभौमाः स्यू रंडा भवति कामिनी ॥ १८ ॥ वैधव्यं चाष्टमे क्रूरे शुभदृष्टिविवर्जिते॥यस्यांशे निधनाधीशस्तद्दशायां विनिर्दिशेत् ॥१९॥ प्रवासी चरभे द्यूने स्वगृहस्थः स्थिरे पतिः ॥ द्व्यंगे स्थिरः प्रवासी च क्लीबोऽस्ते बुध-

अथ स्त्रीजातकम् ॥ आठवें घरसे वैधव्य योग जानना, जन्मलग्नसे शरीरचिंता विचारै, सातवें घरसे पतिका सौभाग्य, पांचवें घरसे संतान उत्पत्ति देखना ॥ १५ ॥ लग्न और चन्द्रमा सम राशिपर हो तो जन्मी हुई कन्या यथायोग्य आचार शील स्वभाववाली हो, ओज (विषम) राशिपर हो तो पुरुषसदृश आकारवाली, दुश्शीला दुःखिता स्त्री हो ॥ १६ ॥ कन्या लग्न शुभ ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो जन्मनेवाली कन्या श्रेष्ठ शील स्वभावसे विभूषित हो, जो पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट लग्न और चन्दमा होवे तो दुःशीला, गुणरहित हो ॥ १७ ॥ कन्या, वृश्चिक, वृष, सिंह इनका चद्रमा हो तो थोडे पुत्रोंवाली स्त्री हो, लग्नमें राहु, सूर्य, मंगल होवें तो वह स्त्री रंडा हो ॥ १८ ॥ आठवें घरमें शुभ ग्रहकी दृष्टिसे रहित हुआ पापग्रह बैठा हो तो विधवा हो, जिस ग्रहकी राशिके नवांशकमें अष्टमेश हो उसी ग्रहकी दशामें विधवा होगी ॥ १९ ॥ सातवें घर चर राशि हो तो कन्याका पति परदेशमें रहै, स्थिर हो तो अपने

मंदयोः ॥२०॥ शुभैरदृष्टे विमले द्यूनभे ग्रहवर्जिते॥ जाताया इह कन्याया भवेत्कापुरुषःपतिः॥२१॥द्यूने शुक्रे गृहेशे वा सुरूपः सुभगः पतिः॥बोधने निपुणो विद्वांश्चंद्रे कामातुरो मृदुः॥२२॥इनेऽतिकर्मकृत्तीक्ष्णो गुणी जीवे जितेंद्रियः॥ स्त्रीलोलः कर्मकृत्कौजे मांदे मूर्खो जरन्नपि॥२३॥भद्रातिथिर्यदाऽऽश्लेषा कृत्तिका शततारका॥रविमंदारवाराश्चेद्विषकन्या बुधैःस्मृता ॥ ॥२४॥तन्वादिभावजंवाऽन्यद्ग्रहोत्थं चिंतयेत्पृथक्॥ केचिन्मते स्त्रीनरयोस्तुल्यं जन्मफलं वदेत् ॥ २५ ॥

अथ स्फुटश्लोकाः ।

दशमस्थो यदा राहुर्जन्मकाले स्थितो भवेत्॥षोडशा-

घरमें ही स्थित रहे, द्विस्वभाव राशि हो तो घरमें स्थिर और परदेशमें भी जावे, सातवें घरमें बुध शनि होवें तो नपुंसक हो ॥ २० ॥ सातवां घर शुभग्रहोंकरके दृष्ट नहीं हो और किसी ग्रहसे युक्तभी न होवे तो जन्मी हुई कन्याका पति कुत्सित पुरुष हो ॥ २१ ॥ सातवें घरमें शुक्र हो अथवा सातवें घरका पति शुक्र हो तो सुरूप अच्छे नशीबवाला पति हो, बुध सातवें घरमें हो वा सातवें घरका स्वामी हो तो निपुण और विद्वान् हो, चन्द्रमा सातवें घरमें हो तो कामातुर और कोमल पति हो ॥ २२ ॥ सातवें घरमें सूर्य हो तो तीक्ष्ण कर्म करनेवाला हो, बृहस्पति हो तो गुणी, जितेंद्रिय हो, मंगल हो तो स्त्रीविषे चंचल कर्म करनेवाला हो, शनि हो तो मूर्ख, जीर्ण पति मिले ॥ २३ ॥ भद्रातिथि, आश्लेषा, कृत्तिका, शतभिषा ये नक्षत्र और सूर्य, शनि, मंगल, वार होवें तो जन्मनेवाली विषकन्या कहलाती है ऐसा पण्डितोंने कहा है ॥ २४ ॥ तनु आदि भावके अथवा अन्य ग्रहोंके फलको अलग २ विचारे । कई जनोंके मतमें स्त्रीपुरुषोंका जन्मफल समानही है ॥ २५ ॥

अथ स्फुटश्लोकाः । जन्मसमयमें दशवें घरमें राहु हो तो जन्मने

ब्द भवेन्मृत्युर्जातकस्य न संशयः॥१॥लग्ने भृगुः केंद्रगतश्च जीवश्छिद्रे८न पापः परमायु १२०रत्र॥शुद्धेऽष्टमे कर्कटलग्नसंस्थौ शशांकजीवौ गुरुभार्गवौ वा ॥२॥ जायास्थाने क्षपानाथः सुतस्थाने बृहस्पतिः॥ कर्मभावे भवेच्छुक्रो राजयोगोऽभिधीयते॥३॥ त्रयो ग्रहा यदैकत्र लग्नराशिविवर्जिते।कृत्वा पुण्यसहस्राणि म्रियते जाह्नवीजले॥४॥जन्मपत्रफलं श्रुत्वा दैवज्ञं पूजयेन्नृपः॥क्षेत्राश्ववस्त्रद्रव्यान्नैस्त्रिवर्गफलसिद्धये॥५॥३०॥ इति लग्नचंद्रिकायां संगृहीता ग्रन्थान्तरश्लोकाः ॥

समाप्तश्चायं ग्रन्थः ॥

वाले नरको सोलहवें वर्षमें मृत्यु हो इसमें संदेह नहीं है ॥ १ ॥ और वृषमें शुक्र हो, केंद्रमें बृहस्पति हो, आठवें घर कोई पापग्रह नहीं हो या आठवां घर शुद्ध हो और कर्कलग्नपर चन्द्र और गुरु होवे, अथवा गुरु तथा शुक्र होवें तो परमायुष्य अर्थात् १२० वर्षका आयु होताहै ॥ २ ॥ सातवें स्थानमें चन्द्र हो, पांचवें स्थानमें बृहस्पति हो, दशवें स्थानपर शुक्र हो तो राजयोग कहाताहै ॥ ३ ॥ लग्नराशिको छोडकर यदि एक स्थानमें तीन ग्रह हों तो पुरुष हजारों पुण्यके काम करके गंगाजीके जलमें जा मरता है अर्थात् काशीयात्रा करेगा ॥ ४ ॥ इस प्रकारसे मनुष्योंने अपने जन्मपत्रीका फल सुनके दैवज्ञ ज्योतिषीका खेत, घोडा, वस्त्र, द्रव्य तथा अन्न देकर पूजन करना इससे धर्म, अर्थ और काम ये प्राप्त होते हैं ॥ ५ ॥

इति पं० वस्तीरामजीविरचित लग्नचंद्रिका भाषाटीका समाप्त ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई.

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास, "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, कल्याण–बम्बई.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

P. R. H.